॥६०॥ ॐनमः सिद्धेभ्यः॥ अथतत्वार्थबोधलिख्यते॥ सोरठा॥ सिवमगदायकजांननमैंतिमरागीरकेहरन॥ स
र्वतत्वमयग्यांन॥ वंदौंजिनगुनहेतनित॥१॥ दोहा॥ तत्वधारनैकारनैअपनीबुधिअनुसारि॥ कछुचरचा
सुनिलिखतहौंसज्जनिकूंउरधारि॥२॥ याददास्तसीकरनलई॥ मेरीयथनपाइ॥ भूलीसुधिकरिवांचियोमति
कीज्योपरमाद॥३॥ विविधिसवदकोअरथजोगुरठिगसीख्योहोय॥ कूंरवांचिनीश्रातिहैकुग्रंथपठैजोसोय
॥४॥ जोअपूर्वभासैकहूंतोहिअनामतधारि॥ बहुश्रुतजनतैंठीककरिलीज्योपाप्याहिसवारि॥५॥ पूरवतप
निवंततातान्याचितार्ड्याभावरक्ष्याअवस्थाजातहैनातैंजिनमतगप्य॥६॥ वचनकुसमकूथ्याविनांकंठनधारै
स्याजाय॥ विनधारैनहिंवपसकूंदररचेपादाय॥७॥ जोगलिखबावेग्रंथको॥ तातुमलीज्योसाधि॥ सोध्यां
विनाअशुद्धैं॥ उलटीविगरैबाधि॥८॥ चौपई॥ सुखीहूयाचाहोजगमांहि॥ जलमघतकहूंनिकसैनाहि॥ ग्या
कैगतिमैंफिरैअजांन॥ नाकोवरनांविवाधिविधांन॥९॥ सुखचाहैनरनारीसबै॥ मोनेधनतैंसोनाहिकबै॥ परतषि
दुखीलिखेधनवांन॥ भूपचोपरहुजस्यपकागिलान॥१०॥ नदीतड़ागसौलवनफिरै॥ व्यसनपांनांनिंद्रापरिह
रै॥ परकूंपीडैप्रांणतिनलेहै॥ विनप्रापातिदुखअधिकादहै॥११॥ करिनहिंसकेमिलतेभोग॥ साजीदीनकेरुतोहिवि ॥१
योग॥ जोभागनतेंभोगमीतो॥ वाढेजन्ममरनदुखरोग॥१२॥ तनधनत्रियाजगतकामूल॥ जीवरहैपनकेअ

रकूल ॥ सुनेाक्विस्थानिनकीग्रैवे ॥ कछुविरागतान्त्र्पावेतावे ॥ १३ ॥ कृपण्य ॥ नातवीजमारूधिरदोयामिलि
उपजतकाया ॥ सातधातमयभई माक्षिमलमूतभराया ॥ वाकिंपाविंत्रैकरीधोयजेलचसुनऊवायातांकूंनेननि
रखिपरसितनसरहस्याघा ॥ वीसवूंदजीविनत्र्लपतापेसुअकिमपादयेसुखंतं भेदविज्ञानमेसोजिनमत
प्रगाद्ये ॥ १४ ॥ कठिनगर्भनवमासकठिनजानीतीनिकसन ॥ कठिनलागनश्रुभजनमकठिनमांकुचसुखपास
न कठिनदंतपरकासकठिनविसफाटिकरिवा ॥ कठिनफाकिनीद्रावितादिवावेजोवनभरिवो ॥ मानननातरादिवो
कठिनकठिनउपद्रवकामिदन ॥ मांनुख्यातिदुखदासवैविनाजिनमतसुखेहेकठिन ॥ १५ ॥ धनतेंवांधवलवै
दासधनतेंभागजावे ॥ धनतेंग्रावेचोरभूपधनजानेंडस्वे ॥ धनतेंकारिमदपानकंचनीपरतिपरस्वे धन
तेंग्रामिषखायजेंवांधनदीतेंमांचे ॥ कौतेंदुखीग्रक्षेतदुखीकोधकपटकरतासदै ॥ यांतेंसुखनाहिंधनविषै
सुखजिनमतसमतापाहै ॥ १६ ॥ क्रोधकपटकीखानिकूडलालचकीवेरी ॥ सुतपतिकुंताजिवेतकलहका
मातुरंभेरी ॥ पोहरायकीपुतापापकीजननीजानं ॥ कुगतिनर्ककीभूमिसुर्गकीग्रागलमान ॥ सुव
पस्यहंकाप्रलातिपरागस्योगकीनाठका ॥ बुधजनमनचैनकिंनलाग्रदावानलदाटिका ॥ १७ ॥ चौ
पदै ॥ इष्टवियोगअानष्टसंजोगा ॥ कालफिरनंतेंउपजेंरोग ॥ इंसभांतदुखदायकसदा ॥ कर्मभ्रामिमेंसु
खनाहिंकदा ॥ १८ ॥ भोगभूमिमेंपादुखकहा ॥ तांतेंसुखदोसतहृनंहा ॥ सुखसस्मतंजांनननांहिजेवे

भाषाजिनमतमांहि ॥१९॥ निजआधीननिराकुलयांनि ॥ अंतरअंतुरहितसुखमांन ॥ भोगभूमिसुखभव
लंजांनि ॥ कर्माधीनअलपपरमांन ॥२०॥ सर्वगात्माभेदरभवासित ॥ जांकीचाहइंद्रद्रकरै ॥ ताहिपा
पभोगननाचितदेय ॥ रतनगामावकोडीलेय ॥२१॥ नरभवबिनमुनिव्रतनहिधरै ॥ चारित्तपबिनक
र्मनहरै ॥ कर्मअरेबिनह्वायनमोष ॥ यातैंनरभवगुनकाकोष ॥२२॥ दोहा ॥ सबकेआंनुजंजालतताजिमुनि
यसुधजनवात ॥ काजआपनांकरनकीभलीमिलीहैस्यात ॥२३॥ अथदेवगति ॥ चौपई ॥ देवनिमेसु
षभासैकोय ॥ नानाविक्रियभोगनिजोय ॥ सोतोहैकरमांनआधीन ॥ तातैनमानैंबुद्धिप्रवीन ॥२४॥ पर
संपतिलाषिलाषिपछिताव ॥ हिनचवैलषबसोकउपाव ॥ आपहुकीथिरनिथिरतानांहि ॥ बहुरिडोल
नाग्यातिग्यातिमांहि ॥२५॥ अथतिरजंचगति ॥ ऐसेभाषतहैंदुरमतीसुधी आपानीतिरजंचगतिठाराव
रसासमूमरना ॥ थावरकेकैससुषवरना ॥२६॥ पांचूंइंद्रीहोयनजहांविकलत्रयकेसुषहैकहां ॥ रहनावि
चारअसैनीजांन ॥ तिनकैकैसेदुषकीहांनि ॥२७॥ पंचेंद्रीसैनीहैकवा ॥ जलचरनभचरथलचरभवाय
तामाह्मामाहिंसाताव ॥ सीतघामतनआतिदुषपाव ॥२८॥ भषप्यासकासुनपुकार ॥ मारेकोराकोरात
सिकार ॥ अधिकबोझतैलहनसास ॥ गाठीबांधेगलकेफास ॥२९॥ पीराभईलषनाहिंओर ॥ जातनबवनेस ॥२॥
हैदुषघोर ॥ वगमाछरमांषीतनषाय ॥ तिरजंगकेदुषकहेनजाय ॥३०॥ अथनरकनिगति ॥ छप्पय ॥ षितु

निगोदतैंकढिनपंचथावरतनभरिवो ॥ तिहूवेइंद्रीकढिनतेइंद्रीधरिवो ॥ चतुरेंद्रीह्वैकढिनकढिनपचेंद्रीमनाविन ॥ यातेंसैनी
कढिनकढिनभव्यत्रिजिमतजिन ॥ अथानिवारिमिथ्यातकौनिजआतमानिरधारकारि ॥ तोभलैंअैसेजन्मधरितोफुनि
फुनिसंसारमरि ॥ ३० ॥ अडिल्ल ॥ पंचपरावर्तनचक्रजीवआरूढहै ॥ भ्रमतानंतोंपरेतमोहमूपतीपरठैहै ॥ याहीकेंस्यादवाद
निवारनकारनैं ॥ विषमयासुखकाजलपरेमारिमारनैं ॥ दोषसवसंसारकहोसुखहैकहा ॥ मोयानिराकुलयानसुखी
नितिहैतहां ॥ ३१ ॥ चौपई ॥ जनममरनआदिकचहुगतिमैंजहां ॥ इंद्रीजनितज्ञानहैतनहां ॥ बाधासहितअपूरनभोग
जगमैंसुखमानतकिमलोग ॥ ३२ ॥ सहजसुभावकअनाकुलवानी ॥ अंतरंगअंतरहितथिरजांनी ॥ अैसासुख
पायाभगवानवंदतपादमैंयाहिसुखांन ॥ ३३ ॥ मोषहितसंतुमवंदनकीनी ॥ सोयाकेसमझैगुनभीनी ॥ ताकोम
हिसरूपवतावो ॥ भविककोश्रीगुरसमझावो ॥ ३४ ॥ मोक्षसरूप ॥ दोहा ॥ कुहैहातूहैहोहिगतीनलोकमेंइंद्रास
वपदकेसुखछिनकसमयनकेनांहिअनंद ॥ ३५ ॥ ताकेलाभउपायकोकहियेपरमदयाल ॥ जासुकथनकेसुनत
हीभविजनहोयानिहाल ॥ ३६ ॥ अथमोक्षमार्ग ॥ चौपई ॥ देवशास्त्रगुरमांनीनिवृत्त ॥ सम्यकदरसनापांनवरंत
निश्चैतैंमारिगाह्वैमोय ॥ भेदप्रांनीजिपपावैदोय ॥ ३७ ॥ सम्यकरूपचरततत्त्वरथयकाश्रद्धान ॥ आपापरकोभेदपि
छांन ॥ पुवसंवेदनकरिसुखलहै ॥ सोसम्यकदरसनजिनकहै ॥ ३८ ॥ सम्यकज्ञानस्वरूप ॥ तत्वार्थकाजांनछापि
ना ॥ संसैमोहविपरजैविना ॥ संम्यकज्ञानकनुतजप्होय ॥ संम्यकज्ञानकहैजिनसोय ॥ ३९ ॥ सम्यकचारित ॥ जि

नभावनाक्रियातेंहोय ॥ कर्मबंधजगकारनसोय ॥ तिनभावनिकीक्रीयात्याग ॥ संम्यकचारितसोवडभाग ॥ ४० ॥ द्र
व्यांत ॥ ज्योंकोजंगामेंआतुरव्यांन ॥ त्यपकंसवेकरिश्रद्धांन ॥ त्योंअपनाअनभवतेज्ञांन ॥ निश्चेपावेमोक्षसुथां
न ॥ ४१ ॥ जोआग्राधिकोनहिपिछानें ॥ ताकेपथकोहीतिनमाने ॥ फुनिहाचेसरधाबिनजोथाय ॥ वेदलवदे
रागनहिजाय ॥ ४२ ॥ रुपनांमगुनथांनकजांने ॥ आतमकअनात्रियापाथिठांनेकलसहरनसरधातेसबे ॥ का
ठेविपतवद्दुतसुखदेवे ॥ ४३ ॥ ग्यांनपंगनैंमतउपायो ॥ चारित्तअंधाकोसिरथापेआरसदरसनकाकारपक
स्या ॥ भवबनदावानल्लतजिनिकस्या ॥ ४४ ॥ मिथ्यातकथन ॥ येकएकतामांनेतीन ॥ दायदायमतीनप्र
वीन ॥ अन्यमतीजुतमप्रमासात ॥ मोक्षिपंथीबिनसबेमिथ्यात ॥ ४५ ॥ आजिनेंथाजथाभेदनहिधरे ॥ हितअन
हितकीठीकनपरे ॥ तत्वार्थसरधापरिहरे ॥ मिथ्यातीअनमततत्योफिरे ॥ ४६ ॥ सम्यक्तवर्णनं ॥ व्याप्तितत्वा
रथअश्रद्धान ॥ बेआधिअमकसहजेआनें ॥ समकितबिनमिथ्यातनजात ॥ जातिजातिमांहिमिथ्यातफिरात
४७ ॥ उपदेशपातेंआधिगमहोय ॥ विनउपदेशनिसरगजजोय ॥ दोयनकाकारनसामांन ॥ अंतरविषयहिरदा
यप्रमान ॥ ४८ ॥ प्रथमेंथामिथ्यातसमेमिथ्यात ॥ तीजासममाकितप्रकृतिमिथ्यात ॥ अनंतानवधीविधिच्यार ॥३
क्रोधमानछलसोभप्रकार ॥ ४९ ॥ उपसमभयेउपसमयेद्रनका ॥ यहीनामतीनसमकितका ॥ आदिमिथ्या
तीउपशमकरे ॥ येउपशमयेनांहीधरे ॥ ५० ॥ दोहा ॥ अनंतानकीचोकरीयेकभेदमिथ्यात ॥ प्रथमहो-

तोउपशमकरप्रकृतिपंचविध्यात ॥ ५१ ॥ बहुरिद्रव्यमिथ्यातकेतीनिभेदह्वैजातफुनिजबजबउपशमधरेतबउपशमहूस
त ॥ ५२ ॥ कहेसमांहिकृतकफलदारतसुधदरसाय ॥ पीछेकीरजउठिकेफुनिकर्दमह्वैजाय ॥ ५३ ॥ ऐसाउपशमर
तहैअंतरमहूरतमांहिफुनिमिटिफुनिसमकितगहै ॥ केमिथ्यातह्वैजाहि ॥ ५४ ॥ मोहकर्मनबंधकोउदयाव
लिकेमांहि ॥ विचलेकोंअैसेकरेभावविशुद्धह्वैयांनांहि ॥ ५५ ॥ नीचेकेकूंघटायदेउपरिकेघाममिथ्यजाय ॥ आली
अंतरमहूरतकेउपसमकहियेजाय ॥ ५६ ॥ बहुरिउदेजोप्रकतिह्वैसोहीह्वैगुनथां ॥ मिथ्यातेमिथ्यातगुनमिश्र
मिश्रतेजान ॥ ५७ ॥ वेदकसम्यकप्रकृतितेउदेकरआनतान ॥ जदाहोयआस्वादनीयाविधिजांनविधां ॥ ५८ ॥
॥ क्षयोपसम ॥ चौपई ॥ सर्वघातकाउदेअभावा ॥ क्षयसउपशमकीतवेवचावा ॥ देशघातकाउदैअरउपसम
अैसेह्वैतकमक्षयोपसम ॥ ५९ ॥ क्षायक ॥ सातसत्ताक्षतेनिरभर ॥ ताकूंक्षायकभावतृसर ॥ ह्वैकेवलअंतकेव
पास ॥ उपजैपीछेंहोयननास ॥ ६० ॥ दोहा ॥ जेसेविसनीविसनमेखरचतधनतजलाज ॥ तैसेंसिवह्वितसम
कितीराखेमदातूलाज ॥ ६१ ॥ समकितकेबाह्यकारन ॥ जिनमहिमाजिनकविंदुवसदुखवेदनसुररिद्धिभ
वसुमिरनआगामश्रवनकारनवाह्यप्रसिद्ध ॥ ६२ ॥ अंतरंगकारन ॥ अंतरंगसम्यक्तकाकरनलवधिकेमतला
तकरनलवधिकेजसेभाषीसर ॥ ६३ ॥ पंचलब्धि ॥ चौपई ॥ प्रथमक्षयोपशमलब्धिसुव्यापत ॥ पंचेंद्रीसै
नीपरजापत ॥ दूजीविसुद्धिलब्धिमेचाव ॥ पुन्यवंतकारनह्वैभाव ॥ ६४ ॥ तीजीलब्धिदेशनावरप्रापतिमिले

सुगुरुउपदेस॥ आयुकर्मबिनसातंजाहर॥ अंतहकोडाकोडीसायर॥ ६१॥ यनकिमद्धिमथितिजबहोय॥ लब्धिप्रा
योगचतुरथीसोय॥ पंचमलब्धिकरनकेचरन॥ अथोत्रपूरबअनिवृतिकरन॥ ६२॥ दोहा॥ एककोटिकेउपरे
कोडाकोडीमांहि॥ अंतहकोडाकोडिकी संख्यादइबतांहि॥ ६३॥ लब्धिआदिकीच्यारिजोभविअभाविनासिद्धहोत
लब्धिपांचवींहोततबहोतसम्यक्तउदोत॥ ६४॥ करनेनामपरनामकाताकीलब्धिजुसोय॥ करनलब्धिसंपा
लहेंभेदतीनबिधिसोय॥ ६५॥ होतजुभावबिशुद्धकेंअबिभागीप्रतिछेद॥ येकसमयकजीवकेंआदिअंत
जुतभेद॥ ६६॥ जीवनिआरद्धजासमेंअधोकरनलेभाव॥ अबिभागीप्रतिछेदतिस्यांबिधितेहूजाय॥ ६७॥ आदि
अंताबिनपाईबेंअबिभागीप्रतिछेद॥ बाकेयाकेयकसेअधोकरनयाभेद॥ ६८॥ नानाजीसायठीनेंअधोक
करनदूसनाम॥ कहूंमिलैंवहूंअमिलभीकरनेनामपरिनाम॥ ६९॥ नानाजियअरयेककेहैंअपूर्वपरिनामभ
दासाथिदोऊअधेंतोसमांनहूंठांम॥ ७०॥ सबेजुअनिवृत्तिकरनेकाहोतबिधानसमान॥ भावअनामबिसुद्धता
पोमाधीआयवांन॥ ७१॥ उत्तरोत्तरबिसुद्धताभावनकीयहचांन॥ घटजाघटताकालहैअंतामहूर्तमांन॥ ७२॥
भिन्नभिन्नपुनिएककाअंतरमहूरतकाल॥ अंतिअनिवृतिकरनहैसंख्यकरतनबिसाल॥ ७२॥ उक्तमहा:का
ललब्धिबिनहोतनाहिसम्हसांचीबात॥ तोउघेप्रकारबिधकथाकोनदुखावेगात॥ ७३॥ कालनलब्धिकदसमस्कंके
जांनीजातनकोय॥ बानेपांनीकेउदिमकंकाहेठानतलोप॥ ७४॥ चौपही॥ सैनीपरजपाप्रगातिच्यारिअधा

र्दे द्दै मधिसवत्रसनारि॥ छूटाकालतैवर्जितकाल॥ समिकाजोगितकायाहाल॥ ७५॥ ऐसाद्वैजोनग्रारसकौरउदिमभर
किपानलधरे॥ ताकेजांनंल्याबीनकाय॥ औरभ्रांतिजांनोकिम्मोय॥ ७६॥ दोहा॥ प्रायतिकेवलमेरच्यान्तेतार
मझ्रतज्ञांन॥ दिष्याउद्धमततैभयाभस्थद्विकेवलज्ञांन॥ ७७॥ छद्मस्थहिन्याजावादकासंपकउदिमसाधि॥ ग्रप्र
वंदमुनियोकहीसमैसासमसाभि॥ ७८॥ भलानकेकावासयजोसमकितहोआय॥ चुरद्रवमिथ्यामतीउपजे
थावरकाय॥ ७९॥ समकितजुततोपम्पांनव्रतसांचामारगयाव॥ विनसमकितजिनालिंगह्रैमिथ्यातकापाव
८०॥ तीनलोककातिहुकालमैमिथ्यासोनहिपाप॥ समकितसोउतिमनहीसुखहैआपेआप॥ ८१॥ चौपई॥ है
यनिसर्गजातैसुककाज॥ कंयोउपदेशवतजानलाज॥ यककनिसर्गजकाजनसरै॥ तीनरतनपरनासिकरै॥ ८२॥ समकि
तंतोहैविधिहैजात॥ रपानाऊपाउपदेशपांत॥ पाउपदेशसर्वविधिभला॥ सदजैतोकोयककोमिला॥ ८०॥ द
है॥ कावरभागीजीवकेसहजानिसर्गजहाय॥ अधिपाप्रमहैउपदेशातयातेआगामजाप्य॥ ८१॥ येोकरतेकरतेस
होभावविसुधतापाय॥ तवैभेदविज्ञांनकरिसमकितसेतउपाय॥ ८२॥ आगमसुनिउपानीकरेजोपीनजोप्य
पिछांनि॥ देवधर्मगुरआदिदेकेरैअसुभकीहांनि॥ ८३॥ क्रियाव्रतपुरांनकाआगमपांडिवयांन॥ आतमकाअ
धिकारपकअध्यातमसजांन॥ ८४॥ इति॥ परमांनकथन॥ अध्यातमकापांनहै नैनयपूपरमांन॥ सकल
देशपरमांनहैयकदेशनपजांन॥ ८५॥ सप्पकरपानप्रमांनहैश्रतापिपरोषिआपार है प्रतस्पकेभेदहैपरमाएय

विवहार ॥ ८६ ॥ परमारथके भेद दोसुकल विकलमय ग्यांन ॥ सकलविसदकेवलप्रतखिसर्वद्रव्यविपरजेज्यांन ॥ ८७ ॥ वि
कलप्रतखिअविसहअवधिअरुमनपरजेयपांन ॥ सांविवहारप्रतखिकोभास ॥ अवेविभांन ॥ ८८ ॥ चोपही ॥ अ
वग्रहईहाअवाय ॥ धारनइंद्रीमनसमुदाय ॥ सांविवहारप्रतखिप्रतितपांन ॥ आगमप्रांहिकथाप्रवांन ॥ ८९
दोहा ॥ सुनिपरोखिपरमांनतास्वार्थपरार्थदोय ॥ संमतिप्रतिभिग्यांनअरुस्वानुमांननिजदोय ॥ ९० ॥ जोमहली
दवीसुनीसुमरनसंमतज्ञांन ॥ योबेसोवेसानदीसोहेप्रतिभिग्यांन ॥ ९१ ॥ साचजिकेनमकीजानेतकेपिछांन सा
धनसाधिसाधिलिंगहै ॥ स्वानुमांनपरमांन ॥ ९२ ॥ आगदेनिअआगमपथकीसोस्वार्थपरमांन ॥ परार्थपरमांन
सावचनरूपपनतज्ञांन ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ नांदिसकेघटघटनहीमांहीकछुअज्ञांनसकलप्रतखिव्यापकविस
निश्चयसकेवलज्ञांन ॥ ९४ ॥ दीपभानउदोतविनदृग्याविनपरचांनअवधिरुपांनमनपरजइंद्रीविकलप्रतखिप
समांन ॥ ९३ ॥ इंद्रीमनकेनिमततेहोतज्ञांनपरतख्य ॥ आपुतोथिंमतिस्रुतयुगमघटवढहरकिज्यांय ॥ ९४ ॥ चो
पही ॥ आपतवांनीअरुपापज्ञांन ॥ आपतुमेअगमकोमानतातेआपतनाविपदस्थान ॥ जोतहुगाढास
ढांन ॥ ९५ ॥ दोयअठाराविनसवज्ञांन ॥ राजतपारसमगुनथांन ॥ भविजनहितवानीवरखंत ॥ सोअआपतभ
गवतअरिहंत ॥ ९६ ॥ भद्र ॥ दोहा ॥ विनादेहविवाधारहितआदिथितनाहितासे ॥ अेसादुश्वरसांनियआप ॥
नज्ञांनप्रकास ॥ ९८ ॥ उत्तर ॥ चोपही ॥ विनादेहवचननहिहोय ॥ वचनविनाउपदेशनकोय ॥ विनउपदेशहोज्ञांन

हिभला ॥ आपतनविनजोगिनसला ॥ ७ ॥ प्रद्धा ॥ अडिल्ल ॥ तनथौकेअवतारदृष्टकौंतनत्यागिनमारे ॥ लोहैभोगउपभोगअन्न
काकाञ्जसारै ॥ ऐसाआपनअग्रदृष्टपापुन्यात्हवनावै ॥ आपुअनतनतेजेअसवेदनिपभगावै ॥ ३ ॥ उत्तरः कुंडलिय
कैभेग्गउपभोगजोधैप्रीतिअदोस ॥ ताकेकर्मफेरैनहीरकैआपदकोस ॥ रहैआपदाकोसगपंनानिरमलनप्रका
स ॥ सर्वचराचरसमान्यादिकंकैसभासे ॥ विनभासीभासैवथावधप्रपंचकैसधरे ॥ ऐसैकासैवगावनैसगातिगोते
फिरावोकैरै ॥ ४ ॥ कोवदभागीविचनसुनिआपतनतेउपदेसअपापरसरधानगाहितजेमिथ्यातअसेस ॥ तेजेमिथ्यात
असमभागेंतरागविधारी ॥ जथासाकैअधितपागकर्मकेबंधनटारी ॥ मुनियेकाकीभयादृष्टिकेवलतिसत्तागी ॥ तवैते
स्वेयंआनंदैपरआपतवद्भागी ॥ ५ ॥ दोहा ॥ संस्यागीअरमुक्तकीनाहिकीआदिनअंत ॥ अंदेसाकउपदेसंकीपांपरानामितंन है
महत ॥ अरउत्तर ॥ चोपाई ॥ ऐसेसुनियेलछियेनांहि ॥ कैवाकरिमंनमेमनमांहि ॥ जिस्यामराववन्हलाय ॥ तेसस्यावगिआप
नभय ॥ ७ ॥ सवज्ञानामांनुथाविमकोय ॥ याकीवातकहांजियसोय ॥ हीनअधिकउपातापवेहैली ॥ तेसैसवकेरपानाव
ही ॥ ८ ॥ रागदोसकैसंसवगई ॥ यहनोकथासुनीहमनई ॥ अवकुभासैरागघटाय ॥ उनपुरयनैनेसकलमिटाया ॥ ९ ॥ सस्म
अविभागीपरमांनं ॥ सस्मकालकेसमयजांनं ॥ तथाअनंतासपुमजीव ॥ धर्मअधर्मअकासतीव ॥ १० ॥ अविभागीअन
केरूपाया ॥ इंद्रिप्रतीअतिवस्तुदाया ॥ अतीतअनागतहोतपदार्थ ॥ मुनिआवकलआचारजिपार्थ ॥ ११ ॥ पज्ञाप्रतिष्ठाअ
तिआचार ॥ दोसहूवाताकाप्रतिकार ॥ रोगनअरोगतनांपरस्तार ॥ विनआपतकिनकीयाउधार ॥ १२ ॥ ऐसैंवातांआ

पतकही। आगमअध्यातममेमही। ताकीश्रद्धाकरुविपरतीत। धोतीवजोहूजागजीत २३॥ तथाप्रश्नउत्तर॥ चौपई
पछीदेवीसारीमही। आपतनाकहूंहै दीनहीं। जोतुमदयोसारीजाग। तोतुमहीआपनघट्भाग २४ अरथसदैमै
आपतधने हमताभांनेगमवजनेकोउथापकोपउथापि। सवमांनिवाकेस्येथापि २५ सवकीआकीआखोलैनी व
ढ़ैहापसोहीतजिदयो असीमतितुममेहैकहा। तोतुमहीहोसवतेमहा २६ यनसवमहीउत्तमनांन। दूषथापि
कोरिहैसनमांन। अवलोसनारहीजिदांन। तथापेसोहूपरधांन २७ असेकोहिकरिफुनियमकहा। तुमहीकहोज
थारथकहा। जोकेकुकिनांहीअभिप्राय। दोषअघोरदितसुभाय २८ थिरउपयोगसर्वकाहाता। परिग्रहीहिदि
नभतदुषदाता। अनेकांतवांनीतिसुआगम। नेनिधेपकसिद्धेहै। भालम २९ दोहा। सवसदेहापरमांनहैनयकरि
उपमांन। विनसापेख्यानेमिथ्यासापख्यासानिमांन ३० सोरठा। असीहैपरमांन। असाविवधनेकवनहै। भेदस्व
धांरांन। नामपरोजनभदहै॥ अथसप्तनेनाम॥ नेगमसंग्रहफुनिविवहार। रिजुसत्रअरसवदप्रकार। समभि
रुठैनेलोकाविख्यात। एवंभूतकहीनेसात ३१॥ अथनेगमभेद॥ दोहा॥ द्रवांअगाहीयगासवकूंवरनतहै। फुनि
अपलपूरककहैनेगमनकोचाल ३२ अतिकातीकूंवदेपाकातीमेंव्यारहै। भमेगपेतातिथिकहैआजिमनपनस
है ३३ जामनदीपहधकूंतुरतकहीकहदोय। नेगमनयकीरीतिपहसकलापेतगहलेय ३४॥ अथसंग्रहनय॥
चौपई॥ पितेसत्रातीधर्मसमांना। नामयवकपोलेवहूथांना। अंतरिकंतभेदहै तोलोसंग्रहैनेसंग्रहै कै॥

लो २६ ज्यौंहारनै निरखतजैपेधरमतहाही भेदकौरेसंग्रहकेमांही नैव्योहारतहालौकलै जौभलौसंग्रहसरूपापालिलै २
७ चेतनयेकद्रव्यजियजोय सिद्धसंसारीभावेदोयसंसारीयावसत्रसजांन त्रसस्सुरनरपशुनारकथांन २८ व्या
रिवरनमांनुख्यागतिमांही भेदभेदकेभेदलखाही ऐसेसंग्रहऊपरविवहार होत्यौनैकाकारउचार २९ अथ ऋ-
जसूत्र सर्पसुस्थाईजोपरजाय सूक्ष्मपरिनिसत्तपरजाय दिजसत्रथूलपरमसनादै आपुक्रंतलोमानुखकहै ३०
सबदनै सबदुयनेसबदनिवारेजोगिअर्थकंतुरत्तानिहारै उतमम्रद्धिमयेकअनेक नारीपुरुसनपुंसकयक
३१ कारकादिव्यापकनोविकार लिंगेलादिककीअर्थविचार तदेमाततुप्रभुजतात आेयदमप्रोसुनियत
त ३२ ठचितदेयतोदीजेसाते अवप्रोदहत्यांसमताधरो इत्यादिकवहुवचनउचार सबदनैकरितितसु
धार ३३ संमभिरूढनै बहुतबाचिकोवाचककोय येकजातकंप्रगटैसोप गामनकैजोजोगाकहिये स
वकंत्पागिगायरलोगाहिये ३४ जेलतैनिपज्योजनउजकहावै अन्नजनाकमृत्यकमलहिहपावै नामानिरख
कवहुसंसार समभिरूढनैकरेउचार ३५ एवंभूतनै जोलौजैसीकिरियाकरै तोलौताकीसंग्याधरे येवंभ
तेनकासुनिभेदंव पजकनकेहपजनेदेवं ३६ द्रव्यनैगमसंग्रहविवहार परज्यार्थिकहैसोसाचार द्रव्यपरोज
नद्रव्यार्थिकका परहैजांनेपरज्यार्थकका ३७ निश्चैआदिवहुरिविवहार येकनैत्रध्यातमसार दस
नग्यांनचरनमयनिश्चैपेरभेदविवहारीपरदै ३८ निश्चैनै पासापेख्यारहितअनपम्याधिंन्नेनविनक्रव

लअरूप ॥ निजगुनपरजैभेदनाहै ॥ परतसु धनिश्चैजेकहै ॥ ३९ ॥ उदाहरण ॥ जीवचतुरगतिसिद्धसमान ॥ माह्निस
वैसैकैवलापांन ॥ बिनासिद्धकेवलासिववास ॥ कर्मालिपतमेलज्ञगभास ॥ ४० ॥ दोहा ॥ नैअशुद्धनिश्चैकहेद्र
व्यकेमांहिविकार ॥ तातैयाविवहारसमअशुद्धकोदातार ॥ ४१ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रनिश्चैमईसदासुद्धहूसक ॥ आ
मात्रकुछिअंननहिनिश्चैकियविवेक ॥ ४२ ॥ कुंडलिया ॥ नांहीसपासघाताहूगनाहिरसनानहिकं
न ॥ नापवचनमनहूनहीनहींक्रोधकुलमान ॥ नहींक्रोधकुलमानलोभरतिवेरनमेहूनहींकर्मनोक
र्मपरानांभेदनमहं ॥ चितनएकअभेदसदारतनत्रैमांही ॥ नवपदार्थहूनाहिसाततत्वारथनांही ॥ ४३
॥ अथासतार्थविवहारनै ॥ चौपई ॥ असत्यार्थविवहारपिछान ॥ सत्यारथनिश्चैनेजान ॥ निश्चैनैतै
समकितहोय ॥ निश्चैनैमेबंधनकोय ॥ ४४ ॥ सरध्योसुन्योअनतविवहारनिश्चैबिनभरम्योसंसार ॥ यातैद्व
आपापरभेद ॥ अनभोकरिनासेसबखेद ॥ ४५ ॥ बिनउपदेश्यांसबसंसार ॥ पाहेरमांहिनिपुनविवहारमि
लसककीकठिनपिछांन ॥ यातैनिश्चैकरसरधान ॥ ४६ ॥ संसकृतकेसुनेउचार ॥ कोजनकोरिहैचाकितगाव
र ॥ वासमुखवाकीभासातै ॥ गुरव्योहाररुचारपातै ॥ ४७ ॥ जोजिनमततउरमेधरै ॥ तोदोन्यूंसेयेकनटारै
निश्चैतत्वातत्वनाहिभांन ॥ हूजीबिनासिवपथकीहांनि ॥ ४७ ॥ आधीगामविनउपदेशानहोय ॥ जिनसिद्धां
ताकिनांनाहिभांन ॥ हजीबिनासिवपथकीहांनि ॥ ४८ ॥ आधीगमाविनउपदेशनहोय ॥ जिनसिद्धांतावेनां

नहिंसोय । वचनविनांसिद्धांतनजोय । नयतैंरहितवचननहिंकोय ॥ ४९ ॥ जहांकछुनयकनेकावैंरे । हगुनितबउरमै
धरै । स्यादवादअंकितजिनवैनता विनतत्वनभासैअनैं ॥ ५० ॥ येकगोनयकमुख्यिकरिकहैं । येकाहिकंनहिंजि
नमतगहैं । ज्योंगजनरिदोंओरीगहेतवदधिप्रथिकेघ्रतकंलहैं ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ सदभूतासदभूतहैदोप्रकारवि
वहार । अनुपचरितअरुउपचरितदोदोकरिकेच्यार ॥ ५२ ॥ कैरजीवमैकल्पनासोसदभूतविचार । ज्ञानव-
न्तसैकल्पापिहैअसदभूतविवहार ॥ ५३ ॥ बिसीभांतिजोसंभवेअनुपचरितपमजांनि । असंभावीसंभवकरै
सोउपचरितवषांनि ॥ ५४ ॥ अथासदभूतअनुपचरितविवहारनै ॥ दोहा ॥ भेदनांहिपरदेशोमैतामै
भेदवनात । संष्यातलष्यनंनांमतैवहुगुनवानतजात ॥ ५५ ॥ अनुपचरितनेकहतहैनैसदभूतविवहार । चापि
तदारमनरूपांनंगुनतैनिजीयकेसार ॥ ५६ ॥ अथसदभूतउपचरितविवहारनै ॥ दोहा ॥ देवमिनषनार
कपसुनागिहिंठीथांन । उपचरितविवहारनैसोसदभूतवषांन ॥ ५७ ॥ अथअसदभूतविवहारकेअनु
पचरिता ॥ जोगाकाल्याठोगनांअतिसुंदरओकार । अनुपचरितविवहारनैंअसदभूतअवधार ॥ ५८ ॥ अ
थअसदभूतउपचरितविवहार ॥ दोहा ॥ मेरांदेसंदेशपुरसुततातिपधनभंडार । सोउपचरितवषांनियेअ
सदभूतविवहार ॥ ५९ ॥ कुंडलिया ॥ नैनिश्चैमुखिबिनकीपैअशुद्धअनुमांनांहिलिय । पेयांमेठस्त्रलसकैतव
परवतिस्तंकोय । नवप्रहातेलोकामप्रासिध्याहारउपावे । उद्धातिकिरियाकेरेअधिकंथगाथठावे । निश्चैनो

बंधन हि विवहार है अस्वे । तातें तजि विवहार आदरे ग्यांनी निश्चै ॥ ६० ॥ अथ अप्रमापिकांन आर्धे ॥ दोहा
पुद्गला वीचि जग प्रेवमे यो आतम बहि हिंवांनि ॥ अनादिकाल समंध है ज्यौं तुष मांष पिंछांन ॥ ६१ ॥ संजोग वि
चार दृष्टांत ॥ निंदा निंदे फुनि फुनि करे ताकूं विसन वताय ॥ प्रगट आतमां को विसन राग दोष को चाय ॥ ६२ ॥ रा
ग दोष के विसन कूं सेय जीव कु घाट पस्यो वंद सेसार में निगोदांन हे आट ॥ ६३ ॥ निगोदांन वसु कर्म फुनि अशुभ असु
भ की भेव जव अशुभ चो कीन वंद्ध व्यत उदिम के ट ॥ ६४ ॥ भाग उदे कछु होत तत व निगोदांन अशुभ आय ॥ उदिम के वे
दत है नां हि दितम उाय ॥ ६५ ॥ निगोदांन दो जाति पछांडे कापन ये ल । दुषदाई वस्तु हे कठिन यों ज्रिय को वंवक
॥ ६६ ॥ यों प्रेम दुष आनि कें पीड़ा चिंता निंद ॥ करे विलापि दुषं भर सम अशुभ कर्म है रिंद ॥ ६७ ॥ दीन होय दुष भा
गवांन सुसामद कीन ॥ ठमो जांनि तव दुष करे फुनि फुनि अशुभ नवीन ॥ ६८ ॥ राग दोष वचन विसन मम भस
पयास मसार ॥ तामें विन दुष को म्स्हे दुषमेंता निरधार ॥ ६९ ॥ दुष भोग भाने न दुष नित आतम सुष जांन ॥ छा
डत हा आवन ही अवा सिंजांन्यान निगोदांन ॥ ७० ॥ निगोदांन शुभ होत वाभिलै भाग उपभोग ॥ सुष हिं होय पर धम
करे संभ पकरै रसन जोग ॥ ७१ ॥ जो शुभ सुष में म्यान है व्रत उदिम नां कीन ॥ उदिम विन निक सेन सो सदैं अ
शुभ दुष लीन ॥ ७२ ॥ जो लों सुभ तो लों करा उदिम संपक वृद्धि ॥ तो कर्मनि की वंद्ध तें तिका स्रिव सो सिव सि
द्धि ॥ ७३ ॥ कर्म थल तासीं नाद्रै मुनि पद लेने जोग ॥ सो ग्राही संपक्त गहि करे नीति तिते भोग ॥ ७४ ॥ अथ घात सप्त

प्रश्न॥दोहा॥कह्याप्रवचनसारमैंबिनआतमपहचान॥वृथातत्वकाजानपनसोकैसासरधांन॥७५॥उत्तर॥
जीवतत्वसबनरत्वमैंनिजपरद्वैबिधिभेद॥स्वसंवेदनापानबिननिरठैभ्रमविभ्रमछेद॥७६॥पढेउप्यारहअंग
लौंबिनआपापरज्ञांन॥रुद्रहायासिवनाविरेरुलैचतुरगतथांन॥७७॥योनिजआतमरूपानबिनवृथातत्वस
रधांन॥आतमपूरबतत्वरुचिसैंसम्यकतौंनिरवांन॥७८॥उक्तंच॥श्लोक॥शुद्धबुद्धस्वचिद्रूपात॥ह्न्नस्या
मिमुखीहवी॥विवहारेनसम्यक्तंनिश्चयेनतदात्मकं॥७९॥भाषा॥दोहा॥चेतननिरमलरूपलखयानिज
आतमरुचिकार॥परेजीवादिकतत्वप्रतीतसोसम्यकविवहार॥८०॥जोनिजआतमअनुभवैपरत्यागउपजंत
करैतत्वश्रद्धांनसोनिश्चैसम्यकवांन॥८१॥अथत्रिबिधिआतमा॥चोपई॥जिनवांनीबसिद्धुपआतमसं
म्यक्तीसोअंतरआतम॥बहिरातममिथ्यात्वरूपांनी॥त्रिविधिआत्माकहेसुपांनी॥८२॥प्रश्न॥दोहा॥
सम्यक्तीनादर्वह्वपुनिभवधारैसोय॥आवागमनमिटैनहींवृथापरिश्रमहोय॥८३॥उत्तर॥चोपई॥नौ
भवबिननअंतनहिपदनिरदोय॥त्यौंसमकितबिनढूंढतनहिकोय॥समकिततैंतेपरिग्रहपरिहरै॥कर्महरेतबसिवति
यवरै॥८४॥जथाजातजिनलिंगतिनांहि॥तोनहिभाषिरहेजगमांहि॥पैसमकितबिनमुनिजिनलिंग॥फिरे
जगातज्योपाउततबिहंग॥८५॥नलेग्रहहीजोसम्यकलीन॥बुरीजातजोसम्यकहीन॥कैसाप्रश्नसम्यकतस
रूप॥लषितंतामैंसिद्धसरूप॥८६॥प्रश्न॥दोहा॥स्वसंवेदनसुखलहैवदूद्रबिपांचकाय॥साततत्वश्रद्धा

नेतेसम्यक्तीहीजाय ॥ ८७ ॥ प्रश्न ॥ कुलदिनाल्होजोपटैंतातेंअनमांन ॥ समकितमेरेआपआपाहिलीनांसरधांन
८८ ॥ उत्तर ॥ चोपई ॥ स्वसंवेदीआतमसरधांनी ॥ अरथभेदमेविरलेप्रांनी ॥ कालिकालमेंदुरलभपांच ॥ उपास
कगाबकूनिरपावाच ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ तिनसंम्पतिकीकोचिहनभाषेंआगमतेन ॥ सोजानोंमैपाहूपसासम्यक्ती
केन ॥ ९० ॥ प्रसमवकुरिसंवेगताकरूनाआस्तिकवांन ॥ च्यारिचिह्नभाषमुनितातेहाथपिछांनि ॥ ९१ ॥ रागादि
समभतकमटकोधल्लोभमदमांन ॥ मंदहोयसमभावतेंप्रसमभेदसोजांन ॥ ९२ ॥ तनधनमनइंद्रीविषैमाततात
तसुतदारमोंनेंआथिरउदासहूसोसंवेगविचार ॥ ९३ ॥ प्रभदांनवसनेकोरपावसिककरूनाभाव ॥ जानेंसबजिय
आपसममित्रबनस्हितचाव ॥ ९४ ॥ नेमदेवअरहंतकुंआगमगुरनिरगंथ ॥ आसतिवानिश्चेमांनिहैदृढकरि
जिनपंथ ॥ ९५ ॥ ज्योंप्रतख्यकेवलग्यानकैआतमगुनपरजाय ॥ सोपरोखिल्हैमतश्रुतिनिश्चलसरधाथापहै
है ॥ ९६ ॥ उदैजुचारितमोहकैपरवसिसमकितवांन ॥ चरतनधरेंउदासहैकरैतत्वसरधांन ॥ ९७ ॥ अंसअंससमकितवां
नेंनरखेसमरनकेमांहि ॥ जैसेजलमेंकमलदलजलकुंपरसेंनाहि ॥ ९८ ॥ गुनअरुदोषपचीसविधिआधिक
ककथनविसतार ॥ चिह्नज्यांनिसम्यक्तकेपरमागमअनुसार ॥ ९९ ॥ अथपचीसदोस ॥ मठतीनषटआ
पतनआठगरववसुदोष ॥ धारेंदोसपचीसहूंत्यागकरनगुनपोष ॥ १०० ॥ अथदेवमठ ॥ पीपरवरतुरकी
तरुच्यत्ताचाकीद्वारि ॥ राडीप्रथवीकुपनद्दपगयगऊकुमारि ॥ १ ॥ पितरपिहाडीसीतलावासिकनेपन्हदेव

हरिहरब्रह्मागजवदनदेवमूढतासोय ॥ ८८ ॥ धर्ममूढ ॥ सिवरात्रीआदिकव्रतचोथिकनापातदांन । फलआदरसाधार
विधिधरममूढताजांन ॥ ८९ ॥ गुरुमूढः ॥ लखिसंगनिगुरुमूढतादाहहचरनकबीर । द्विजसंन्यासीसिवड़ाभोयाजि
कनफटकीर ॥ ९० ॥ अथषटआयतन ॥ कुगुरुकुदेवकुधर्मकुनिइनकेधारकतीन । तिनकीकरनसराहतेह्वैषट
आयतनलीन ॥ ९१ ॥ अथअष्टदोषकुपद ॥ ब्राह्मनक्षत्रीजनज्यातत्तपोराज्याधिजनकुल । ह्रैसबजनमैंपूज्यप्र
वलताधैरनिरानुकूल ॥ मोसमसुंदरअंगनाहिकोवहुरिविबुधमतिवाजीगाजरथसुमठधांनधनमेरेकोसत्र
ति । परवतपंपदलघोत्रजहूतपफुनिफुनिकेरा । अहंकारमदआठजुतमोसमकोतासोंअरो ॥ ९२ ॥ अथ
अष्टदोषकेनाम ॥ दोहा ॥ जिनमतसासनापांनमैंसंसेसंकाजांन । वांछाइंद्रीभोगकीकांछ्यासोवापिकं
न ॥ ९३ ॥ ग्लानत्पागामलीनतनखिविधिरनांमांनगिलांन । धैरमोस्हपरवस्तुतेमूढद्रष्टतांवांनि ॥ ९४ ॥ निरुप
गूहनकहतहैंव्यारिसंघमेंदोय । ध्यांनक्रियावनकीकुविधिकैरथिरतापोय ॥ ९५ ॥ जैनधर्मधरिनसंव
र्मरायनेरास । जिनमहिमोत्साथिनासकेकोविनप्रभावनांसास ॥ ९७ ॥ याविधिविट्ठनिहारिकैसमाकितवांन
पिछांन । विनाविंदुउपजैपावहेहैसोमिथ्यातीत्रांन ॥ ९८ ॥ तत्वयतापेअपजोकोंनकांनहैंनाम । ताकोकथनव
तायथकेंकाकरिपरनांम ॥ ९९ ॥ सप्ततत्वनाम ॥ चोपई ॥ जीवअजीवआश्रवाबंध । संवरनिरजरमोषिसम
ध । सातततपयनकासरधांनसोनरसंम्यकदर्सनवांन ॥ १०० ॥ प्रश्न ॥ दोहा ॥ अविनासीगुनवस्तुसव

भरीलोकमेंभरी तिनमेंकचोमेंसउपदीकरिओरकोंहरि १॥उत्तर॥चौपई॥जावतवस्तजगतकेमांहि सातत
त्वकैवाहरिनाहि पठतपठतभासेगीताहि मोटउदेतसंसेलोहि २॥प्रश्न॥दोहा॥उत्तमभुक्तिरानिस
रताकावेनन्तमें कर्योंअनुक्रमजीवादितैसोकाहियासिवकांत ३ सिवनासीउपमारहितवरननिसके
सोकांय नेपदज्ञामारगलहेकथनचिरातनसाप ४ कहामुनिकहाजगतमेंकथनजीवनआधार जीव
तत्वकोआदियोकथनभयोलाथिसार ५ विनअजीवाजियनाहहैसमेसकजगमांही योंअजीवदज्ञा
गियोंतापिकोनिसिवपांहि ६ जियअजीवकेमेलतेंआश्रवकोसंबंध आश्रवहोतेहोयहेआठकर्म
कावंध ७ फुनिप्रतिवंधकवंधकोसंवरजिनमतभाख्या तासंवरतेनिरजराकर्मनासासिवजाप्य ८॥अ
थजीवतत्वानिरनेसंखेपकथन॥चौपई॥जीवथाजीताहेंअवे जीवकानांहींयेकवे मांहीअगनतका
हैजेसे जीवचेतनालछनजेसे ९॥अथत्रिविधिचेतनादोहा॥ग्यानदोयावेनमायमेंसिद्धचेतना
ग्यांन केसमपक्तोधिग्यांनमेंग्यानचेतनाभांन १० कर्मचेतनांकर्मफलदोऊअग्यानजांन तांकेमांहिकिसे
यतातांकाकहुंवखांन ११ कर्मचेतनातिरसकेरागदेषपरधान थावरचेतनकर्मफलरागगोनतेजा
न १२॥प्रश्नसुनपसतीका॥ पंचतत्वकेमेलतेंउपजातजीवअनेक सोविनसततजिपाचिनसदेपुन्यपापा ॥१
पविवेक १३॥उत्तर॥चौपई॥तोसुतनियावेनवोदयस्नहो रविवाकोनकठिनसोकहोपुन्यपायवि

ग्जोजगहोय ॥ एकराजपदलोबकोंदोय ॥ २४ ॥ प्रतमईइकनरकीतिया ॥ तिनमबगएद्रव्यकहदीपाजानतजगतत्लदतहेसो
य जीवनांहितेजैआवेकोय ॥ २५ ॥ प्रश्न ॥ क्षिनकवादीके ॥ दोहा ॥ क्षिनाक्षिनमेजियओरव्है मताक्षिनभंगुरमां
हि कैसेअवरभोगेअवरसंसाकरियेनांहि ॥ २६ ॥ उत्तरचोपई ॥ ओरओरहोक्षिनक्षिनहोत ॥ उपजतपंचत
त्वमिलिमोत ॥ तोसुक्रंदजाचलनचहेत ॥ लषिविसनीनपदंदकोलत ॥ २७ ॥ फरवदीपाकाजअबबंदेफगर
नगरुघातजोकहे ॥ साधिमरातपरेसबकोय ॥ ताजियकइलककहोकिमहोय ॥ २८ ॥ प्रश्न दोहा ॥ पुरषयेकआ
याविबधिनांहीहजोकोर ॥ भायाभ्रमनासेलघेएकब्रह्मसमवेरा ॥ २९ ॥ उत्तर ॥ जउबतनदोयेकनहिएकन
स्वामीदास ॥ कुंजरकीदियकनकिपरगटहैतप्रकास ॥ ३० ॥ सत्तामात्रएककरिवहुरिसुजातीयेक ॥ भिंन्नभिंन्नप
रदेसतेनिरष्योधारिविवेक ॥ ३१ ॥ प्रश्न ॥ करतानेजेसंचेगतिसुषदुषजेकोय ॥ ताप्रमानभोगेजगतजियक
कस्यानहोय ॥ ३२ ॥ उत्तरचोपई ॥ रागादोयपरनतिजियकीनतवउपजेजडकर्मनवीन ॥ फुनिविरागहै
येकाहेत ॥ करताकर्मकहोकेहिहेत ॥ ३३ ॥ करताहरिकेकरमजुहोय ॥ कहाजीवकरताजहिकोय ॥ दानध्यान
तपव्रतवहुभाय ॥ करतवतावतकयोंमघजाय ॥ ३४ ॥ जडकोंचेतननांहीकोर ॥ चेतनजडतानांहीधरे ॥ को
ईकोकरतानहीं ॥ आपआपकेकरतासही ॥ ३५ ॥ प्रश्न ॥ भक्तिवादीका ॥ दोहा ॥ विषेभोगभोग
तसबप्रभकीप्रेतिसमेत ॥ पापनांहिनितिपुनिबढेयाविधिभाषेनेत ॥ ३६ ॥ उत्तर ॥ भोगरचेनिजका

रनैचालैश्रमकेहेत ॥ यासमकोंनअन्यायसैदेषाकरिकैचेत २७ श्रमभोगनिद्दिभोगतियभोगोवदीनअन्याय ॥ जोतियभो
गीपरजिनेसोतोंअपनरिमाय २८ चोपई ॥ जोएहमकरेभोगउपभोग ॥ सोलाधिंयप्रतकेसंजोग ॥ श्रमभेदममकोंअधि
काय ॥ भाक्तिकरतअघकेसेजाय २९ ॥ प्रश्न ॥ दोहा ॥ दुखसमरपितजइजीयहिंसाअघनाहिधर्म ॥ हिंसाहि
साकरजुतलहैस्वयदपर्म ३० ॥ उतर ॥ चौपई ॥ ह्रातनैमाहिपर्मपदहोय ॥ तोतपकष्टसदेचिरकाय ॥ तिय
सुतनिजकिनहामोजीवकुरहोमायसुदीनमदीव ३१ ॥ निजसमसुखदुखसवकौंहोत ॥ दुखतेदुखसुख
तेसुखगोत ॥ तातैहिंसाचिरदुखदाय ॥ त्यागोलगोदयाजियपाय ३२ ॥ प्रश्न ॥ दोहा ॥ आरंभमाहितुम
कह्योहिंसापापसमेत ॥ मंदिरराचिवोपरजिवोकौंवरनोसुभहेत ३३ ॥ उतर ॥ चोपई ॥ विषेभोगअदया
हितगेस ॥ तासआरंभमेहिंसादोसानिसप्रहभक्तभावचेराग ॥ जोपुजेजिनसोवडभाग ३४ ॥ पुनप्रश्न ॥ दोहा ॥
दिविधनिजुतजोकवल्लीसोप्रजतासिवहेत ॥ किवीअचेतनतमअचीपूजनकृथाअहेत ३५ ॥ उतर ॥ चोपई ॥
नामथापनाद्रवितभावकेरनिंखयाफलसमदाय ॥ च्यारभेदपूजतअघजाय ॥ यहीच्यारिहिंसादुखदाय ३६
उतर ॥ दोहा ॥ जिनप्रतिमाजिनसारखीकहीजिनागममाहि ॥ पुजाकुंदृयनलभोवंदनीकसोनाहि ३७ न
था ॥ भतभवषतवरततेसवाजियहिंसाहोय ॥ तातैअननगुनीवनोजिनकविनिंदकनोय ३८ प्रश्न समेतैंसरन
जुतंकवस्तीताहिभसैसवकोय ॥ ताहीकीछविस्तायितहीनमेसुधीधनिसीय ३९ सुधात्रियाहितमोहवि

नरहिंजलोभजिनदेव ॥ निंदककोपानिलहै है कोसुषकरिसेव ॥ उत्तरचौपई ॥ द्वैजुसोजियकारिजकरे तेसो
हीत्र्प्रधिकेविस्तरे निजमुषवरनवनावैकोय कोचपगटप्रतिबिंबितसोय १ ॥ दोहा ॥ चित्रफुनरीटयौजे
सजाकेभाव ॥ तिसावंधसहजेवथेकुतरीकानसुभाव ४० एकएकपकैंथयेकमतमानेकरेविवाद ॥ अनेका
नमतसर्वपाळिपरमातमअहलाद ४१ ॥ अथनित्यअनित्यविस्तार ॥ घटस्वरूपपेआकृतिघटपटस्वरू
पघटनांहि ॥ पिंडकपालघटमैनाहीपूरनघटमांनि ३ चतुरइंद्रीगोचरनघटद्रगगोचरघटरूप ॥ कुटिल
वक्रताघटनहीहिघटसुधसरूप ४ वाचकसरूपघटहैनहीवाकथार्थघटहोय ॥ पांनसकतोघटनहीं
प्रतिविंबघटजोय ५ विधिनिषेधविनवचननहिवचनतितेनेजांन ॥ सोयथातेसत्यनेविनसापेक्षा
हांन ६ ॥ अथअनेकांतमेसपतभंग ॥ उक्तंच ॥ दोहा ॥ द्रव्यदिष्टिजियानितहेअथिरन्यायपरजायनि
त्यानित्यद्रुमांनिफुनिविक्लव्यकथांनहीजप्प १ नित्यअवाचिकथांचिउंयोंतोहीअथिरअवाच ॥ नित्यानि
त्यअवाचितासातभंगयोसाच २ ॥ तथाजियद्रव्यमैनिजांन ४२ ॥ जोव ॥ दोहा ॥ इंद्रीसासोसासवल
आवरनैहेत ॥ दोहा ॥ उक्तंच ॥ जियउपयोगीरूपविनकरतादेहप्रमांनभुगतासंसारीवहुरिसिद्धउर्द्धगति
जांन ४२ ॥ जोव ॥ दोहा ॥ इंद्रीसासोसासवलआवव्यारिधरिप्रान ॥ जियजीवेव्योहारनेनिश्चेचेतन
जांन ४३ संसारीतिहुकालमेंअसेजीवतजीत ॥ सुयसत्ताअववोधचिद्जियासिववसेसदीव ॥ ४४ उपये

ग॥ चक्षुविनचक्षुअवधिकेवलदरसनच्यारि॥ मतिश्रुतिअवधिप्रकारद्वैपांनआपानिहारि॥४५॥ मन
पर्जेकेवलसहितहोतआठविधिग्यांन॥ भेदकहेउपयोगकेनेव्योहारसुजांन॥४६॥ शुद्धजीवाविद्रूपकेनै
निश्चैउपयोग॥ केवलदर्शनग्यांनगामनुन्नममत्पुनहेरोग॥४७॥ अरूपी॥ कर्मबंधमेरूपजुतानिश्चैरूपन
होय॥ पुद्गलमेहैवीसगुनमिलैनाजीयमेकोय॥४८॥ करताके॥ करताजीयाविवहारतेनरागदोखसमुदाय
निश्चैआतमाग्यांनमयकरताकह्यौनजाय॥४९॥ देहप्रमानके॥ चेतनजोतमेहारसमलघुगुरदेहप्रमांन
होतदीपकीजोतिज्योंभाजनकेपरमांन॥५०॥ निश्चैदराचेतनविषैलोकप्रदेसप्रमानसमदघातविधिक
थनकोजिनवरकह्यौविधांन॥५१॥ अथसमदघातभेद॥ प्रथमवेदनाचहुरिकखाय॥ तनविकुर्वनां
नीचागाय॥ मारनांततेजसविख्यात॥ आहारककेवलद्युतसात॥५२॥ मूललछन॥ मूलसरीरतजोविना
निकसेजीवप्रदेश॥ फुनितापिंडहितहैमुलपिंडवेसपुदघातियामेस॥५३॥ वेदना॥ दुसहवेदनाभोगतेनिकसेजीव
प्रदेस॥ मरनतुल्यदुखजातफुनिवेदनपेठेपरवेस॥५४॥ कषाय॥ रिपविध्वंसकषायधसिक्रोधितआकुल
होय॥ बाहरिनिकसेअंसनिजस्वपरांपानकोप॥५५॥ तनाविकुर्वन॥ रिद्धिवंतनरनारकीदेवाविक्रियाठ १
निकरटवाहरलिंअसनिजतनाविकुर्वनांजांनि॥५६॥ मारनांतिक॥ मरतीवरियाजीवकेचाहरीकेठप्रदेश
बांधीगतिकेपरसकेांचहुरिहोतपरवेश॥५७॥ तेजसकथन॥ तेजसमुनिकेहोतहैलाघिसुभअसुभविक

रीरघट्टस्वजोजनोनवजोजनविस्तार ५८ निकसैवामेंकंधेतें अशुभरूपविकराल वैरीस्थलविध्वंसका
रिमुनिकूंनाथैवाल्लि ५९ निकसैसैंकंधेदाहनेंशुभाकारूपशुभज्ञान दुरविश्नपादिनिवारिदुष्मफुनि पैसेनि
जथांन ६० अहारक जेवछठेगुनथांनमेंहुसंससेउद्योत मिलेनदर्शनकेवलीजवें आहारकहोत ६१ सकट
यतनफटकसमगुनिमस्तकतेंहोय तहांजायजहांकेवलीनिरखिवाहुडेसोय ६२ केवलसमुद्घात अथ
मदंडकपाटफुनिप्रतरपूरनच्यारि विस्तारनसंकोचविधिन्आठसमेमेधारि ६३ मारनांतआहारकागम
नयेकादिशधार समुद्घातवाकीनकागमनदक्षदिसटार ६४ आठसमेंकेवलतनेंसमसमंप्रसंख्यात नि
कसेपैसेंस्वारिज्योंसमदलदृष्टविख्यात ६५ ॥ इतिसमुद्घात ॥ अथसंसारी ॥ जिसेंयमंसमापिंदायविधि
थावरजंगमरूप ॥ कर्मबंधवविवहारमेंकरमराहितासिवभूप ६६ सिद्धपद कछुकहीनतनआमतेंआतमकेप
देश ॥ वसुगुनजुतवसुकर्माविनसिवपुरमेंपरवेश ॥ ६७ ॥ सिद्धजीवविवहारनेंथिरपउतपातिथितिरूपनभ
वताजिसिवगतिलहइआविचलशुद्धसरूप ॥ उर्द्धगमन ॥ जीवबंधविनउर्द्धगतिसमसांहिसिवजाय ॥ ज्योंतंवी
फलत्वेपविनातिरैवारिपैआप ॥ ६७ ॥ जीवतत्वआसितत्यहिंतनवविधिवरनेंभेद ॥ भावाथासपुरानमें
करनमिथ्यातउछेद ६८ ॥ अथअजीवतत्वकथन ॥ जडचेतनतारहितहैपांचभेदहैंतास ॥ पुद्गलधर्म
अधर्मफुनिकालद्रव्यआकास ॥ ६९ ॥ पुद्गललछन ॥ पुद्गलजोपूरेगलेंद्वोविधिभेदवखांन ॥ अणुस्कंधसद

मञ्चगामसूक्ष्मबहुरिहूजोयंधानिधानि ॥ ७० ॥ अथ आगमकथन ॥ पुद्गलपरमांनूदरव अविभागी अविनास
वरनगंधरसपरसद्वैसहितलोकमेवास ॥ ७१ ॥ यटकूरतीपूरेगलैदृंदीगोचरनांही ॥ बंधरूपकारनकेथोप
मांनकेमांहि ॥ ७२ ॥ अथयदकथन ॥ मिलैअनंतानंतअसुसोअवसंपीविधांन ॥ वसुअवसंगिमि
लेतवसंनासंनप्रमांन ॥ ७३ ॥ आठनुसंन्यासंनिमितुटरेणुनिरधारिवसुतुटरेणुकोमिलैअसरेणुअव
धारि ॥ ७४ ॥ असरेणतेवसुगुनंरथरेनहैसार ॥ रथरेनुवसुसंगहैभोगभूमिकोवार ॥ ७५ ॥ प्रक्षमपाप
मानकेकथनअनवस्थासिद्धोय ॥ तातसानिदृष्टांतपकसंदेहसदेनकोय ॥ ७६ ॥ दृष्टांतः ॥ कोटिअ
यथीत्पाद्रूपेसरसरसमांन ॥ मपीपीसिकल्लीजियमात्रासिरसमांन ॥ ७७ ॥ कहोयदमात्राविस्तैअ
संकानकानांहि ॥ तसनंतानंतअगुनिवसेयत्रनमांहि ॥ ७८ ॥ भोगभूमितेअटगुनेमध्यभूमिकोकेसम
ध्यमभूमिकेसमकेसजघन्यकोवस ॥ ७९ ॥ जघन्यभूमिकेकेसवसुकर्मभूमिसिसुवार ॥ लीयजूवकोअं
गुलनिवसुवसुगुनेविचार ॥ ८० ॥ उत्साधांगुलपाहितैसक्ष्मआरहगुनमांन ॥ परमानांगुलहोतहैआतम
गुलनिजमांन ॥ ८१ ॥ चौबीसांगुलहाथकेंद्वैधनुषच्यारिकरमांनगनिहजारदैधनुषकाकोसएकपरमां
न ॥ ८२ ॥ चोपई ॥ कोससहस्सद्वैजोजनमोटा ॥ च्यारिकोसकाजोजनछोटा ॥ राजतासुहैंअतित्रूटी ॥ याविं
धिगिनतीनियपरि ॥ ८३ ॥ अथपुद्गलबंधकोभेद ॥ चौपई ॥ उक्तंच ॥ पुद्गलबंधभेदषट्जांन

वदूतथलकुनियलवखांन ॥ थलसससकिमसंनिमथलसरिकिमअतिसकिमकहिसल ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ कैसैअजि
थलनमिलैलकरीईटपखांन ॥ कीयभेदामिलिजायजोथलनेजजलठांन ॥ ८५ ॥ दीसैनैनांनिथलजोकरतें
कुंपनज्ञान ॥ जांनिथलसकिमपहैधपचांटनीरात ॥ ८६ ॥ गोचरइंद्रीग्यारिजोनिरषसकैनाहिनैन ॥ सकिमय
लवषांनियेगंधपरसरसैन ॥ ८७ ॥ सूक्षमकरमप्रदेशसवइंद्रीगोचरनांहि ॥ आपएकसेंसकैथविनअति
सकिमतापोहि ॥ ८८ ॥ अथधर्मद्रव्य ॥ दोहा ॥ सहजगमनजोंजंजडाजीयकरधर्मद्रव्यपरकार ॥ जैसैजलचरजि
यतिरैजोजलकेआधार ॥ ८९ ॥ अथअधर्म ॥ ज्योंसहजैथितिकरनकूंकरैअधर्मसहाय ॥ ज्योंतरुछायापाथिक
कूंसहजैहीथीतिकार ॥ ९० ॥ अथकाल ॥ अगुरुलघुगुनअभिनताईंद्रीगोचरनांही ॥ निश्चैकालाछीनवरत
नाकालालाकेमांहि ॥ ९१ ॥ चौपई ॥ भिन्नभिन्नकालानांजांन ॥ जुयेजुयेपदेसवखांन ॥ रतनराशीवतनि
श्चलनपरनतीनलोकमवस ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ निश्चलकीपरजायजोथिरउतपातिषैकाल ॥ समयादिकव
रतावनीकालभेदव्यौहार ॥ ९३ ॥ अविभागीसूक्षमअतावेठीएकप्रदेश ॥ पहुचेदुतिपरदेशलौतेतेस
मयोवेश ॥ ९४ ॥ असंख्यातजुगताजिचानिसमयावलिपहिचांनि ॥ सोसंख्यातीअवलीसासोसासप्रमांन
॥ ९५ ॥ सासोउदरनिदोविनसवकसुषीस्वाधीन ॥ ऐसेनरकेसासकूंगिनतीमांहीलीन ॥ ९६ ॥ अथमहूर्त
सैतीसैतहात्रिगिनांकोविदसासोसास ॥ संपाअगामकहतहैएकमहूरततास ॥ ९७ ॥ अथअंतरमहूर्त

समपाघातिमहूर्तकीअंतरमहुरतसरिखसमैयेकआवलीजानं भेदकानियं ॥ ६५ ॥ तीसमहूरतरातिदिनपय
यदिरादिनप्रमांन ॥ दोयपाखिकामासपकमासदोपरितुठांन ॥ ६६ ॥ अपनापरैरातितीनपैवरसअपनशुग
जांन ॥ सतसहसुत्लाठिकोटिअतिसंाधिअसंाठिप्रमांन ॥ ३०० ॥ पूर्वसंख्यानाट ॥ सतरिलाखकिरोड
मितछपनसहसाकिरोड ॥ सतेवरसमिलापकेपूरवसंख्याजोड ॥ १ ॥ अथवसुसंख्या ॥ चौः ॥ पाल्पिती
नसागरसंख्यांगुल ॥ प्रतरांगुलपुनिजांनिधनांगुल ॥ जहैंगश्रेणीजगप्रतरहोत ॥ बहुरिलोकघनवबि
धिजोत ॥ २ ॥ अथव्योहारपल्य ॥ दोहा ॥ चारिकोसवरकूपबानिरोमभरोतामांहि ॥ जवसौवरसवितीतवै
रामयेकनिकसांहि ॥ ३ ॥ योविधिकाढतरोमसववीतैजतीवार ॥ ताकीसंग्याजिनकहीयेकपल्पविवहार ४
॥ अथरोमसंख्याअंकवंध ॥ चौपई ॥ च्यारियकतीनुपुनिच्यारि ॥ पंचदोपयटतीसानिहारितीस
आटलाषिवीसमुवात ॥ त्रिनइकसातपुनिसात ॥ ५ ॥ चतुनोपंचसयकदुवआअक ॥ ३ ॥ कनोवायसिमांडि
निसंक ॥ अष्टादससवीदीविस्तार ॥ कूपरूपसंख्यानिरधार ॥ ६ ॥ अथअंकरचन ॥ ४१३४५२६३०८
२०३१७७७४९५१२१९२०००००००००००००००००० ॥ अथउद्धारपल्य ॥ दोहा ॥ असंख्यात
कोरोडिमितवरसांकेसमयांव ॥ गुनतअंकविवहारपालिहै उद्धारपल्यप्रमांन ॥ ७ ॥ अथद्वीपसागरस १९
ख्या ॥ दोहा ॥ कोडाकोटिपचीसगिनिपाल्पिउद्धारपरवीन ॥ ताकेसममाधिलोकमेंदीपउदाधिलाषितीन

८॥ अथ अद्धापल्य॥ वरस असंख्यप्रमांनके लीजे समे सुजांन॥ ताते गुनि उद्धारपल्य अद्धापल्य परमांन॥ ९॥ अ
थ सागरप्रमान॥ पल्यदसकोडाकोडिका सागर कह्या वनाय॥ शुभजीवनिकी आयु लखि अद्धापल्य समदाय
१०॥ अथ सूच्यांगुल॥ अद्धाछेद पल्यके जिते तितो पल्यले कोप गुने परसपर ज्यानियो सूच्यांगुल वि
धि सोय॥ ११॥ अथ प्रतरांगुल॥ सूच्यांगुलका गुनित जो सूच्यांगुलतें कीन॥ सो प्रतरांगुल आनियो ज्ञा
नवांन परवीन॥ १२॥ अथ घनांगुल॥ फुनि प्रतरांगुलकूं गुने सूच्यांगुलतें कोय॥ घनांगुल तब होत है
संसै नांहि दोय॥ १३॥ अथ श्रेणी॥ अद्धाछेद पल्यके तिने असंख्यातको भाग॥ दीये पल्यासंख्यके जो त्ता प्रमांन व
ड भाग॥ १४॥ गुनित परस्पर करि जिये घनांगुलकी जात॥ जगश्रेणी संख्या वनेपर मितराजूसात॥ १५॥ अ
थ जगपरतर॥ जगश्रेणीको जो गुनें जगश्रेणीतें कोय॥ ता संख्याका नाम सुनि जगपरतर है सोय॥ १६॥
लोकघन॥ जगपरतरकों कीजिये जगश्रेणी गुन मांन॥ तबें लोकघन होत है सव ते वडा प्रमान॥ १७॥ अर्द्ध
पुद्गलप्रावर्तन॥ कोडाकोडी वीस मित सागर कल्प प्रमांन॥ तिहें अनंत समय गुनें अर्द्धपरावर्त ज्ञां
न॥ १८॥ आकासद्रव्यकथन॥ दायक जो अवकासको दोय भेद आकास॥ सबैं लोकाकास है शून्य अ
लोकाकास॥ १९॥ लोकाज्य मांधि मैं वसे लोक पवन आधार॥ त्रिन सत त्रिन चालीस मित घनाकार वि
स्तार॥ २०॥ ऊपरि मंदर लग्या रसो मधि ऊर्द्ध लोकि अनुहार अधो तिरीना अर्द्ध समक अत्र तिमाधिर आकार २१

अथ अधोलोक घनः ॥ व्याससात मुख एकै ये माधि अधो सात चो कोर ॥ उन्नत राजू सात घन इकसो छिनवे जोर ॥ २२ ॥ ऊर्ध
लोक घ ॥ व्यास पंच मुख एकै थे क को ब्रह्म सुरग ये थांन ॥ ऊपर्चे वासा ठे तीन घन साठ तिरानवे मांन ॥ २३ ॥ तिलोक दिहो
न्नव सुरग सुगा सिद्धलोक लो आंन ॥ इकसो सैतालीस घन ऊर्द्धलोक घन जांन ॥ २४ ॥ वातवलै ॥ घनोवात
गोमूत पे घन मूग नस वे वाय पंच वरन तनु सब निपे भरमे सहज सुवय ॥ २५ ॥ जोजन सोलै वात दल ऊर्ध अधो अभो
यस वांन ॥ मोटी द्वादस राज जोजानि नि मध्यलोक के थांन ॥ २६ ॥ लोका सिषर पे वातवल भारि को सक कुलीन ॥ सट
जभा वन अविचल वहै ये केट्री तन लीन ॥ २७ ॥ नसे लोक के वातवल जोजन साठि हजार ॥ वातवलै विस्तार दै
लोकाकास मुझार ॥ २८ ॥ अथ त्रसनाडी वरनन ॥ ऊंची चोदा व्यास यक राजू को त्रसनाडि ॥ भांज्ञन ज्यात
हो तम नु त्रस जीवन की वाडि ॥ २९ ॥ ताही काढ्र कीस वी त्रसनाडी मरज्याद ॥ सुते क्षेत्र परमान है कर्मी होय नरि
ज्याद ॥ ३० ॥ अथ मध्यलोक सातसात अध ऊर्ध माधि मेरु जोजन लाषि ॥ ऊपरि सहस निन्यानवे सहस अ
धोगत भाषि ॥ ३१ ॥ तासमान मध्यलोक जानि राज मुख प्रस्तार ॥ असंख्यात दधि दीप माधि रजे गो लाकर ॥ अ
थ ऊर्द्धलोक ॥ सोधर्म जुलो मेरपरि सऊ धर्म ईसान ॥ सनतकुमार माहेंद्र दो राज डोढ मे जांन ॥ ३२ ॥ ब्रह्म कल्प ब्र
ह्मोत्तर नि लांतव कापिष्ठ र सुरग सुक्र महासुक्र फुनि गिनि सतार सहस्रार ॥ ३३ ॥ आंनत प्रानत जानि यो आर
न अच्युत प्रवीन अर्द्ध अर्द्ध मे दो वसे ऊंचे राजू तीन ॥ ३४ ॥ नोग्रीवेक अनुत्तर ये चानतर थांन ॥ सिलामुक्ति अ

क्रमउरधराजूमेसवजांन ॥ ३५ ॥ तीनलोकके अग्रमें ईषतप्रभानांम ॥ अष्टमप्रथ्वीसुभगहै ताकावरनंधांम ॥ ३६ ॥ सरवा
रथसिधऊपरे द्वादसजोजनजांन ॥ सातरजदक्षिनउततर पूर्वापरपकठांन ॥ ३७ ॥ मोटीजोजनआठहै ताभाधिसि
लासुथांन ॥ सेतछत्रआकारसमढाईदीपप्रमांन ॥ ३८ ॥ वीचिदलवसुजोजनतनाघटतघटतक्रमरूप ॥ माथी
परआसिधारसमायतलीकोरअनूप ॥ ३९ ॥ घनोदतापैकोसदोयगकोसयेकधनवाय ॥ योरासोलासेधनुष
तनवातमोटाय ॥ ४० ॥ सिद्धअनंतानंतवो तहांसिवालेधांम ॥ राजेनअव्याबाधसुख जिनकोसदाप्रनाम ॥ ४१ ॥
याविधित्रसनाडीविषेउरधलोककीठौर ॥ जेनिसुधलगीनिलोतहैरजूसातकान्तौर ॥ ४२ ॥ अथमध्यलो
कपचासिकाचौपही ॥ असंख्यातदीधिदीपमकार ॥ दीपजंबूमाधिगोल्याकार ॥ लक्षजोजनाविस्तारोहै
नाभाधिगोलसुदर्सनमेर ॥ १ ॥ ह्नालवनोदधिसववोर ॥ सोजलखारनुतख्याहजोर ॥ तानेढूनाधातकिजा
नकालोदधिताद्गुनप्रमांन ॥ २ ॥ यातैदुगुनांपुस्करजोर ॥ मांनुषोत्रगिरआधीठौर ॥ कालोदधिताद्गुनाथां
न ॥ परेपरेदधिदीपमहान ॥ ३ ॥ मांनुषोत्तनकदीयआठाय ॥ मांनुषमोटैपावनजाय ॥ आगैजघन्यभोगभूरीत
पशुपंचेंद्रीदपातिप्रीति ॥ ४ ॥ जलचरविकलद्रीनरनांहि ॥ अतिफकालनकीरिचनरहांहि ॥ उदधिनमेजलजात
नपाय ॥ अंतस्वयंभदीपलगाय ॥ ५ ॥ गिरनागेंद्रअर्द्धपप्रमाहि ॥ यासुप्रभउदधिलधांहि ॥ नावाहरिदेकौं
नेच्यार ॥ रवनांतिनकीलियांविचार ॥ ६ ॥ अर्द्धदीपदधिकोंनेच्यारि ॥ कर्मभूमिहैपशुपरवार ॥ भरथइरावतखेत्र

विदेह इलहूमांहिकमेभूऐसं ८ जंबूकीरचनाअवकहूं स्वाध्यायमतरसंलहूं पूर्वअपरलंबेगिरिखेत दखिनीतर
योरायसमेत ९ भरथहैमवतहरिसुविदेह रमिकहरनिअरुपरावतनेह सातखेत्रवरभयाविभाग कूलकुलाच
लविधिविधिजाग १० हिमवनमहाहिमवननिषधार नीलरुकमीसिखरीगिरिमार हेमार्जुनतपनीपरू
नीलरजतहेमवरनैपनिमोहन ११ तिनमस्तकपेद्रहजलभरे पानतेंसरिताचोदहरे पद्ममहापद्मतिगि
छ केसरिपुंडरीकमहापुंडरीक १२ षटकुलाचलवसनीदेवि श्रीह्रींधृतिसुरतेंसेवि बुधिलछमीकी
रतिपदहवांन चरनेंसरितानामविधांन १३ गंगासिंधुरोहितरोहितास हरिधरहरिकांतासरितास सी
तासीतोदानरनारि नरकांतासुसुवरनाधारि १४ रूपकुलांअररक्ताकरी रक्तोदाजुतचोदहसदी पद्म
लेकाहिपरवदाधिमिले पिछलीवहहीअपरदधिमिले १५ आदितीनहिमवनतेंचली अंततीनसिखरीगिरिढली
सेसासेसकुलाचलथांन दोयदोयपकगिरितेंजांन १६ भरतखेत्रविसुकुमधिभाग जंबूदीपनवनिसतभाग
खेत्रयकीइलांगिरिलहो गिरितेंदूनौखेतरजहो १७ योविदेहलोंअनुक्रमधरे अर्द्धअर्द्धघटताहूपरे भरयऐ
रावतखेत्रदोय फिरनकालकीयनवेदोय १८ जथाजोगिसासताकाल औरठौरमेंरहेविसाल अंतिदीप
दधिपंचमजांन दीपअठाईमांहिविनांन १९ बाकीदीयअसंखेविख्यात तिनमेंकालतीसराप्यात निषध
नीलाधिचिमेहजेरे उतिमभोगभूरचनांधरे २० दखिनउत्तरमेंजांनूंठांम देवउतरकुरतिनकानांम परबउ

नरविदेहीथांन ॥ हैवतीसखेतरपरमांन २१ जहांचतुर्थकालहैसदा । मुक्तिपंथहूकतानंकदा । खेत्रहेमवतदू
जाकाल । तेसाहीहरिवरनिकेभाल २२ मध्यभोगभूरवनाजान । तीजाहरिरम्यकथांन । फिरनकालकी
वरनंनअबै । भरथईरावतजेसोफबै २३ पहलाहूजातीजाकाल । चोथायनषष्ठमनकराल । फुनिकुटापुनिपं
चमहोय । चोथातीजाहूजाजोय २४ बहुरिप्रथमतेअनुक्रमभाल । याविधिफिरतीरहनीटाल । पहलोदूजोती
जेकाल । उतममध्यजघन्यमचाल २५ चौथेसुरसिवमारगचलै । पंचमसुरद्धमुक्तिनमिलै । छठेअंतपरलेहू
जात । कालफिरनियाविधिविष्यात २६ अबअकृत्रमजिनघरगेह । मध्यलोकहेवानेगेह । मेरिमेरप्र
तिवनहेच्यार । कनचनप्रातिजिनमंदिरच्यार २७ मेरिकोनगजदंतेच्यार । तिनकेसिरपरमंदिरच्यार । जंबूसा
लमलीतरुसेय । दोयधांपजिनयनकेजोय २८ परकअपरदससबच्यार । खोडसमंदिरजिनकेसार । खेत्रबतीस
विदेहप्रमांन । भरथईरावतदोयसुथांन २९ यनकेमधिरूपाचलठोर । च्यारतीसजिनमंदिरजोर । छहूं
कुलाचिलपेषटथांन । येकमेरप्रातिवरत्रिजांन ३० च्यारिसतकेहेदउतेधाठ । पांचमेरप्रातियेताय
ट । धातकिपुस्करअर्धव्यास । दक्षिनउतरमध्यनिवास ३१ दोदोपरवतइष्वाकार । तिनगिरासिरपरमं
दिरच्यार । मानषोत्रफुनिमंदिरच्यार । यसनंत्रवक्रालाविस्तार ३२ दीपनदीसुरअष्टमनाम । ताकीच्या
रुंदिसाविभाग । अंजनगिरयकयेकेठोर । च्यारिवापिकाच्याहंचोर ३३ वापीमधिदधिमुषनिरधार । च्यारवा-

पुकेरथिमुषच्यारयेकयावदीकीदिसोकोर ॥ कोरआठरतिकरवसुजोर ॥ ३४ ॥ ठारयेकजेरागिरजांन ॥ तिमसिरउपरप्रभुकेमं
न च्यारिबोरकेवांबनागेह ॥ पंजेसवसुरहरषअछेह ॥ ३५ ॥ कुंडलग्लेलच्यारवेयांन ॥ अपरभवनाजिनतासिरजांन
रुचिवरदीपरुचिकगिरठांम ॥ चतंतरवेच्यारिसुधांम ॥ ३६ ॥ भवनच्यारिहसैठावनजोर ॥ चंद्रमध्यलोककीठौर ॥ स्व
नामंदिरकीअबसुनो ॥ आगमभेगनधरजाभनो ॥ ३७ ॥ प्रथमपंचवरननप्राकार ॥ च्यारिदिसामेगोपरद्वार ॥ मांन
सथंभमांनकेहार ॥ जिनबिंबाकितच्यारहधार ॥ ३८ ॥ याईसजलवाटिकाफूल ॥ आगेहंजतकोटअनकूलउपव
नचैतअरस्यजुतच्यार ॥ पंकतिधुजाहालतीपार ॥ ३९ ॥ कनकोटसुरद्रुमगिरतूप ॥ मंदिरपंकतिवीथिअनूप ॥ चहु
दिसकाठिककाप्राकार ॥ कोटकोटप्रतिगोपुरच्यार ॥ ४० ॥ जिनमेधूपघटाप्रतिसार ॥ निजमंदिरकेतीनदि
द्वार ॥ अंतकोटसहिद्वादससभा ॥ विचिमंडपमनिमांनकथंभा ॥ ४१ ॥ तदंतअठातरगंधकुटी ॥ पूरवमुष
वसुमंगलवटी ॥ बिंबअठोतराजिनमनहरा ॥ प्रातिहार्जैपदमासनधरा ॥ ४२ ॥ सिरपेकेससोहंतरहे ॥ मुषलहे
रमानंकुङ्किकहे ॥ धनुषपांचसैतनविसतार ॥ तिनपीठपेराजेसार ॥ ४३ ॥ जुदजुदेराजेजिनदेव ॥ सवंदद्रुमि
लिकरिहैसेव ॥ सोजोजनलांबेजिनगेहसुं ॥ गयेनसासोभअछेह ॥ ४४ ॥ चोडेजोजनजानपचास ॥ याप्रमां
नउत्तमआवास ॥ यातेआधोमध्यमथांन ॥ तातेआधाजघनिप्रमांन ॥ ४५ ॥ मांनुषोत्रवाहरिजिनधांम ॥ त
हांदेवहीकरेप्रनाम ॥ दीपदीपभीतरजिनगेह ॥ सुरविद्याधरवंदैतेह ॥ ४६ ॥ भोमिगोचरीपकुंचैनांहि ॥ पहु

चैरिधिधारीतिनमांहि। आदिनिधनस्वनादैसदा। औरभांतिहोतीनहिंकदा ४७ कहुंनृतिसुरनारीकरे कहुंअ
ष्टविधिअरचाधरे। कहुंवाजित्रवजेअतिघनां कहुंध्यांनधरेमुनिजना ४८ पूजकविविधिपुंन्यविस्तरे अ
सुभकर्मकौंततषिनहरे। आगमसुनिमिथ्यातमाभिले सुधातमसहजेहीमिले ४९ वास्तुष्यालसावरननकी
या करतेबुधजनहरष्याहीया। जास्पांचाहोजोविस्तारै तोत्रिलोकसारअवधार ५०॥ अथअधोलोक
दोहा॥ येकलाषअस्सीसहसजोजनमोटीजांनि मातनैचित्राजमीतीनभागजुतमांनि ४३ हैजोजनसोला
सहसषटाविभागतामांहि भवनभवनवासीसवैयेकअसुरकुलनाहि ४४ मधिलोकदधिदीपमे हैंभांसैंनरसव
जाने वैव्यंतरषटभागमेविनाअसुरकुलसात ४५ जोजनचौरासीसहसपंकभागमोटायतामैअसुरकुमारपु
निराक्षसकुलवहुभाय ४६ जोजनअसीहजारदलतीजावहुलविभाग जामैसोयहलानरककारत्रप्रभाकीजा
ग ४७ प्रथ्वीकीमोटायताजोजनसहस्रवतीस दूजीमेंहजानरकभावैंप्याहैजगदीस ४८ च्यारिसहसजो
जनघटततइतरोतरदलदार। छटीलोंपुनिसातवींजोजनआठहजार ४९ रत्नरजप्रतिभूमिहेनहनभूमिप्रति
मांनि। त्रसनाडीमैयात्तसवअधोअधोगतजांनि ५० नरकनरककेवीचपुनिसुगसुगकेमांहि। सूक्ष्मथा
वरजीवरावातवसेलोपांहि ५१ ॥ चौपई॥ सवलोकमैसमस्पजीव जैसेभरयाधटमेघीव जिहअध्यारंति
हषादरजानि। नाकैतंकाकरूवषानं ५२ दोहा॥ जंवुषेतरभरथसमकोसहदेससमान। प्यारअजोध्या

मानपुनिचक्रीमहालप्रमांन ५३॥ चौपई॥ षंधाअंडरअरआवासपुल्वीदेहवादरावास असंख्यातलोकासमषं
ध आगेअधिकअधिकसंमंध ५४ लोकअसंख्याताग़ुनमांन भीतरिभीतिरिअधिकेजांन षंधाथकीदेहलो
जीव याअनुक्रमतेवसेसदीव ५५॥ दोहा॥ येकसरीरानिगोदमेंयतेजीवयेमांन तैयेगेकालकेसिद्धतेकहेअनंत
प्रमांन ५६॥ उक्तंच॥ दोहा॥ येतैनासिद्धअनंतताघटैनरासिनिगोद जैसकेतेसारहेपद्धजिनवचनाविनोद
तथा:॥ जियसूक्षमआधारविनलोकतीनसबठांन केदेभेदनहिआसतनरकेनकोद्रष्टांन ५७ भोगाचतुरग
तिजायपुनिइतरनिगोदविधांनजायनहीनिकसेकठिननित्यनिगोदकुथांन ५८ वादरजातिनिगोधजी
व देहआठमेंनांहिसुदीव भूजलअनतेजपवणजिनदेव आहारकनारकसुरभेव ६२॥ अथषटद्रव्यानिका
गुनपरजायकथन॥ दोहा॥ विविधिचिंहजिंवस्तुकेसोगुनसंग्याजांन जहांपरिनमनवस्तुकासोपरजा
याविधांन ६४ गुनअविनासीसासतेविनासीकपरजाय येककालगुनसबमिलेमिलेनसबपरजाय
६५ अथगुनकथन मिलेऔरद्रव्यठौरजासोयेगुनसामांन मिलेनकाहूऔरसेसोविसेषगुनजांन ६६ अ
थसामांनिकगुननांम चौपई आसितवस्तदरबपरमेय भ्रतिविनभ्रतिसुनिभेय परदेसत्वअयेतनवां
नि चेतनअगुरलघुसठांन ६७ यनसामांनिगुननिमेंहोय येकद्रव्यमेंआठहिसोय अवविसेषगुन
कीसुनिवात जिनकेनांमसोलहेजात ६८ वीरजसुषदरसनज्ञानफुनिगपांन सपरसवरनगंधरसमोज्ञांन

गतिथितिवर्तनांजदनारूप॥ चेतनअवगाहनअनरूप॥ ६९॥ जियकेअरपुद्गलकेमांहि॥ अष्टगुनहोयअधिकइह्मांहि
वाकीधरमादिकद्रवि चारि॥ तीनतीनगुनजुतसवधारि॥ ७०॥ अथपरजायकथन॥ वस्तुपरिनमनगुनपरजाय
वस्ताकारद्रव्यपरजाय॥ दोयभेदपरजायसुभाय॥ सरधानैयोंसैसवजाय॥ ७१॥ अथशुद्धगुनपरजाय॥ अअवनादि
निवृद्धिअवधार॥ समैसमैअधिषटपरकार॥ जैसैरतनलहरिपरभाव॥ उपजोविनसैसहजसुभाय॥ ७२॥ पावटद्रव्य
सुगुनपरजाय॥ सुनिअशुद्धपुद्गलजियपाय॥ सपरसवरनगंधरसवैन॥ भांवांतरापीलैटिनजादैन॥ ७३॥ सोअ
सुद्धपुद्गलपरभाव॥ रागदोषजियअसुद्धसुभाव॥ अवसुनिकथनद्रव्यपरजाय॥ तासमांनजियआकृतिपाय
७४॥ सिद्धरूपैकछुयकहीन॥ असुद्धजीवगतिनगतिसमलीन॥ शुद्धपुद्गलतेएकप्रदेश॥ पुद्गलअशुद्धतना
सुनिभेस॥ ७५॥ द्वरणीकमहाकंधपरजांन॥ तीनलोकसमभाव्याख्यांत॥ सिसद्रव्यवंजनपरजाय॥ उतपातत्रय
तिनीनहिजाय॥ ७६॥ भेदअपेक्षादोसनसमै॥ तीनलोकसमधर्मअधर्म॥ येकप्रदेशअभरतिवांनिअविभागि
कालानजांनि॥ ७७॥ लोकअलोकप्रमांनअकास॥ याविधिपरनपरजेन्यास॥ फुनिसुनिद्रव्यनकानिरधार॥ जो
भाषाषटसुनंदविचार॥ ७८॥ अथषटद्रव्यानिपातिकादसभेदकथन॥ परिनामीजियमूरतिधांन॥ फुनिपरदेशरूपि
कसुथांन॥ किरियाजुतनितिकारनकरता॥ सनव्यापीइकक्षेत्रइवसता॥ ७९॥ दोहा॥ जियपुद्गलपरिनामजु
तविनपरनांमीधारि॥ जीवद्रव्यतोजीवहै॥ पांचअजीवनिहारि॥ ८०॥ पुद्गलमूरतिवंतलखि॥ पंचअमूरतिवान

पकपरदेशीकालहेमहूरिपरदेसीपांच ॥८१॥ धर्मअधर्मअकासइकद्रव्यपदारथहोय ॥ जीवअनंतानंतहितेनंतगुनाजड
सोय ॥८२॥ असंख्यातकालानादेसलहाप्रिवतजोय ॥ केवलसहितआकासयकपंचअकेलीहोय ॥८३॥ व्यापकोकिरि
याहितपिंगिनिजियजडकिरियादावनेनिश्चैमेनियमबजियजडपुद्गलअराव ॥८४॥ सवकारनहेजीवकेयकअ
कारनजीव ॥ पांचअकरताप्रानीयाकरताजीयसदीव ॥८५॥ नहिकरताकरताकहूंनिश्चैनयरकाव ॥ पांचलोकव्या
पीकहेसबव्यापीआकास ॥८६॥ थानअपक्षापेकटेभिन्नअपाधिमुभाव ॥ कहूं द्रव्यवरननभयागाथा
केपरभाव ॥८७॥ द्रव्यनकासरधाननहितजिनमतकेपरमांन ॥ जातिविसकारयतहूंसम्पकापांनविधांन ॥१॥
चोपही ॥ केष्टाकालानंसबमांहि ॥ भिनिअविभागीमिलतानांहि ॥ सवैतदीरघहेआकास ॥ अरुंदिसं
तविनानिश्चलवास ॥२॥ अनंतागुनकालानंमांहि ॥ याबिनअजीवगमनांहि ॥ यिकयोरहूजाअगुउदे
सोपरमांनेसमयप्रवहे ॥३॥ जेकालानंभिननहिहोय ॥ तोसमयाउतपतिनहिकोय ॥ असंख्यातअधर्मप
रदेस ॥ तासोथिरकालानवेस ॥४॥ होतमांसपाखदिनपलघरी ॥ निश्चेकालद्रव्यपनकरी ॥ थिरलहिंदे
नाअधर्मदर्वेफिरतेरहलेचंचलसवे ॥५॥ याप्रमानपांचूंद्रव्यवसे ॥ याबिनआधअधिकनधसेअसं
ख्यातपरदेसप्रमानगमननिमतपकधर्ममहांन ॥६॥ ताप्रमांनजियपुद्गलचलेसो ॥ धर्मद्रव्यपमजानप्रमले
धर्मद्रव्यगुनमनसहाय ॥ दूजाअधर्माथिरगुनदाय ॥७॥ अवकासयकआकासपिछांन ॥ पंचकसर्वोपेजीवसु-

जांन॥ कालद्रव्यानवजीरनकेरै॥ पंचअरूपीनिजरलयरै॥८॥ रूपीपरससंगंधरसवर्न॥ असेगुनकापुद्गलधर्न॥ अविभागी
परमांनूंसोय॥ म्हासकंधलोभिलिमिलिहोय॥९॥ जगांतबंधकीजांनदोय॥ केसूक्ष्मकेवादरहोय॥ सूक्ष्मइंद्री
गोचरनांहि॥ वादरपंद्रनिगोचरपांहि॥१०॥ वनेगलेफूटेफुनिमिले॥ पांनीपोंनभमिमेरूले॥ दलफलफूलहोय
केम्हे॥ चिवद्धिधानभनिपुद्गलकेरें॥११॥ धूमचांदनीतमउद्योत॥ सीतउष्णोन॥ सीतउद्धनधुनिपुद्गलहोत॥ चोदहरा
जूसीघहिजाय॥ मंदगमनसमयातोंपाय॥१२॥ परमांन्नंतमेपरदेश॥ मायनिपाहीतैदवेश॥ परमांनतेउपज्यातु
ला॥ यातेपाविकोरनतुला॥१३॥ अथकासवकदायकआकास॥ तासीमाधिहैसवकावास॥ असोगुनयाहीकेमांहि
द्रसकाजकोरकेरांहि॥१४॥ परमांनूंपरमांनूंमिलै॥ जहांजीवतेमांहीमिलै॥ सोसमांनपुद्गलपरजाय॥ निजस्व
नमोभिमिलिकैथाय॥१५॥ जहांसुजातविजातीमिलै॥ चेतनपुद्गलदोऊमिलै॥ सोअसमांनजातिपरजायसु
रमांनुषपशुनारकधाम॥१६॥ अनादिकालसंसारीजीव॥ तनमेमिलतारहतसदीव॥ निजअनुभवकरिनिज
पदलहे॥ सोतनतजिसिधपदकूंगहे॥१७॥ ज्ञांनरहितजडपंचअजीव॥ निजपरउपाताचेतनजीव॥ स्वसंवेद
नप्रतायिलखाहिंइंद्रीद्वारेगोचरनाहि॥१८॥ जीवद्रव्यअनंतीरास॥ अनंतगुनांतिसपुद्गलतास॥ एकएक
द्रवितीनपिछांन॥ धर्मअधर्मआकासमहांनअदमेव॥२०॥ इतिजिदिअजीववर्ननं॥ अथआश्रवतत्ववर्न
न॥ लाषिन॥ दोहा॥ कायवचनमनशुभअशुभवरतनजोउपाय॥ आगमनूंतनकर्ममआश्रवतनाशुभाव॥८

अथपंद्रैजोग ॥ सांचअसतीअनुभैडभैमनवचवसुविधिजांनी ॥ अउदारिककुनिविक्रीयाफुनिआहारकआंनि
ऽऽ ॥ प्रथकतीनिफुनिमिश्रउनकारमांनप्रीतिसाल ॥ पद्रैपंचदहउजोग तैकर्मआश्रवैनआप्त ॥ ८० ॥ अथवारअविरताएं
द्रीपंचमनसहितविनसथरषटमांनि ॥ पांचथावरतिरसवधअविरतद्वादसजांना ॥ ८१ ॥ अथपंचमिथ्यात ॥
चोपही ॥ अनंतानअनथाप्याख्यांन ॥ परत्याख्यांनीसंजुलजांन ॥ क्रोधमांनमायालोभांन ॥ च्यारिच्यारिचहुंसो
लैठांन ॥ ८२ ॥ हांसअरतिरतिसोकभयांन ॥ कितपुरषतियस्त्रीविगिलांन ॥ पडितनिनंपचीसकषाय ॥ इनमाधिनि
तेआश्रवठाय ॥ ८३ ॥ आंनिजोगअविरतमिथ्यात ॥ वहुरिकषायभेदविख्यात ॥ पहलैरवोरैपांचपचीस ॥ आश्रव
तावनगिनिधीस ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ फलजगतकोआश्रवापेहरआश्रवामूलभेदमलमिथ्यादेकरियाकुंनि
रमल ॥ ८६ ॥ कसमकयानातैसकलपरतिसहजसुभाय ॥ आकैआश्रवतनतिवरमंदकषाय ॥ ८७ ॥ अथकं
आश्रवयोतरी ॥ नाकंदंवंदनकहंशुद्धकथनकाय ॥ जोआश्रवतेरहितहैआपआपमेंथाय ॥ १ ॥ आश्रवविनसि
वसिद्धहैआश्रवजहसंसार ॥ ताकेजाजपाकथापकाकारनदोयप्रकार ॥ २ ॥ द्रव्याश्रवतोवर्गनाकमरूपह्वैजायभा
वाश्रवचेतननारागादोषकभाय ॥ ३ ॥ पुन्याश्रवशुभजोगतैमंदकषायाहोय ॥ पापाश्रवमिथ्यातमैमालिन
भावनेजोय ॥ ४ ॥ ईर्यापथहुजोगतैप्रकतिप्रदेससमाज ॥ समैमांहिवंधैखरैककुनहिकारककाज ॥ ५ ॥ सांपरायक
षायतैहोवैथितिअनुभाग ॥ तातैंयाकेकथनकूंकहूंधारित्रअनुराग ॥ ६ ॥ भविहितउमांखवाम्मिमुनिवरनेंक्र ॥

अवभाव ॥ नाटीकीभाषा ॥ एचंठीकाकेपरभाव ॥ ७ ॥ मूलफलैंनेंकी ॥ इंद्रियकषायअनाक्रेयापंचचचु: पंचपंचविंस
तिसंख्याः पर्वस्यभेदा ॥ २ ॥ भाषा ॥ चौपही ॥ इंद्रीपंचकषायेच्यारि अविरतपांचप्रकार निद्रारिपांचवीसाकिरि
याकेभेद ॥ यात्राश्रवकाकरोनिषेद ॥ दोहा ॥ इंद्रीसपरसजीभफुनिनाकनैनअरकांन ॥ विषेपरसरसवासनावर्नस
अपहंचांन ॥ यि ॥ मनविषयनिकीलुब्धता धारेकरेकषाय ॥ च्यारिभेदतिनकेसुनकोधलोभमदमाय ॥ १० ॥ अविरति
पांचप्रकारकासवेपापकीषांन ॥ हिंसाअंनततसकरीअमैथुनपरिगहषांन ॥ ११ ॥ अशुभअशुभकषायदेअशुभतें
अशुभदेजात ॥ वरद्धैसायसम्यक्तकेकैरैकानिष्टमिथ्यात ॥ १२ ॥ अनंतानबंधीउदेजबलंगबलंजाय ॥ वरतकरेवाना
करेजातमिथ्यातनकोय ॥ १३ ॥ अनंतानवंधीविनाउदेअपरत्ताख्यांन ॥ नाहिवनेहेंअनुव्रतीक्रोदेदर्शनज्ञान ॥ १४ ॥
अनंतानवंधीरहितरहितअप्रत्याख्यांनयरत्याख्यानीकेउदेहहोहें ॥ अनुव्रतवांन ॥ १५ ॥ उदेसंज्वलराहेयमुनितीन
कषायमुजाय ॥ जिथाख्यातसंजिमनहैमहाव्रतीद्विजाय ॥ १६ ॥ कृतकारितअनुमोदजुतमनवचतनपरवीन ॥ माया
मिथ्यानिदांनविनहैउदासअतलीन ॥ १७ ॥ येतनमागअनुव्रनविषेपंचपापदुषदाय ॥ त्यागेसर्वमहाव्रतीबीतराग
मुनिराय ॥ १८ ॥ इंद्रीच्यारिकषायतेगुनेंहोतहैंबीस ॥ क्रोधकपटमदलोभतेअरहीकहेजगदीस ॥ १९ ॥ थावरकानिष्ट
मधिभेदतैहेदोसेचालीस ॥ सोपचीसकिरियानप्रतिकहेसहसषटईस ॥ २० ॥ अथमूलाकिरियापांचतिनके
नाम ॥ दोहा ॥ सांपरायअरवाधिकातीजीदुकियाजांन ॥ अनकोषिचोथीकेयाआनिहतिपंचापिछांनि ॥ २१ ॥ अ

दिष्टसमिकपरिवर्द्धनीमिथ्यावर्द्धनीजांन अतिक्रमसंजिमवर्द्धनीप्रमादवर्द्धनीआंन २२ ईरज्यापथजुतपांचपेसां
परायकेभेद सोप्रत्येकवर्ननकरूंसंसैभमउछेद २३ पूजाअदानादिकसवैकरैजिनागमजोयपोषैनांहिमिथ्या
तकूंसमिकवर्द्धनीसोय २४ करैक्रियाअैसीअधमजातैवढैमिथ्यात धर्मविरुधभाषैवचनमिथ्यावर्द्धनीजान
२५ धर्मातमपदध्यापिकैवलैअजितनाच्यारक्रियाअसंजिमवर्द्धनीसिपरकरैविगार २६ त्यागमांहिछैंभोगाहवि
आस्रजुतआचार ठौसआधिकचलनादिकोप्रमादवर्द्धनीधार २७ अहंदलनचलनादिमैहोयविवेकविचार
सोईईरज्यापथाक्रियातातैहोंतसुधार २८ परदोषिकअरकायकीअधकरनीपरताप प्रांणाघातकीजुतक्रियाभे
दव्यापिकाथाय २९ करतदंनउपकरनकोधानुकलहूंजाय परदोषकक्रियायहैईरषासहजसुभाय ३० का
यक्रियाछैजातकीकायचेष्टाहोय तातैआयापारकाभाखाबुराहीजोय ३१ हिंसाकेउपकरनकोधारैरहलस
दीयंच अघकरनीकिरियाप्रकीदुखपावैसवजीव ३२ कायचेष्टासुखवचनकरतसोकअैकार सोकिरियापरताप
कीपंडितजनपरहार ३३ दौजालनपृथ्वीखननतालपालदैफार सस्त्रघाक्षेसहजदीप्राणाघातकीधार ३४
पांचहुक्रियाजांनियोदईनपरसपरत्याप संमंतानयातनिकहुस्त्रिनभोगिदृष्ठदाय ३५ दुरगमअउपवनघनसदा
न न्यविरलादिसरूप निरषनकीवांछाकरनक्रियाद्रसनअघरूप ३६ कोमलपटपल्लवपुसपवाल्नकबा
लाकाम सपरसकोअभिलाषजिहक्रियापरसनागाय ३७ किरिमासोयात्पायकीकैसेधातकीवात हिंसा

केउपकर्नबहुरखेअपरखजात ३८ मानुषतिरज्ञ्चकाजिंहांसज्यात्रासनगोल्ल संमंतानयातनितहां ओरेमतरमेल्ल ३९
हारनिहारलउपकरनसज्यात्रमनत्रांन याप्रेजोगिअजोगिपलअनाभोगिकाजांन ४० इतिदु क्रियाके
भेद भनिसुस्तनदैसर्गिकाजातिपविदारनसंच आगपालांधिअनादराअनाकांक्षिकापंच ४१ सोकिरे
कोपनकेरेअनुचितपायसमाज सोनिजकारसहजैवरेक्रियासुक्षसताकाज ४२ सोव्याविनाकनायलेअनव
चकायउपाय सोनिसर्गाकिरियाकहीवीतरागमुनिराय ४३ औरांगनधरकायारकांक्षंन्पत्लोकामेजाय चा
यतकरचैकोंकहीक्रियाविदारनताय ४४ आगामृतेअपुठाकेरपरहीतिसरधापपांन जिनाग्पालंचनाक्रिया
अनंतकालदुषदांन ४५ आग्यमोक्षाविधिकरनमेंअनादरनांहीहोय ताकोंक्रियानिरादराभाषीपंडितलोय
४६ इतिअनाकांक्षीक्रिया परारंभपरग्राहनीमायावदुरिमिथ्यात क्रियाअप्रत्याख्यानजुतअनिवृतिजांनि
विख्यात ४७ आरंभकीसिख्याकिहैंसहजैंवनतमहंत परारंभक्रियापहेहेनिरजगगातिदांन ५० छंदीस
कलाईकेहेपरजोविविधिनुरेच यानिगोदेदायकाक्रियामिथ्यादरसनटेव ५१ तजेनकहीकुंलिकडुसदाभोग
भोगताजाय क्रियाअपरत्याख्यानकीगतिनारकदुखदाय ५२ इतियचीसाक्रियासंपूर्ण इंद्रीभोगानका
नअरपांचैपापप्रधांन क्रोधलोभमदमांनजुजजांनअजानापिछांन ५३ तीवरमंदसुभावतेंजेसावीरजपात
जीवअजीवअधारजवैतसाअछकआत ५४ जीवअजीवअधारविनपेककहितेनहिहोय तोतेजीवअध

रकाभेदकहतहंजोय ५५ संरंभसमारंभअरुनितिजोआरंभताप्रकृतकारितअनुमोदजुतमनवचकायलगाय ५६ सातवी
सयेंद्रक्षायेतिनप्रतिच्यारिकाषाय औरइकसोआठहैजियहिंसादुखदाय ५७ इतिजीवाधिकार सुनिअजी
वअधारकानिरवर्तनकनिखेय फुनिसंजोगनिसर्गताभेदच्यारिसंक्षेप ५८ निरवर्तनादोयविधिमूलउत्त
रगुनजांन कायवचनमनसासकानिपजनमूलपिछान ५९ उत्तरगुननिरवर्तनाहूजीपाविधिजांनिका
ठपुस्तचित्रांमकानिपजावनयहच्यांन ६० हैनिक्षेपस्यापिवौतोकिच्यारिविधांन विनदेखेधरनयापियो
अप्रतिवेक्षितजांन ६१ अनआदरतेपछिलेकरकुथापिपेटोमदु:प्रभेदनिक्षेपकातलहीपावेनाम ६२ सी
घ्रवस्तुकोपठकिवोसहसाजानंसोय जहांतहांधीथापिवोअनाभोगतेहोय ६३ जांनिसंजोगाभेदनाय
कोताकेदोयविधांन प्रथमभिलावेउपकरनदूजेजोजलयांन ६४ निसर्गाकाहियेपरिवर्तनकायवचनमना
न याविधितेवर्ननभयाकरीआश्रवासामांन ६५ मुखमाषिपरखेंकातिबंधकोजोजोआश्रवहोत सोसतर
अनुसारतेवरनोंबुद्धिनिकेत ६६ अयग्यानावरनीकेआश्रवहेत प्रांनीदूषकेनेठेमातंतेकरविचार
अविनिनिंदाइरखाअरसमरउनमाद ६७ केवेलमाल्क्रजुतिनकेवीतत्वसाधापक्रोअर समेचाकिआवैक
घननिपठअश्रावकोठौर ६८ विघनकरेपठतेनिरखिनाहककदूषनदेय मतिमांकोपाठिनासकेपुस्त
कादिहरिलेय ६९ ग्यांनापांनधारकथकीअसेदूषनल्यात तवग्यानावरनादिकाकर्मआश्रवआत ७० श्र

प्रदर्शनावरनीका आश्रव होत लाक्षिकलाक्षिकहारके ऐसे औगुन कीन जे वेद दर्शनावर्नेका कर्म आश्रवा लीन
७१ भंगभोगादि दीक के ज्ञान दैत सुवाय वाधा अनिके करै दर्शनावर्न लगाय ७२ अथ असातावेदनीका
आश्रव होत कैदैतन अरदल मनै रेके बाधि देमार सुधा त्रषा आकुल करै धैरे पीडि अति भार ७३ तंन लाषन
करि किरमकु रीति रितखार फासी जाली पीजरा छोटे बिन न अपार ७४ परनिंदा पर संसन निजगुन गुन तीअरव
नहाइ भूमिखनन सागरमथन क्रूर सुभाव अथाह ७५ सोक रूदन आताप दुष प्रान वियोग प्रकार निजके
के परके किये आत असाता भार ७६ अथ सातावेदनीका आश्रव होत जिनेक रे पूजन करे निन वर मुनि वर
जोर काज क्रिया करे सीके परसंसा हि होय ७७ व्रतधारक पुनि सब जीवनिको दया करै दै दान धीर्ज कजीन
क्षिमा निरलोभ बुधि साता आश्रव आन ७८ अथ दर्शनमोहका आश्रव हेत जिनिंदा धिक जिनवोंकेवल दे
व सुधादिका लीनि अवरनुगुरको वरनै मुनि परौ तेहीन ७९ दयाधर्म वरतत्व कौ दूषन ज्ञुत अविनीत आश्र
व दर्शनमोहका करे मिथ्यात समेत ८० उदैपाय कषाय का तीव्र तं भाव वृद्धि न आय तव दर्शन चारितमोहका कर्म
आश्रवाय ८१ हांसि करति रति सोक भैअर गिलानि के भाव करे आप करपर के तव ते सादीपाय ८२
तके निरंतर छिद्र परक्ष्टे ठीठलबार कामुकतल भग नजे स्त्रीवेद अभिकार ८३ संतोषी निजनारिको धारक
मंद कषाय अरुनपारंभ विवेकजुत वेद पुरुषत पाय ८४ तीव्र कषाई दीसकी विभचारी वस्त हीन गुप्त

गेहेंदकयेनेवेदनपुंसककलीन इतिमोहनी ॥ अथआयुकर्मआश्रवहेत ॥ कलुसितक्रूरकठोरचित्तअतिआरंभकीबा
य ॥ सातविसनरतहिंसाकीयावतहैनरकाय ॥ ७६ ॥ मुषकोमलमीठेवचनवरमैकपटअपार ॥ तेतिरजआगतिआ
युकोंपापपकिरैसमार ॥ ७७ ॥ अल्पारंभसंतोषजुतराषैसरलसुभाय ॥ मंदकषायमार्द्दवलचितधारैमानुषका
य ॥ ७८ ॥ सरधांनीजिनभक्तजुतमुनिश्रावकव्रतधारै ॥ ओपकामनूततपयकीदेवआयुनिरधार ॥ ७९ ॥ तववरतसील
तैरहितजेतलहेचतुरगतिआयु ॥ सीलसहितजेव्रतधरैतेअनुक्रमासिवजाय ॥ ८० ॥ नामकर्महेत ॥ जोगवक्रता
कोकरैविसंवादनताय ॥ अशुभनांमआश्रवनवनैभाविनशुद्धसुभथाय ॥ ८१ ॥ सोडनदससविसुद्धतासोले
कारनभावतीर्थंकरप्रकतिबनातवहीआश्रवपाय ॥ ८२ ॥ अथगोत्रकर्महेत ॥ परसंसापरकीकरैआपनीनिंदागाय
गुनप्रगटैआगुनढकैउचगोत्रतपपाय ॥ ८३ ॥ परनिंदाओगनवकैआपनांसुतसवषान ॥ नीचगोतकाआश्रवाय
नभावभितेजांनि ॥ ८४ ॥ अथअंतरायकर्महेत ॥ दानकरतदेनीनिराछिवरजेप्रगठतभरम [illegible] किरयनबुद्धिदैदे
यसकैनाहिभव ॥ ८५ ॥ प्राप्तिहोतिजांनिकेविघनकरैजाकोय ॥ लाभमांहिअंतरायतासोंलामातैतहैय ॥ ८६ ॥ यांव
इंद्रयाभोगमेंजोकोकरतविगास ॥ भोगविषैअंतरायरतातीकेनिरधार ॥ ८७ ॥ हेगभषनतियवसनआस
कौरेजेअंतअंतरायउपभोगाकातिनजीवनिकेजांन ॥ ८८ ॥ परतकरमवीरजकरतअशुभदेतसुभप्रेह ॥ सोकायर
हैदीनजनदुरलभभरिहैपेट ॥ ८९ ॥ मांनेयहभवनांगिनेतातिहरहतसुकहर ॥ तिन्हकेआश्रवहेतहैनरकनिगोदस

मंद्द्र ५०० छिनकमतीबुधिथिरनहीं रैपापैतैनां हि ॥ अथत्तव्याश्रयपरवेषनकारिनरकानिगोदैंघाजाय ॥ १ ॥ कर्त्ताईश्वर
मांनिकैरहैभक्तिमैमगलि ॥ नरकनिगोदघामउपजोधरैविरागनमल ॥ २ ॥ एकअंतंनकोमांनिकैमलैनंनांरूप ॥ तेपा
पीनिनश्रायकौधारतहैभवकूप ॥ ३ ॥ भोलेजनकूंलठिहोहिंसाधर्मबताय ॥ तेमंदंतसेवकसहितनरकनिगोदघाज
य ॥ ४ ॥ अनेकांतनैछोडिकैएकांतकोपाय ॥ नरकनिगोदघाजायजोक्रूरमिथ्यातीहोय ॥ ५ ॥ येकथाएकनेकरोअन
तजनमकोपाय ॥ होयनयेकामिथ्यातसमयोभाख्योजिनराय ॥ ६ ॥ मंदकषायकनायकैकोटिमेरिदेदांन ॥ तोऊदेय
नरंचसमकितिनसंमपतपरमांन ॥ ७ ॥ यातैतुमसोचोनतीबुद्धजानकैरनिहोरि ॥ जैसेंतैसेधारियोसंम्यकसरधाडोरि
८ ॥ इति आश्रवअष्टोतरी ॥ ३ ॥ अथबंधतत्वकथन ॥ देकषायजुतआतमातबआकरेंकर्मंस ॥ कर्मबर्गनाकोरहैव
येबंधकोवंस ॥ ९ ॥ मिलैवारिमैलोनज्योंविनअंतरहूएक ॥ त्योंआतमपरदेसमैंबंधैकर्मअनेक ॥ १० ॥ रहैडोफिटक
डीलोदविनरंगमजीठनहोय ॥ त्योंकषायविनआतमाकर्मबंधनहिंकोय ॥ ११ ॥ कर्मबर्गनोपर्वकोकारमांन
सरीर ॥ आतमैनबैनवंधैपिछलीफिरेअधीर ॥ १२ ॥ अनतबर्गनिंकर्मकीचेतनयेकप्रदेस ॥ येकखेत्रअवगाहहै
कैरेबंधपरवेस ॥ १३ ॥ बंधाहिंसंसारहैबंधविनरजातमोख ॥ च्यारिभेदताबंधकेभाषेजिननिरदोष ॥ १४ ॥ प्रकतिबंध
परनांमविधिथितिमर्यादप्रवेस ॥ कर्मसुरसअनुभागहैकरमअंसपरदेस ॥ १५ ॥ इतिप्रकतिबंधदृष्टांत ॥
चौपई ॥ ज्ञानावरनीजोपटकूर ॥ दर्सनावरनीजोंप्रतिहार ॥ वेदनीअसिताल्हिप्तअसिधार ॥ मोहनीमदिरामदिरा

विचार ॥ १३ ॥ लाठिबोदास्योंरंग तिकाल ॥ ओतरज्ञानं परिजप्याल ॥ चित्रकारत्योंनामसुजांन ॥ अंतराय भंड्यारीमांन ॥ १४ ॥ म
लप्रकृतिमैं अंतरप्रकृतिके तीनकीआनानं ॥ सोरठा ॥ ज्ञानावरनीपंच ॥ नौविधिदर्शनावरन है ॥ दोयवेदनीसांन ॥ अठावी
सोमोहकी ॥ १५ ॥ जांनिआयुकीच्यार ॥ भेदनांमकेत्रानवै ॥ गोतदोय सुधार ॥ अंतराय विधिपांचका ॥ १६ ॥ मूलप्रक
तिहैआठ ॥ ताहीकीउत्तरप्रकृति ॥ ताकासुनिमकठाठ ॥ दोयघाटिहैआठसे ॥ १७ ॥ हैआठादनपांन ॥ ज्ञानावरनीपां
चये ॥ मतिश्रुतिअवधिपिछान ॥ मनपर्जकेवलभेदं ॥ १८ ॥ दरसनआवरनयांनि ॥ दर्सनावरनीभेदनौं ॥ चक्षुअच
सुविधांन ॥ चक्षुरिअवधिकेवलागिनो ॥ १९ ॥ निद्राप्रचलादोय ॥ निद्रानिद्राभेदयक ॥ प्रचलाप्रचलाजोय ॥ स्त्यांन
ग्रद्धनिद्रामहा ॥ २० ॥ द्वैउपयोगसुजांन ॥ द्वैचेतनकीचेतनां ॥ दरसनलाखिसमान ॥ ज्ञानविसेसाविलोकवो ॥ २१ ॥
जांनिवेदनीदोय ॥ दुषअसातसातासुषद ॥ भेदमोहनीदोय ॥ अष्टावीसप्रकारके ॥ २२ ॥ दरसमोहनीजातते
नभेदमिथ्यातकासमकितप्रकृतिमिथ्यात ॥ समैमिथ्यातमिथ्यातदें ॥ २३ ॥ अनंतानुकीच्यार ॥ च्यारअप्रत्या
ख्यांनकीपरत्याख्यानीच्यार ॥ च्यारिप्रकृतिसंज्वलनकी ॥ २४ ॥ क्रोधलोभमदमांन ॥ येसोलैकषनौंसुनो ॥ तीनं
वेदगिलांन ॥ हांसिअरतिरतिसोकभै ॥ २५ ॥ भेदआपकेच्यार ॥ नरकनरकतिरजगसुरा ॥ वरनौंनामविधां
न ॥ प्रकृतितासकीआनवै ॥ २६ ॥ पंचसठिपिंडधरीर ॥ अष्टाविसअपिंदकीलनाथिग्यानिजातसरीर ॥ अंगोपं
गोबंधना ॥ २७ ॥ संघातासंस्थांन ॥ संघनसपरसरसवरन ॥ गंधपरवीआनं ॥ चालसहितपेसठिवनैं ॥ २८ ॥ च्या

मंद॥५००॥ छिनकमतीबुधिथिरनहीजैरेपापतेनाहि॥ अवतत्वआश्रवपरविचनकारिनरकानिगोदेघाजाय॥१॥ करतादईस्वर
मानिकेरहैभक्तिमैभ्रात॥ नरकनिगोधामउपजोधरैविरागनमल॥२॥ एककरैतैलकोमानिकेभलेनंनाकूप॥ तेपा
पीनिजआयकोयारतेहैभवकूप॥३॥ भोलेजनकूलठिलोहिंसाधर्मबताय॥ तेमहंतसेवकसहितनरकानिगोधाज
य॥४॥ अनेकांतनेकोगहेकंगहैयकनेकाय॥ नरकनिगोधाजायजोक्रूरमिथ्यातीहोय॥५॥ येकवायएकौछकरोअन
तंजनमकोपाय॥ होयनयेकामिथ्यातसमयोभाख्योजिनआय॥६॥ मंदकषायचनायकेकोटिमेरिदेदान॥ तोऊहाय
नरंचसमकितिनसंम्पकपरमान॥७॥ यातेतुमसोचीनतीबुधजनकरैनिहोरि॥ जैसेतैसेधारियोसंम्पकसरधादोरि
८॥ इतिआश्रवअष्टोत्तरी॥ अथबंधतत्वकथन॥ दैकषायजुतआतमातवआकरषैकंध॥ कर्मवर्गनाकोउदैव
धैबंधकोवंस॥९॥ मिलैवारिमिसलोनज्यौविनअंतरदुयेक॥ त्योंआतमपरदेसमेंबंधैकर्मअनेक॥१०॥ हरैडफिटक
डीलोधविनरंगप्रतीतिनहोय॥ त्योंकषायविनआतमाकर्मबंधनहिकोय॥११॥ कर्मवर्गनापवेकोकारमान
सरीर॥ आतमैनवेतनबंधोपिकलीकेरक्षधीर॥१२॥ अनंतवर्गनापिंडकर्मकीन्वेतनपकप्रदेस॥ येकसेत्रअवगाहिहै
कैबंधयरदैस॥१३॥ बंधादंसंसारहैबंधविवरजतमोष॥ च्यारिभेदताबंधकेभाषेजिननिरदोष॥१४॥ प्रकृतिबंध
परनामविधिथितिमर्यादप्रवेस॥ कर्मसुरसअनुभागहैकरमअंसपरदेस॥१५॥ इतिप्रकृतिबंधदृष्टांत॥
चौपई॥ ज्ञानावरनीजोपटहार॥ दर्सनावरनीजंपाप्रतिहार॥ वेदनीजसितालिप्तअसिधार॥ मोहनीमहलमदिराअ

सागरहेतीसकीजांनकोडाकोडि ॥४३॥ सत्तरिकोडाकोडिथितिसागरमोहप्रमांन ॥ सपारकोडाकोडिमित वीसकान
पहचांनि ॥४४॥ नामगोत्रदोकर्मकीथितिअवसुनिआपविधांन ॥ तिथिसागरतेतीसयहभाषीश्रीभगवांन ॥४५॥ चो
पही ॥ जिघनिसाथितिकासुनोप्रमांन ॥ द्वादसमहूरतवेदनिमांन ॥ नांमगोत्रमहूरतअसुजांन ॥ अंतमहूरतसेस
आंन ॥४६॥ अथअनुभागकथन ॥ सुनिअनुभागतनानिरधार ॥ रससुअसुभभ्यानपरकार ॥ गुडअरषांड
सितामृतपांन ॥ कांजीनीमकटुकविषजांन ॥४७॥ अथप्रदेसबंधदोहा ॥ पुदगलबंधप्रदेशतेतनतनकर्मप्रदेसये
कर्मअमिलजायवोजांनबंधप्रवेस ॥४८॥ इतिबंधतत्वनिर्देस ॥४॥ अथसंवरतत्वकथन ॥ कासनआश्रवकेबंधका
जेमभावअरुद्रव्यतिनभावनिकात्यागिवोसंवरजानिसुजांन ॥४९॥ इंद्रीमनकूरोकिकैतजेमिथ्यातअसार ॥ सोसं
वरदोभेदहैश्रावकमुनिआचार ॥५०॥ द्वादसव्रतकूंआदिलेग्यारहप्रतिमाधार ॥ गुप्तत्रयदसधर्मधरचारि
तसुमुनिकिवार ॥५१॥ अनुप्रेक्षाचिंतवनसादेतसहेपरीसहभार ॥ जिनमतकाश्रावकधरमसुरासिवसुषदाता
र ॥५२॥ इतिसंवरतत्वनिर्देस ॥५॥ अथनिरजरातत्वकथन ॥ च्यारिभेदकेबंधकरिजेसत्तामेंकाय ॥ तिनका
मैनिकानिरूरनभेदसोयतेहोय ॥५३॥ रसविपाकभाजैफैरैनिजअपरज्यादसतांन ॥ सोसुविपाकीनिरजरासहज
सवनिकेजांन ॥५४॥ देअजाणिउदीरकरिकरितवलदेयाखिराय ॥ याअविपाकीनिरजराकारनसिद्धउपाय ॥५५॥
डारत्तउपापफलपकिरहेसोसुविपाकीजांन ॥ पालरगायपकायवोसोअविपाकीवांनि ॥५६॥ इतिनिरजरात

न्वनिर्देस ॥ ८६ ॥ अथ मोक्षतत्व ॥ सर्वकर्मके बंध सब कीये ध्वंस तैं नास ॥ आगुरलघुगुन आतमा लोकसिखर परवास ॥ ८७ ॥ इ-
ति निर्जरा सहित सात तत्व नाम निर्देश प्रभाव कथन ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ सात तत्व के नाम कथन कीया सो सरधा-
य ॥ कर्हे यानिषेय विधान न्यो विसेस ह्वै ज्ञांनपन ॥ ८८ ॥ अथ यानिक्षेपनिका नाम ॥ दोहा ॥ नाम थापना द्रव्य पुनि
भाव निभाव निक्षेप प्रकार ॥ यन तैं तत्व विचार तैं मिटै अतत्व विचार ॥ ८९ ॥ अथ यानिक्षेपनाम ॥ सारथीक गुन ह्वै न
ही वस्तु अतद्गुन सोय ॥ जिहृ प्रसस्त संज्ञा कहत नंम्र निक्षेप जोय ॥ ९० ॥ अथ रहित जो वोलिये विविध वस्तु बहु नाम
कहत जगत नरसिंह सब हास्टि के काम ॥ ९१ ॥ अथ थापना निक्षेप ॥ होत थापना दोय विधि निराकार साकार ॥ धात
पाषर मांटी चित्र कूकाट विविध विधि धार ॥ ९२ ॥ जैसा जाका भाव गुन तैसा ही आकार ॥ सो थे ह्वै उरद्दी थापना तै थ्या-
पनां सार ॥ ९३ ॥ चेतन मै चेतन तनी थापना कीयो मिथ्यात ॥ होत अचेतन थापना चेतन की विख्यात ॥ ९४ ॥ वस्तु विषै ही
वस्तु की करै थापना टीक ॥ आरोपनां अवस्तु का सब ही तैरे अलीक ॥ ९५ ॥ मन वचन मै थापिये भाव होय तल्लीन ॥ निरा-
कार साकार मै पापपुन्य ताकीन ॥ ९६ ॥ अथ द्रव्यनिक्षेप ॥ परजै भूत भवष्य की जो ताग्रि द्रव्य सो जांनि ॥ नोआगम आग-
म द्दुविधि जा के भेद पिछांनि ॥ ९७ ॥ अथ नोआगम भेद ॥ नोआगम द्रव्य तीन विधि ग्यायक प्रथम जांनि ॥ भावी द्दुजा-
नीस्वा तद्व्यतरिक्त पिछांन ॥ ९८ ॥ अथ ग्यायक नोआगम द्रव्य ॥ जो सरीर त्रिकाल गत ग्यायक होय सुजांन ॥ ग्यायक
नोआगम द्रव्य ता हि कहि आगमवांन ॥ ९९ ॥ अथ नोआगम भावी ॥ विद्यमांन जिय सा सते अपने सहज सुभा-

य ॥ गुनसामांनविचारतैभायीजिनहिपाप ॥ ७० ॥ मांनतथभवसनमुखहुवेप्राप्तिअंतरमैंजीव ॥ नोआगमभावीद्रवियै
विसेषयनलीव ॥ ७१ ॥ अथनोआगमकातद्व्यतिरिक्तभेद ॥ जीवरहितसरीरसोतद्व्यतिरिक्तपिछांनि ॥ इक
नोकर्मसरीरफुनिआठकर्ममयजांनि ॥ ७२ ॥ औदारिकफुनिवैक्रियाआहारकतैजसांन ॥ कटपरउपायतकामारु
नसोनोकर्मविधांन ॥ ७३ ॥ इतिनोआगमद्रव्यनिक्षेप ॥ अथदूजाआगमद्रव्यनिक्षेप ॥ जांनैप्राभृतकर्मकाअर्थ
वाप्राभृतजीव ॥ विनउपयोगअकाजिमयआगमद्रव्यसुजीव ॥ ७४ ॥ इतिद्रव्यनिक्षेपा ॥ अथभावनिक्षेपा ॥ वरत
मांनपरजायजुतभावनिक्षेपाहोय ॥ आगमनोआगमसहिततेदुजानंहोय ॥ ७५ ॥ आप्रभृतमधारनसहितअ
वनकर्मपिछांन ॥ तत्रैसेउपयोगसोआगमभावबखांन ॥ ७६ ॥ कर्मागामजानतवहुरिकर्मउदैफललेवाव ॥ जोभोग
तासोंजीनियोगजियनोआगमभाव ॥ ७७ ॥ जीवनिक्षेपाच्यारिविधिकहुपकत्यांवउनमांन ॥ तैसैसववहीवस्तुप्रति
लग्यालेहुप्रतिवांन ॥ ७८ ॥ चोपही ॥ द्वितथापनाविनांननाम ॥ नामनिखेपामैयकनाम ॥ द्रव्यविनाजुभावनहिहो
य द्रव्यसाहितोद्रव्यहीजोय ॥ दोहा ॥ सबैनिखेपासमकितकुंगजपैकहूंत्यानाय ॥ त्यांहीसकलपदार्थप्रतिपंडितले
हुलगाय ॥ ८० ॥ गुनकरयाआकारत्याहिनहिपरजायनजान ॥ नामनिखेपागजतनोहाथीरामविख्यात ॥ ८१ ॥ चित्र
काठपाखांनमदहत्वतनांवस्त ॥ तावूंहाथीमहंनेनथापनकरीप्रसस्त ॥ ८२ ॥ जोआगामीजोपसोद्रव्यनिखेपा
मांनि ॥ आगमनोआगमदुविधितांकेमेदपिछांनि ॥ ८३ ॥ सोरठा ॥ गजआगामकाजांन ॥ वर्तमांनउपयोगविनसे

सापुरसमहांन ॥ गजकोआगमद्रव्यसो ४ दोहा ॥ गजपरिषकसंबंधकोनेआगमकोजांन ॥ आगमनोआगमदुवि-
धितकेभेदपिछांनि ॥ ४ ॥ सोरठा ॥ गजआगमकाजांनवर्तमांनउपयोगबिन ॥ ऐसापुरससुजांन ॥ गजकोआगम
द्रव्यसो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ गजपरिषकसंबंधकोनेआगमद्रविजोयउपायकपुनिभावीविदुप्रितद्व्यतिरिक्तीहोय ६ नो
आगमउपायकदरविरेकरियरीरधिककायभतभविथितवरततातीनभेदमुनिगाय ॥ ७ ॥ वर्तमानतनकालतत
नमनपुकतुंजांनिअतीतआयुअंतलौउपाततनजांनिअनागतमीत ॥ ८ ॥ उपातरहितततनमनपुकोंतीनभेदकहिजां
न ॥ सुतच्यावनअरतिक्तविधितनकातजनविधांन ॥ ९ ॥ सुतेमरतसोच्युतकह्याच्यावितकदलीघात ॥ तिक्तसन्यास
नधरनकीवरनंतीनजांन ॥ १० ॥ तजिअहारविधिच्यारकाइंठआसनयकथांन ॥ करनकरावनतननजतनभुक्त
प्रतउपाजांनि ॥ ११ ॥ परतेरहलकरानननहिंनिजदेगनिकरलोत ॥ प्रायोगमनपथांनसमअचलजोगधरिदेत १२
होनहारपरजायगजअंगनगातिनमेकाय ॥ भाविनोआगमदरवितातहिकहेकविलोप ॥ १३ ॥ तद्व्यतिरिक्तासरी
रहेभेदतासकेहोय ॥ येकदेहनोकर्ममयकारमांनपुनिहोय ॥ १४ ॥ आगमनोआगमदुविधिभावनिक्षेपथ
नाव ॥ गजपरिषागजवरननेतागजकोआगमभाव ॥ १५ ॥ वरतमानपरजायगानतेसहितउपयोग ॥ सोनोआ
गमभावगजभाषेथांनीलोग ॥ १६ ॥ किनेनांमकोभावगिनिकितोजिनेद्रविभाव ॥ समेहविनानिक्षेपविधि
मिटैसिध्यातनभाव ॥ १७ ॥ इतिनिक्षेप ॥ सोरठा ॥ वरनेनैपरमांन ॥ सानतत्वनिक्षेपवतुनिरदेसादिविधान

अवधरनैप्रमतिविसदहिन ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ नांमपाटनिर्देसंत ॥ स्वामीअधिपतिकार ॥ साधनकारनजांनियो ॥ गिनि
अधिकरनआधार ॥ ८० ॥ थितिकालवरदारुपर्के भेदसरूपविधांन ॥ शब्दअर्थनेसाकदुरि ॥ विसदविसेसप्रमांन ॥ ८१ ॥
॥ अथनिर्देसकथन ॥ तहांचौवीसठांन ॥ चौपई ॥ गतिइंद्रीषठुकायरूपजोग ॥ वेदकषायज्ञांनवसुभोग ॥
संजमदरसनलेस्याकेनी ॥ भविसंसम्यक्तअहारकसैनी ॥ ८२ ॥ गुनस्थांनपुनिजिवसमास ॥ परज्यायनप्रांनसं
ग्यास ॥ त्याधिउपयोगध्यांनपरतेय ॥ नुस्वाकोदिज्ञांनिकभेय ॥ ८३ ॥ जाकेउदैयापरजाय ॥ प्रनवेआतमरांमसुभा
य ॥ सोगतिच्यारिप्रकारपिछांनि ॥ सुरनरनारकतिरजगजांनि ॥ ८४ ॥ जाकरिजगजननजानतजाय ॥ सोकहियेइंद्री
समदाय ॥ येकेंद्रीजियकीपरजाय ॥ भूजलतेजवनसपतिवाय ॥ ८५ ॥ रसनांसपरसइंद्रीदोय ॥ संखसीपटैल
सुलसीजोय ॥ जिह्वानासासपरसधारी ॥ वीछूचींटीकीटकसारी ॥ ८६ ॥ श्रवनबिनाचोइंद्रीजीव ॥ मांखीमषी
भ्रमरसदीव ॥ पंचेंद्रीमैच्यारूंभेव ॥ मांनुषतिरजगनारकदेव ॥ ८७ ॥ कायसमदपटदेसापिछांनि ॥ ताकेभेदकहेष
टजांनि ॥ बदनिवनसयतिभजलवाय ॥ येदीपांचथावरकाय ॥ ८८ ॥ कचुनादिकधारीत्रसदोय ॥ विकलेत्रिकपंचें
द्रीजोय ॥ जियप्रदेसचपलताधरे ॥ जांनिजोगजोविधिपरे ॥ ८९ ॥ सांचकसतिकनेमेअरउभे ॥ मनवच
सुविधिजांनंसबै ॥ वैक्रियकअौदारिकआहार ॥ पुनियतीनेमिश्रप्रकार ॥ ९० ॥ कारमांनजुतपंककरे ॥ पं
दरेजोगतवेउचरे ॥ दोहा ॥ कारमांनजुतमिश्रद्वैवैकपननअवदार ॥ अपरज्याप्तअवस्थाविनेपरज्यप्यतनलगा

२ ८१ ॥ आहारककी मिश्रता औदारिकजुतहोय ॥ अष्टमगुनमुनिराजकै और नकै नाहि कोय ॥ २ ॥ अंतरमहूरतरहत
पक और जोगफुनि पाय बाहरि ज्ञाने जात नहि संसकार रहिताय ॥ ३ ॥ जोगरुवेदकषायफुनि लेस्या ध्यांनल
षाय ॥ अष्टमहूरत पेकथिरवहु विद्यातिपहोजाय ॥ ४ ॥ पुरसवाहिफुनि मायाचार ॥ याविधिनारीवेदाकिवार ॥ ८५
कछुसाहसकछुधीरजवांन ॥ चाहित्रियाकीपुरसपिछांन ॥ आतुरउभेनपुंसकवेद याविधिजांनतीनंभेद ॥ ८
६ ॥ करखेहनेजीविकाभाव ॥ सोकषायपचीसविभाव ॥ अनंतानआयरत्पाख्यानं ॥ परत्पाख्यांनसिंज्वलजा
न ८७ ॥ क्रोधलोभमायाअरमांन ॥ च्यास्चिकरीसोलेठांन अनंतांनसमाकितनाहिकरै ॥ अपरत्पाख्यांनत्पाग
नहिधरै ८८ ॥ पारत्पोख्यांनमष्टाव्रतहांन ॥ संज्वलअरुनपकषायप्रवीन ॥ हासिअरतिरतिसोकगिलांन ॥ भे
तिदुवेदसहितनोजांन ॥ ८५ ॥ ज्ञांनपनातोयेकहिसांच ॥ भयाक्षावरनत्तविधिपांच ॥ इंद्रिमनकारनमतिपांन
सुरतअर्थअरथांनतरजांन ॥ ८६ ॥ अवधिकछुकरूपीकोलखै ॥ मनपरजैपरचित्तकनआखे ॥ केवलद्रावरिपजेसव
ज्ञांन ॥ कुमतिकुश्रुतिकुवधितुद्यांन ॥ ८७ ॥ सामायकसमतारसधार ॥ छेदथापनापुरनिदोषिकार ॥ परिहा
विश्रुद्धसूक्षतादायलघुकषायसूक्ष्मसांपराय ॥ ८८ ॥ जथाख्यातानिरमोहीरूपांन ॥ संजमासंजमपंचप्रधांन वं
इरिअसंजमव्रततेहीन ॥ साततिमसातगिनोपरवीन ॥ ८९ ॥ जोसामांनविलोकनज्ञांन ॥ तासंदर्शनकाचारिविधां
न ॥ चक्षुअचक्षुअवधियहचांन ॥ केवलबोधादर्शनज्ञान ॥ ९० ॥ कायजोगकीप्रवतिहोय ॥ सोलेस्या

षटविधिकीज्ञेय ॥ अशुभकृष्णनीलकापोत ॥ पीतपद्मशुभशुक्लउद्योत १ चलेपथिकषठमारगमांहि ॥ तिनेंश्र
मचूवनकीचांहि ॥ प्रथममलउपारनलपो ॥ दूजाफललातोडनपायो २ तीजोडारीकाटतजोय ॥ चोथागुंछकतो
रतकोय ॥ पंचमनेंप्यारितोरिफललहे ॥ भूमिपतितकूंषष्ठमगहे ३ यामाफिकदृष्टांतपिछांन ॥ अनुक्रमतैंले
स्याषटजांन ॥ दोहा ॥ कृष्णनारकीहूतहैथावरनीलप्रभाव तिरजगहोतकपोततैंपतिलम्लेनश्राव १ पद्मष
कीहैदेवपदशुक्लमुरिवलैदेव ॥ उतंकरलेस्याभावकेकाजकहेजिनयेव २ ॥ चौपई ॥ भविमारगनाद्वैविधि
पोय ॥ अभविअजोगिजोगिभविमोय ४ समकितसरधासुविपरीत ॥ प्रथममिथ्यातत्वविपरीत ॥ कुनिसास्वा
दनमिश्रवषांन ॥ उपसमवेदकक्ष्यायकजांन ५ भेदअहारकजांनदोय ॥ अनअहारअहारकजोय ॥ हारिकऔ
दारिकवैक्रिया ॥ अहैवर्गनांहीरककघा ६ धारनचिंतवनसमरतिविचार ॥ उपांनप्रनमतमनअवधार ॥ जीकअ
सेनीकेमननाहि ॥ सेनीजीवनकेमनपाहि ७ जिनमजीवविलोकितजोय ॥ सोचोदामारगन्यादोय ॥ मिथ्यात
लोजिंहगुयांन ॥ कोदहतेंअवधारोजांन ८ मिथ्यातीस्यासादनजांन ॥ मिश्रअव्रतीसरधावांन ॥ श्रावकदेश
व्रतीगुनपंच ॥ परमतमुनिनहिपरिगहरंच ९ अपरमत्तअपूर्वकरन ॥ अनिवृतिकरनविरकाहरन ॥ सूक्ष्मपरायगमाहि
उपसंत ॥ खीनकषायसजोगमांहांन १० ॥ जिनिअजोगचोदेगुनपूरजधारेतेजगमेंसर ॥ अलपभेदसबमेंपर
कास ॥ सोकहियेअबजीवसमास ११ येकेंद्रीसूक्ष्मअरथूल ॥ विकलेत्रिकजुतपांचकतूल ॥ सेनीअसेनजुतमन

विन्नपंचाखि ॥ परजाअपरजैचौदैभाखि ॥ १२ ॥ तथाजीवसामासउक्तंच ॥ अनंतरंतप्राचीनलिख्यते ॥ चोपही ॥
प्रथ्वीकायदोयभेदवखांनकोमलमाटीकठिनपखांन ॥ पांनीयावककपौनविचार ॥ नितमाइतरदसाधारनधार १ सातै
सूक्षमसातैताथस्थुलनिकेचौदाभेदइकवलकहीप्रतेककायदोजात ॥ सुप्रतिष्ठअप्रतिष्ठविभात २ दोहा ॥ इकवोनि
कोटनिरखवंदोनिरखअरुकंद ॥ पंचभेदपरतेककोलिखतनाहीमतमंद ३ जवइनमांहिनिगोदहैसुप्रतिष्ठितवूजा
निजवनिगोदनहिपाइयेअप्रतिष्ठतवमांन ४ जातइउप्रात्यकेकीयेचौदाचोवीस ॥ परजअपरजेअरुलब्धसा
वेदहवेदंत्रीदीय ॥ ५ चेतेचोइंद्रीतिइंद्रुपजेअपर्जेलाध्धिविकलत्रिकवेभेदनोहिंसाकरीजिबवध ६ चोपई ॥ क
र्मभूमितिरजंचविष्यातगर्भसमूर्छनहैदूजात ॥ गर्भजपरजअपरजप्रचीन ॥ लब्धसहितसनमूर्छनतीन ७
सैनीपंचअसैनीपांच ॥ दसोभेदजलचरतिरजंच ॥ दसोभेदथलचरपशुकाय ॥ दसोव्योमचरउडेअरुभय ॥ ८ कर्म
भूमितिरजंचमझारि ॥ तीसभेदभाषेनिरधारि ॥ भोगभूमिअरुसुनोसुजांन ॥ थलचरनभचरदोसरधांमेन ॥ ९ परज
अपरजायनकोरिगिने ॥ आरिभेदइहांतववेनै ॥ उतममधिजिघनिभूतैने ॥ द्वादसभेदजिनागममंनै ॥ १० ॥ सो
रठा ॥ पंचेंद्रीतिरजंचकेवियालीसकहिभेद ॥ तेराभेदमनुष्यकेसमझोभ्रमउछेद ११ चोपई ॥ उतमभोगभूमिसु
षयांनि ॥ उतमपात्रदांनफलज्ञांनिमद्धिमजघन्यभोगभदोय ॥ चौथीकुभोगभूमिनरजोय ॥ १२ पंचमभरतै
कथंदमझार ॥ छटेआरिजगर्भजसार ॥ पर्जेअपरजायतकरिलये ॥ वारइभेदइहांतवभये ॥ १३ दोहा ॥ नर

रिजोनिथनन्याभिकाथमेपाइये॥ नरकनारिनकामनैनमत्रमैगाइये॥ मरदमेसनमूकुनसैनीजीवरा॥ द्वैअल
ध्यपरजपायतद्पाधरिझीवरा॥ १४ अडिल्ल॥ नरकपटलगुनचास॥ परजअपजैजांनिनै॥ अैसेजीवसमासनर
कनमांऊअठानवे॥ १५ चौपही॥ तेसटिपटलसुरगाकेपाट॥ भवनजांनिदससवित्तअट॥ जोतिगपंचक्रिपा
सीभयेपरजअपरजापतकरिलाये॥ १६ दोहा॥ नरकांमाहिअठनानवेयसुइकसोतईस॥ नरतेरासवदेवकासन
कवहत्रिदीस॥ १७ अडिल्ल॥ परजपायतइकसोक्रिपासीजांनिये॥ अपरजपायतइकसोक्रिपासीमांनियेअ
लब्धपरजपायतजीवचौतीसहे॥ चोपनतअटपरिकारनावेरमुनिसहे॥ १८॥ इतिजीवसमास॥ अथपरजाय
न॥ चोपई॥ हारसरीरइंद्रीमनअांन॥ सासोसासभालयरंटजांनुपरजअपरजेअलबधोतीन॥ सुनिइन
केस्वामिनपरवीन॥ १३॥ सवपूरनतेपरजेजोयकछुकहीनअपजैदोय॥ विननिठापनहीमरजाय॥ अल
ध्यप्रजापतताहिवताय॥ १४॥ प्रतिस्थापनतोढूसमकाल॥ निठायथभिनभिंनविसाल॥ सक्तिरूपप्रजा
प्रमांन॥ व्यक्तिरूपदइापांनविधांन॥ १५॥ इंद्रीपांच वचनमनकाय॥ सोसोसासअापसमदाय॥ आगोवर
नसंगपाच्यार॥ मैथुनपरिगैभैरअहार॥ १६॥ जांनप्रनतिद्वादइापेंउपयोग॥ दरसनच्यारिपांनयसुयोग॥ वि
नैएकागरच्यारिविधिध्यांनअरतिरूद्रधर्मसुकलपांन॥ १७॥ इष्टवियोगअनिष्टसंजोगपीडाचिंतवनती
जायोग॥ वहुरिनिदांनवांधिवोजोय॥ अरतिध्यांनचतुरविधिसोय॥ १८॥ हिंसामृषाचोरपरगही॥ आनं

रुच्यारिरुद्रमेसही ॥ आग्यापायविपाकसंस्थान ॥ धर्मध्यानकेच्यारिविधान ॥ १९ ॥ शुक्लप्रथमपृथकावितर्कविचार ॥ फुनिएक
त्ववितर्कअविचार ॥ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपात ॥ व्युपरतक्रियानिवृत्तजात ॥ २० ॥ इतिध्यानचोपई ॥ आगेजोगअ
विरतामिथ्यात ॥ चूद्दकिषायभेदविष्यात ॥ पंद्रेएकरेपांचपचीस ॥ आश्रवसत्तावनगिनिधीस ॥ २१ ॥ इतिआ
श्रवा ॥ अथजोनि ॥ प्रथ्वीआपनीतेजवरवाय ॥ इतरानिगोदनिगोदविचार ॥ सषटसातसातलषभाय ॥ हरितप्रतेक
जांनिदशलाष ॥ २२ ॥ चौदनलाषद्वइंद्रीजीव ॥ विकलैत्रिकषटलाषसदीव ॥ चेतेचतुरइंद्रीतिदुजात ॥ देयदेय
लषकेहविष्यात ॥ २३ ॥ अप्रशातिनरगानारकाजांन ॥ च्यारिच्यारिलषजातप्रमांन ॥ नरचवदालषपिंडइंद्रीए
जोनिलाषचोरासीजीव ॥ २४ ॥ इतिजोनिसमास ॥ अथकुलकोडि ॥ भूबाईससातजलजांन ॥ अष्टावीसवस
नसपतिमांन ॥ वायुसातअगनितिहुंकोडिथावरवंसतसठिलाषाकिरोडि ॥ २५ ॥ बेइंद्रीसाततेइंद्रीआठचतु
रइंद्रीकेनवकरिपाठ ॥ चतुरबोसलषकोडिप्रमांन ॥ सवाविकलैत्रिककुलजियजांन ॥ २६ ॥ द्वादशाभचरदशानभ
चरासौंठद्वादशजलचर ॥ नवउरपासवत्रिजागयचाथि ॥ गिनिलोसाढतिचालीलाष ॥ २७ ॥ मांनुषकी
दशलयकुलकोडि ॥ लाषपचीसनारकीजोडि ॥ कोडिछवीसलाषकुलदेव ॥ परनकुलाकोडिसवभेव ॥ २८ ॥ इ
तिचोवीसठांना ॥ अथस्वामित्व दोहा ॥ चतुरवीसथानकतनो कह्योनामनिरदेश ॥ स्वामीहैअधपतिपनाता
काकहियेभेस ॥ २९ ॥ स्वामीसबकीजीवसौंयाविचारतसंसार ॥ द्वंद्वनिकेसंसर्गतेवरनंपंचप्रकार ॥ ३० ॥ अथयेकें

द्रीवनेनं ॥ एकेंद्रीथावरपसगुनामिथ्यातसदीव ॥ संजिमसमकितनेनमननाहीआरिकलीव ॥ ३१ ॥ जीवसमासयके
द्रयाअनाहारआहार ॥ आरतिरुद्रकुध्यांनजुतआसौसंयपाधार ॥ ३२ ॥ अभविभव्यदोरासकेमतिश्रुतदोय
अग्यांन ॥ कृष्णनीलकपोतजुतलेस्यातीनप्रधांन ॥ ३३ ॥ कारमानअवदारीकतनिजोगकेईस पुद्गलते
यादोवेदविनदैकषायतेईस ॥ ३४ ॥ आयकायइंद्रीबहुरिसासउसाससुजांन ॥ होयच्यारपरजाप्रापुनियेच्यारोप्रां
न ॥ ३५ ॥ चोपही ॥ धरेतीनउपयोगसुभाय ॥ तीनजोगतेवीसकषाय ॥ अविरतसातपंचमिथ्यात ॥ योंअठतीसआस्र
वापात ॥ ३६ ॥ जोनिजाति ॥ दोहा ॥ वनसपतीपरतेकदसभूजलअगनीवाय ॥ नित्यइतरषटभेदप्रतिसातसात
लषिथाय ॥ ३७ ॥ कुल ॥ भवाईसहसातजलतेजतीनकुलज्यात ॥ अठाईसवनसपतीवायकायकुलसात ॥ ३
८ ॥ अथवेंद्रीइकथन ॥ मनविनपंचप्रज्यापताकह्मप्रांनजुतभोग्य ॥ द्विकओदारिकवचनयककारमांनव
तुजोग ॥ ३९ ॥ वेंद्रीतिरसअहारहिकवेंद्रीयेकसमास ॥ सायकोदिकुलसातफुनिजोनिलाषदोइजास ॥ ४०
जोगच्यारिअविरतवसुफुनिकषायतेईस ॥ जोसपंचमिथ्यातजुतहैआश्रवचालीस ॥ ४१ ॥ प्रथककथनतें जि
नेकोलषतिनकोइंद्रयवताय ॥ सोसभेदकेभेदसवयवेंद्रीसमभाय ॥ ४२ ॥ अथतेंद्रीजीवसमास ॥ आ
ठलाषयकिकेरकुलतेंद्रीजीवसमास ॥ प्रांनसातपंचेंद्रीकायवचनाथितिसास ॥ ४३ ॥ अधिकयेकआश्रवद्र
हांवइंद्रीतेमांन ॥ ओरभेदसवजांनियोवेंद्रीजातसमांन ॥ ४४ ॥ अथचोइंद्रीकथन ॥ तेइंद्रीकेभेदसमव

तेंद्री पहचांन ॥ जोकछु यामेप्रथक तातांकाकरुं वयांन ॥ ४५ ॥ कुलनवलाषाकिरोरकाचतुरेंद्रीवसुपांन ॥ आश्रवदो
चालीसमित जियचोयंद्रीयांन ॥ ४६ ॥ अथ पंचेंद्रीकथन ॥ पंचेंद्रीकीजातमेधारिचतुरगतिभेव ॥ तिनप्र
तिवर्ननकीजियेनरकपशुनरदेव ॥ ४७ ॥ अथ नारककुगति ॥ नारकगतिपंचेंद्रीयासैनीतिरसजीव ॥ संज्ञा
परजेप्रांनसवसंजमन्याहिसदीव ॥ ४८ ॥ द्वैयकषायतेईसफुनिसवहारकताप्याहि ॥ विनकेवलदरशनसर
वभाव्याभव्यताहि ॥ ४९ ॥ ज्ञांनिज्ञांनमतिश्रुतिअवधितामेमानि विनांन ॥ मिथ्यातीअज्ञांनतासंम्य
क्तीश्रुभउपांन ॥ ५० ॥ कारमांनदुकविक्रयाअनवचजोगानिधांन ॥ मिथ्यातीसासादनीमिश्रअविरतिथांन
५१ ॥ उपशमवेदकसातलगपहलेक्षायककेरात ॥ अवलेस्याविस्तारसुनिअदिदुतियकायोत ॥ ५२ ॥ ती
जेनीलकपातदोनीलचतुरमेयांन ॥ नीलकृष्णद्वायांचवेसकृष्णपहचांन ॥ चोपही ॥ अविरतदादशअपं
चमिथ्यात ॥ अरयेकादशजोगविख्यात ॥ नरकानिमेतेईसकषाय ॥ योंआश्रवईक्यांवनथाय ॥ ५५ ॥ शिष्य
प्रश्न ॥ दोहा ॥ नहिजिनमुनिनहिजैनकुलकासमकिततिहयांन ॥ प्रथमआयकोबांधायकीसवतसम
ण्यवांन ॥ ५६ ॥ उतर ॥ महापापतेनरककोहोतआयकावंध ॥ तायछेसमकितपछेजिनमतकेसंबंध ॥ ५७ ॥ अ
शुवंधछेदनहीघटेलनागतिआय ॥ ताहेतजिआयकीप्रथमनरकहीजाय ॥ ५८ ॥ आयछेदनकरीजिनसम
कितपरभाव ॥ सर्वरीपहलेनरकलघुनरकसातईआय ॥ ५९ ॥ उपसमवेदककासातलोवरततक्रेसेभाय ॥ केउपदेशप्रश्न

मरेंकेपहलेलीयजाय ॥ ६० ॥ दुषकीवेदनतेकेरेपिकलेभवकीयादि ॥ सोकालश्रावकजांनिनिजतजेमिथ्यातअ
नादि ॥ ६१ ॥ मनेसमेसमकितमिटप्रगटेअनंतकषाय ॥ अपज्यायतषठेनरकमेयोसमकितनहिपाय ॥ ६२ ॥ अ
थतिरजंचगति ॥ तिरजगगतिमेहोतहेइंद्रीविदकषाय ॥ लेस्यासमकितप्रांनभविसैनीकायनताय ॥ ६३ ॥ पु
निआहारपरजपायतासंगपाजीवसमास ॥ यनसबनिकेभदसबओगप्रथकप्रकास ॥ ६४ ॥ कारमांनअ
चदारतनवइरिमिश्रअवदार ॥ आठवचनमनजोगहैयेकादशप्रकार ॥ ६५ ॥ षटविधिमतिश्रुतिअवधि
विधिकदुअज्ञांनकदुज्ञांन ॥ संजमदेउपअसंजमीद्वैविधिसंजमठान ॥ ६६ ॥ दरसतनतीनोंउपानषठना
विधिकोउपयोग ॥ मिथ्यासासादनमिसरअविरतविरतमनोग ॥ ६७ ॥ आदरूद्भवारतिचरनधरमध्यां
नपदतीन ॥ वेक्रयहारकद्विकविनाजेपनअरुअवलीन ॥ ६८ ॥ नरकनिज्योतिरजंचगतिजियसम्यकीजो
य ॥ पेथावरविकलेत्रयासमकितसहितनहोय ॥ ६९ ॥ नारिसुरतिरजंचनीसमकितकालितनहोय ॥ पु
निजिनमतलायिभावधारिसमकितधारेजोय ॥ ७० ॥ बांवनलाखअकेंद्रियाविकलेत्रयषटलाख ॥ आ
दिलाषपंचेंद्रियायेपशुवासटिलाख ॥ ७१ ॥ सतसटिकुलद्वैकेंद्रियाविकलत्रयचोवीस ॥ पंचेंद्रीति
रजंचकुलसाढेतेचालीस ॥ ७२ ॥ सोसाठचोतीसामितलाखकोडिकुलमांन ॥ वरननगतितिरजंचकापरन
भयाविधांन ॥ अथमनुष्यगति ॥ धर्मराणमठिवचनप्रभुप्रजाकपुरसब देवथकीमानुषभयाअेसेगुन

लखिलेव ॥ ७४ ॥ बंधुविरोधमिटकिनकोयकटुकचचरोग ॥ नारकतेमानुष्यभयातामेत्रेसेजोग ॥ ७५ ॥ दयार्दं
नरूचिमृदुरसितविनेवांनतुकुलोभ ॥ मानुषतेमानुषहवाताकीत्रेसीसोभ ॥ ७६ ॥ कपठीधीटसंतोषमु
तमठषुधातुरजांन ॥ तिरजगतेमानुषभयत्र्प्रारसवंतमहान ॥ ७७ ॥ मानुषतिरसपंचेंद्रियासैनीजीव
समास ॥ तिगनिविक्रयकेद्विकाविनातेरजोगप्रकास ॥ ७८ ॥ पचपनत्र्प्राश्रवहोतपयाविक्रयाद्विकनहिजो
र ॥ जोनिवतुरदशालाषफुनिकुलहद्वादसलषकोर ॥ ७५ ॥ सोसभेदतिनकोसरवमानुषगातिहैथांन ॥ ज
वयारगुनथांनकचठेतवककुधरताकिनांन ॥ ७६ ॥ अथदेवगति ॥ देवत्र्प्रसंजमनसहितातिरसपं
चेंद्रिजीव ॥ चातुरवीसकषायहैनाहीवेदकलीव ॥ ७७ ॥ कारमांनद्विकावेक्रयात्र्प्राठवचनमनजोग ॥ कु
द्वगपांनदरसनत्रपनीतिपनोप्रकारउपयोग ॥ ७८ ॥ मतिश्रुतित्र्प्रवधिप्रकारहैकुग्पांनत्र्प्रगपांनोभेद ॥ सरसती
नकेवलीविनापुरसतियादोवेद ॥ ७९ ॥ भविसंम्यक्तेत्र्प्रउपाप्रांनत्र्प्रहारत्र्प्रनहार ॥ इनकेभेदसवेतहांजहां
जैनलषच्यार ॥ ८० ॥ अथसिष्यप्रश्न ॥ जेत्र्प्रावेसुरसोतजेउपदेस्याभिप्रात ॥ जिनकात्र्प्रागमकैनहीसो
क्योंसमकितयात ॥ ८२ ॥ उत्तर ॥ भवसुमरनतेकोलहेकोसंगीनीयाजाय ॥ त्रेक्षेसुरलाषित्र्प्राचरनसमकित
गहेशुभाय ॥ ८२ ॥ उपसमतीनिगतिविषेपरजपापतमेजाय ॥ विनपरज्यायतपेकगतिदेवलोकमेहाय
८३ ॥ मानुषसुरतिरजंचफुनियहत्लेनरकमझार ॥ परजत्र्प्रपर्जहदुइनकेरूपायकवेदकसार ॥ ८४ ॥ मिथ्यासा

सादनमिसरअविरतलौगुनथांन॥ परलनआवतिहदुफुनिदूपदधर्मसुध्यांन॥ ८५॥ चौपई॥ अविरतदुादसपंचप्रि
थ्यात॥ अरचौवीसकषायविख्यात॥ पांनियेकादसजोगसथांन॥ सुरगतिवावनअाश्रवअांन॥ ८६॥ दोहा॥ दे
वभवनवासीचतुरविंतरजोतिगथांन॥ सौधर्मईसांनमेंलेस्यापीतप्रथांन॥ ८७॥ सनत्कुमारमहिंद्रदो
पीतपद्मपहचांन॥ सुरलांतवकापिष्टलौंपद्मेशपापदमसुजांन॥ ८८॥ सुरसातारसहसारलौंपापद्मसुक
लताथांन॥ सोसरंअनुत्तरनलौंलेस्यासुकलमहांन॥ ८९॥ लाखछवीसकरोडकुलचारिजानिकेरंच
तुरबीसथांनककषायपंचेंद्रीप्रतिभव॥ ९०॥ इतिस्वामित्वकथन॥ २॥ अथसाधनकथन॥ साध
नकहनरूपहेअवताकाविस्तार॥ कहियेजीवनिकेविषेपरमागमअनुसार॥ ९१॥ कारजजासौंक्रपजैसोकार
नहपदेअवताकाविस्तार॥ कहियेजीवनिकेविषेपरमागमअनुसार॥ ९१॥ कउरभार॥ मुख्यकारननि
जभावहैंऔरस्याऊविवहार॥ ९२॥ मोहकीनकेभावहैगुनअविरतपरजंत॥ निकसेजातपंचेंद्रियानरपशुजनम
लहंत॥ ९३॥ व्याहोगतितिरजग्गलहेजथाभावपरमांन॥ सिवनहिपांवेपापथहेपंचमलौंगुनथांन॥ ९४
च्याहेगतिमेसंचरेलरकीसक्तिमहांनकर्मवंधजगमेवसेकर्मजीनासिवथांन॥ ९५॥ अविरतलौगुनथांनसु
रथिरडपजेमधिलोय॥ याघरेकेंपंचेंद्रियामांनुष्यानिरजगहोय॥ ९६॥ अथदंडक॥ जथानकेतेआवना
सोआगतिपहचांन॥ जथानकेमेपहचनासोगतिलेनाजांनि॥ ९७॥ प्रथ्वीवारवनस्पतीदसगतिधारत

होय ॥ विकलेत्रककति तिरजंचनरथावरपांचहूहोय ९८ ॥ वनतवनसपतिभूमिजलएतेअनंतानिजीव ॥ सवथाव
रविकलेत्रयासुरनारिजासरीर ९९ ॥ तेजवायकेतनगहेदसथानकगतिलेत ॥ विकलेत्रिकतिरजंचगतिथा
वरपंचसमेत ॥ १०० ॥ तेजवायकेतनगहेदसथानककेआयां ॥ नरतिरजगविकलेत्रयपांचथावरकाय ॥ १ ॥ ग
तिआगतिदइथांनमैविकलेत्रयकीमांनि ॥ मानुषपशुविकलेत्रयाथावरपांचजांन २ ॥ सातोंहीनरकांत
नीगतिआगतिहैदोय ॥ केतिरजगपंचेंद्रियाकेमानुषभवहोय ३ ॥ पंचेंद्रीतिरजंचकीगतिआगतिलषि
लेव ॥ थावरफुनिविकलेत्रयासुरनरनारकदेव ४ ॥ तिरजगनरसुरनारकीथावरपांचकाय ॥ विकलेत्रयफुनिभोगिय
लसवगतिमानुषजाय ॥ ५ ॥ विकलत्रयथावरतिहूंतेजवाताविनजांहि ॥ नारकसुरमानुषपंत्रिजगआहनमिलमम
वआन ॥ ६ ॥ देवहोतनिरंजचनरभवनवासइसथान ॥ वसुमंतरपनजोतगिसकुनधर्मईसांन ७ ॥ व्यंतरजोतिगभव
नसुरआदिकलपदुधार ॥ थिरउपजननिरजंचनरवनसपतीभवारि ८ ॥ जांनिदादइसमसुरगलोंआगतगतदोभ
व ॥ पंचेंद्रीतिरजंचकेमांनुषपलपलयलव ९ ॥ पंचानतरथांनलौमानुषआवतजात ॥ करमकाढिसिवमगगये
सोनिश्चलहेजात १० ॥ ग्रीवालैमिथ्यातमतआगेसमकितवांन ॥ नारिसोलवंसुर्गलौआगेपुरषसुजांन ११
पशुतिरजंचजहांलिंगेअगतिगतिकेमांहि ॥ तहांपंचेंद्रीजांनियेविकलेत्रिकहैनांहि १२ ॥ इतिदंडक ३
तिसाधनकथाण ३ ॥ अथअधिकार ॥ सर्वद्रवकोयेकनेलोकाकासअधार ॥ परमारथतैदरषियेनिजपरदेश

अधार ॥ २३ ॥ ऊरध्व तलवरतन अया चतुरदीस सब थांन ॥ तिन अधिकरन अहार पन सब का जीव सुजांन ॥ २४ ॥ वादर पु
निविकल्प अयाप शुपंचेंद्री धार ॥ तरुजनथल नभ अदि के जिवतहें आधार ॥ २५ ॥ सिद्धलोकतिन रहे सब पु
नि सूक्षम जिय जांन ॥ ये आश्रय आकास के मन नरनारक थांन ॥ २६ ॥ इति श्री अधिकरन कथन ॥ ४ ॥ अथ
स्थिति कथन ॥ उतम मध्यम जघन करि आयु तीन कहि जंत ॥ उतम वरनन जो गिर्हि माधि के भेद अनंत ॥ २७ ॥ प्र
थम कहि उतम आयु का कथन सुनो विस्तार ॥ येकेंद्री जीवांन मे थावर पंच प्रकार ॥ २८ ॥ प्रथ्वीकाय दोय जाति के
दोय भेद तिनथि पाय ॥ वरस सहस्र वाईस की भू कठोर की आय ॥ २९ ॥ वरस अद्भुवा दस सहस्र थिति नम
भूमि जिय जांन ॥ सात सहस्र अपवर स्यात थिति तेज तीन दिन मांन ॥ ३० ॥ तीन सहस्र वरस लतनी वायकाय
सरधांन ॥ आयु वरस सहज्यार दस वनसपती पर वांन ॥ ३१ ॥ बेंद्री द्वादस वरस थिति तेंद्री दिन गुनचास ॥ च
तुरिंद्री षठ मास की जांन कुद्धि प्रकास ॥ ३२ ॥ तिथि सागर तेतीस वर देव नरक की याय ॥ तीन पल्य उत्कृष्ट थि
ति मानुष पशु पर ज्याय ॥ ३३ ॥ अथ जघन्य आयु का कथन ॥ सोरठा ॥ भजल तेज वयार ॥ पुनि निगो
द जुत पांच के ॥ ग्यारह ये भेद विचार ॥ सूक्ष्म वादर दुभये ॥ ३४ ॥ येक प्रतेक मिलाय निद्द्रे येका दस थांन सब य
कथांन प्रतिजांनि ॥ षटहजार द्वादस भया ॥ ३५ ॥ असी दुपंद्री धार त्यों पंद्री के साठ भव ॥ चतुरंद्री चालीस ॥ भव
चोईस पंचेंद्रिया ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ छ्यासठि सहस रु तीनस्यै ॥ पुनि छतीस भव जोर ॥ अंतर मुहूर्त मे कौ बर

नीतबिकीटोर ॥ २७ ॥ जगवासीजियजातकीजघन्यआयपमजांन ॥ येकसासमेंषुद्रभवअठारदउपसमांन ॥ २८ ॥ कु
डलिया ॥ तिथिमोहारीरासिकीसागरदोयहजार ॥ येकसहसविकलेंद्रियायेकपंचेंद्रियधार ॥ येकपंचें
द्रियधारलहेजिनमतजोसरनां ॥ सोयावोसिवबासदेरजामनअरमरनां ॥ यउतिमतिथिपायतजेनहिमि
थ्यातमपथि ॥ सोनिगोदमेंवसेअनंतानंतउसतिथि ॥ २९ ॥ दोहा ॥ रहनांसदानिगोदमेंकठिननिकसनें
य ॥ यतीत्राषिसुलहेनहीफुनिनिगोदलेसोय ॥ ३० ॥ हांसीषलनामिनअप्रवकहारदेहोभल ॥ कर्मेद
नेअरंनोमुकतिनहिंजैहेनिरमूल ॥ ३१ ॥ इतिस्थितकथन ॥ अथजीवभेदकथन ॥ सोर
ठा ॥ जीवद्रव्यकेभेद ॥ सीधजगवासीदोयविधिसिववासीनिरभेद ॥ जगवासीकेभेदसुनि ॥ ३२ ॥ भविअ
भविदुपरास ॥ मनजुतमनबिनहोतहे ॥ थावरत्रसदोभासपंचभेदथावरतनें ॥ ३३ ॥ भूजलअगनीवाय ॥ वन
सपतीजुतजांनियो ॥ सूक्षमबादरकाय ॥ एकेंद्रीजनकुंगहे ॥ ३४ ॥ तिरसभेदपरमांन ॥ वेतेचौपंचेंद्रियपं
चेंद्रीपरहचांन ॥ नारकीतिरजगनरसुरा ॥ ३५ ॥ सातनरककेथांन ॥ पशुजलथलनभचरपरा ॥ मनजुतमानु
षजांन ॥ चतुरनिकायाहेसुरा ॥ ३६ ॥ जोतिषपंचप्रकार ॥ वसुबिंतरदउभावनके ॥ धारोकलपविचार ॥ कल
परहकलपातीतहें ॥ ३७ ॥ इतिनिरदेशादिकथन ॥ दोहा ॥ निरदेशादिकधारतेहोतमिथ्यातउछेद ॥ त्यो
हीछेहेजगहितैसोसुनिवसुनिधिभेद ॥ ३८ ॥ सतकहियेअस्तित्वतासंख्यावस्तुगिनांन ॥ षत्रनिवा-

सके तैंकथनसपरस्नविचरनथांन ॥ ३९ ॥ कालकथनचिरियंतागनअंतरविकलनचार ॥ भाव्यात्रेपनभेदहैअल
पबहुतनिरधार ॥ ४० ॥ जीवतत्वआसिनत्वनाहैचोद्गुराथांन ॥ यातेगुनथांनकतनुंवरननकरूंविधांन
४१ ॥ अथगुनस्थानकनांम ॥ मिथ्यातीसासादनीमिश्रअविरतीसार ॥ देशव्रतीश्रावकधर्यपरमतमुनि
आचार ॥ ४२ ॥ अपरमतगुनसातमांकरनअपूर्वसुजांन ॥ नवमांअनिवृतिकनेंफुनिसूक्षमलोभविधांन
४३ ॥ द्वैउपसांतकषायफुनिद्वादशषीनकषाय ॥ संजोगीजिनकेवलीगहिनअजोगीसिद्धाय ॥ ४४ ॥ अ
थमिथ्यातगुराथांन ॥ जहांअतत्वसरधांनजुतगहेअविद्याभाव ॥ जोगैंजेसनमुषहोविमुषसोमिथ्या
तअभाव ॥ ४५ ॥ अथअविद्याभाव ॥ गैंवेसोवेदरजोरुचलागेहितमांनि ॥ विनाविनयासुकेरसंगिअ
विद्यावांनि ॥ ४६ ॥ विसनभोगमेंअतिनिपुनत्यागकरनदुषदाय ॥ दयाभावनाहिउपजेहिंसासदनसुभा
य ॥ ४७ ॥ अथअतत्व ॥ रुढीकोसांचीगिनेंअहितकोंरहितजांनिनिजपरकीनाहिलषिकतासअतत्वसरधां
न ॥ ४८ ॥ मांनेंकेआतमदेहकोंगिनिनप्रथकसुभाय ॥ सांतपुरुषवासिकोकरैदंसकोनिंदउपाव ॥ ४९ ॥ दुषमें
दुषसुषमेंसुषीतनमेंआतमभाहि ॥ वरकानिष्ठानिरषेनरंजडरदेंआपदामांहि ॥ ५० ॥ अथजगसनमु
षशिवविमुष ॥ धरमदेवगुरनांहवेपरद्वेंधात ॥ परधनपरतिपलालचीहासीनावसुहात ॥ ५१ ॥ होमिथ्या
तअनादकावहुकुवुद्धिसरधांन ॥ ताप्रेमुषिहैपंचाविधितासुनोनिदांन ॥ ५२ ॥ दुधडकेतविपरीतदुज०

विनैं संन्यासी ज्ञांन ॥ संसै से तां वरजती मुसलमांन क्राणपांन ॥ ५३ ॥ दुखदाई मारग तजे कोट पच्छ सठ ज्ञांन ॥ थोटा त्यानि
मिथ्यात कूं कीनैं ते जे बुधिवांन ॥ ५४ ॥ अथ मिथ्यात प्रति चौवीसठांन ॥ गति च्यारूं जे जीव भेदं इंद्री पांच ज्ञा
न ॥ काय तिरस थावर दुहूं तीनूं वेद विख्यात ॥ ५५ ॥ जोग आहारक दुक विनां वद्रू रिप चौवीस कषाय ॥ मति श्रुति अ
वधि नु अग्यांन तीये कुअ संजित भाय ॥ ५६ ॥ दरसन नैं नानैं नैं ना विन लेस्या षट प्रकार ॥ भवि अभवि अभावि वता
इये समकित मिथ्या धार ॥ ५७ ॥ विन आहार अहार फुनि मन जुत मन विन पर्वांन ॥ गुनथांनक मिथ्यातय का जिय
समास सब मांनि ॥ ५८ ॥ परज्यापत के भेद सब सब विधि धारक मांन ॥ सं पाच्यारूं लोत हे आरते रौद्र कुध्यांन प
र्पांन तीन दरसन दु विधिये हे पांच उपयोग मांनि ॥ अहारक दुक विनां पचपन आश्रव जोग ॥ ६० ॥ जोनि भेद कु
लभेद सब मिथ्याती गुनथांन ॥ चतुरदीस थांनक ये हे कर भाविक सरधांन ॥ ६१ ॥ कर्म बंध सत उदै प्रकत उदीरन
होय ॥ गुनथांनक प्रति लिखत हूं ग्रंथ सन्यात नजोय ॥ ६२ ॥ लक्षण ॥ बंधन नूतन का वनैं सत्ता थिर संजोग ॥ दल
कर भोग उदीरना उदै देत रस भोग ॥ ६३ ॥ इकसौ अठ चालीस मैं ज्यागि येकसौ बीस ॥ कर्म प्रकृति कौ बंध है बंध
नांहि अठवीस ॥ ६४ ॥ अथ बंध प्रकृति कथन ॥ येक मिश्र मिथ्यात फुनि समकित प्रकृति मिथ्यात ॥ ग मिश्र व
ध मिथ्यात मैं गिनी निंदा न्पां जात ॥ ६५ ॥ अरमित प्रकृति सरीर मैं बंध विषै दु जात ॥ पंच प्रकृति बंधन अनी प्रक
ति पंच संघात ॥ ६६ ॥ वरन गंध रस परस की विस प्रकृति के मांहि ॥ मलच्यारि के बंध हे थोडस गिनि ये नांहि ॥ ६७

यविधिअसवीसविनसेसबंधमेआत ॥ उदैमिश्रदोअधिकहैसंम्यकप्रकृतिमिथ्यात ॥ ६९ ॥ चौपई ॥ जोवि
कृतपरबसंबंध ॥ सोनहिंउदैतथानहिंबंध ॥ इतिरीतरयमअनुक्रमजानि ॥ विकृतीजोपुनिमिलैनआंनि
दुइ ॥ दोहा ॥ कैअचूंपकैअनउदैमिथ्यातीगुनमांहि ॥ कैपुनिउतरीप्रकृतिसोबंधउदैफुनिपांहि ॥ ७० ॥ उदै
समांनउदीरनाकैचौदागुनथांन ॥ जपकहुलहतविसेषज्ञाताकोसुनोविनांन ॥ ७१ ॥ मिनखआयदुवेदनीत
नवीकरिजांहि ॥ उदैचौदहैतेरवेंछठेउदीरनमांहि ॥ ७२ ॥ सत्तामेंसवपाईयेइकसौअडतालीस ॥ सोफुनि
वरननतीनविधिकीकीनोहैजगदीस ॥ ७३ ॥ जोगियेवळअजोगिफुनिविकृतिन्यागवेओगि ॥ गुनथांनकप्रति
जांनियेवरननबहुतमनोगि ॥ ७४ ॥ अथप्रथमगुनस्थानप्रति ॥ बंधप्रकृतिमिथ्यातमेंइकसौसतराहोय
परकृततीनअबंधहैविकृतछोकसजोय ॥ ७५ ॥ होयनबंधमिथ्यातमेंयहैंतीनसरधांन ॥ प्रकृतिअहारक
दुकवहुरितीर्थंकरमानिवांन ॥ ७६ ॥ अथवंधमेंविकृति ॥ आनपरवीआयुगेतितीनरकसमुदाय ॥ विकले
त्रिककीतीनफुनिसक्षमहुंडकाय ॥ ७७ ॥ साधारनयेकेंद्रियाआतापनमिथ्यात ॥ वहुरिसफाठिकसंहनन
वेदनपुंसकजात ॥ ७८ ॥ थावरविनपरउपापताघैहैसोलहजोय ॥ चवठजवेमिथ्यातमेंतकवंधीकुरवोहोय ॥ ७९ ॥ अ
थप्रथमगुनस्थानप्रतिसत्तामेंतीर्थंकरप्रकृतिकैसेपाईयेताकाकथन ॥ दोहा ॥ तीर्थंकरसीप्रकृतिको मि
थ्यातीगुनथांन ॥ कैसेसत्ताहोतहैसोकहियानिधांन ॥ उतरकुंडलिया ॥ करिमिथ्यातनरकाउनरफुनि

अव्रतगुनलपाय ॥ सोलैकारनभायंकेबंधतहांढ्हैजाय ॥ बंधतहांढैजायउदैलाबनलापाई ॥ आयुभद्रतसेसनवे
संम्यक्तगमाई ॥ मरनकीयोतवजायभयोनारनारकबिपाताघर ॥ त्रतियनरकियरजांतसन्नद्रमहैतीर्थंकर ॥ ८१
॥ अथप्रथमगुनथांनमेंउदै ॥ दोहा ॥ उदैबंधसमांनहै विकुरतपंचसुजांन ॥ होतअनउदैपंचका मिथ्याती
गुनथांन ॥ ८२ ॥ मिश्रहसनकितमोहनीपुनितीर्थंकरजांन ॥ वद्रुदिअहारकदुकगिनेपचअनउदैमांन ॥ ८३ ॥ सू
क्षमविनयरजायतआतापनमिथ्यात ॥ साधारनजुतपांचसपहलेविछुरतपात ॥ ८४ ॥ अथउदीरनां ॥ १ ॥ जे
तीउदैउदीरनांतेतीप्रकृतिपिछांन ॥ इकसोअठचालीसकीसतापहलेथांन ॥ ८५ ॥ इतिमिथ्यातगुनस्थां
न ॥ अथसासादनगुनस्थांन ॥ सम्यकितवम्तानिरमलनलेघेजिबनिजआतमभाव ॥ चिगेवकरिबप्रभावते
अनंतानपरभाव ॥ ८६ ॥ आंतरवरतेभावजोपहूचनसीसमिथ्यात ॥ सोसासादनगुनकह्यो जिनवरज्ञानकेत
त ॥ ८७ ॥ ज्योंमिश्रतत्वमिथ्यातमेमिश्रमिश्रगुनथांन ॥ अनविद्यमांतिभावहैसासादनगुनथांन ॥ ८८ ॥ अथ
दूजाप्रतिचोवीसठाना ॥ च्यारोगतिपंचेंद्रियापतिसससहितमनहोय ॥ भाविकअहारअहारविनवेदत्री
नेमेसोय ॥ ८९ ॥ विछेत्रपथावरविषैअप्रजपातकेमांहि ॥ सासादनगुनजांनहैनारकगतिमेनांहि ॥ ९० ॥ जोग
अहारकदुकिबिनांतीनकुग्यांनसुभाय ॥ दर्शनचुखजुतचुखविनावद्धुरिपचीसकषाय ॥ ९१ ॥ समकितहसा
सादनीलेस्यापाटपरधांन ॥ संज्ञाच्यारअसंज्ञमीधारनहेदुआपंन ॥ ९२ ॥ तिहुंअद्रांनरहोनहुबिधिलयी

उपयोगसुज्ञांन ॥ जीवसमासपंचेंद्रियासासादनगुनथांन ॥ ९२ ॥ आरतिरुद्रकुध्यांनजुतपरजपअपजैमांनि ॥ जो
निलाषकवीसदुख्यासौगतिजियफआंनि ॥ ९३ ॥ अविरतद्वादसप्रदकोजोगतेरहैजास ॥ जांनिकषायपची
सजुतआश्रबगिनिपंचास ॥ ९४ ॥ साठषटअरयेकसेगतिग्यारचौकुलकोडि ॥ निरषोसासादनविषैचतु
रवीसविधिजोडि ॥ ९५ ॥ बंधएकसोयेककाद्वैअबंधउगनीस ॥ सासादनगुनथांनमैबंधविकृतियच्चीस ॥ ९
६ ॥ चौपई ॥ थोडसविकुरनितनिअबंध ॥ मिथ्यातगुनथांनसमंध ॥ सोअबंधउगुनीससुजांन ॥ आनोसा
सादनगुनथांन ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ अनंतानकीचौकरीसंघनवज्रनराच ॥ कीलकअरुनाराचफुनिसंघनअर्द्धनरा
च ॥ ९८ ॥ सांतककुवजकवांवनांनिग्रोधकसंस्थांन ॥ निंद्रानिंद्रास्थांनगिधिप्रचलाप्रचलाआंन ॥ ९९ ॥ वदति
याअप्रसस्तगतिअनादयउद्योत ॥ दुखरदुरभगारूपनाअस्वरनीचकगोत ॥ १०० ॥ आंनपूरवीअयुगति
तीनत्रिजगकीजांनि ॥ बंधविकृतियचौसकीसासादनमेमांनि ॥ १ ॥ एकादसकीअनउदैउदविकृतिनोहोय
इकसोग्यारकाउदैसासादनमेंजोय ॥ २ ॥ उदविकृतिअरअनउदैपहलेकीइकग्यांनि ॥ आनपूरवीनर्कोमि
लिग्यारेहजेथान ॥ ३ ॥ येकेंद्रीथावरगनाविकलत्रयकीतिन ॥ अनंतानकीचौकरीउदैविकृतिनोतीन ॥ ४ ॥ इक
सोग्येतालीसकीसत्ताहैजेथांहि ॥ हारकदुकतीरथंकरसुनांहीसत्तामांहि ॥ ५ ॥ अरउदीरनाउदैसमानहै ॥
इतिसासादनदूजागुन ॥ २ ॥ अथमिश्रगुनथांन ॥ दोहा ॥ समदमिथ्यातीउपसमीउदेमिश्रमिथ्यात ॥ मि

अभावआतमलयेभिन्नसरूपनध्यात ६ ह्वैनठीकाभिनस्वादकीमिलीदधिसिताखात त्योतीजागुनथांनमें
वमिश्रह्वैजात ७ अथतीजाथातिचौईसठांन सेनीभविकआहारजुततिरसपंचेंद्रीधार लेइणाकहूंत्र
संजमीतीनिवेदगातिच्यार ८ जोगआठमनवचनकुनिवैक्रयकओदारमिश्रअपांनमतिश्रुतिअवधिअपांन
अपांनप्रकार ९ अनंतानुकीच्यारिविनागिनइकईसकषाय दरसनदोनंमिश्रमेंचक्षुअचक्षुबताय १०
जीवसमासपंचेंद्रियासवसंउपादसपांन मिश्रसम्यक्तीनांमगुनषटपरजायतजांन ११ हद्धध्यांनकेचा
रपदच्याहोआरतिध्यांन धरमध्यांनकाचरनइकअपाविचोपधांन १२ अरैविरतह्वादशजोगदशअत्र
रइकईसकषाय आश्रवतियालीसविधिमिश्रतीसरेगाय १३ पांचविविउपयोगहैदायदससत्रयअपांन
नारकतिरजगदेवनरजानज्यातनुलआंन १४ अथतीजामेंबंधदोह विकुरतनांहीमिश्रमाक्रियाली
सत्रबंध प्रकातिचोहत्रबंधहैमिश्रथांनसंबंधी १५ बत्यालिसहैजेरहीउनरीसुनलआप कीयालीः
सत्रबंधपांमिश्रतीसरेपाप १६ उदेमिश्रमयेकसाउदेनाहिवाईस मिल्योमिश्रातिथ्यानजोसाइविक
तिदीस १७ उदेविकुतिओनअनउदेसासादनकीबीस आंनपूरवीतिनिमालेभइप्रकातितेईस १८ इनमेंते
निकंसिरसिसीमिश्रमोहनीआंन नांखिवेवाईसयोमिश्रतीसरेथांन १९ इकसोसेतालीसकीसत्तातीजे
होय सासादनतेबंधार्द्धमिलीआहारकदोय २० उदीरनांउदेसमांन इतिमिथ्यांगुनस्थांन तीसरा

अथअविरतगुणथान॥ जेनिजआतमअनुभवेतनतुषभावपिछांन॥ उदासीनघरमेंबसेसोचोथागुनथांन॥ २१॥
साततत्वषटद्रव्यकोगुनपरजायनिधांन॥ जैसाभाष्याकेवलीतिसाकरैसरधांन॥ २२॥ अथचेतवनपची
सी॥ सुतोजीवअनादिकोमोहनीदमेंदीन॥ कर्मसत्रुधनलूटिकेकर्योसंपदाहीन॥ २३॥ जागोगुरुउपदेशतेमो
हनीदतजिजीव॥ सनैसनैकर्मनितजेसंपतिरहैसदीव॥ २४॥ विसेविरेचनऔषधीश्रीजिनवचनप्रमांन॥ जन्मज
रादुषदाघहासिवसुषदायकज्ञान॥ २५॥ अनंतचतुष्टयकोधनीमंदिरमोह्मसवादि॥ रंकभयाखेददुषसहे
निजधनकेरेनपादि॥ २६॥ रहियेजासंगिजाहिसोआदिअंतसुषभोग॥ आदिअंतदुषमयसदापरसंगतजि
वजोग॥ २७॥ जैसेमेरफोटगेरनबजोरनतावांनि॥ जैसेमेसनहिजीवतनदुष्यपराईहांनि॥ २८॥ हांनिवृद्धिकेजोगमें
दुषीसुषीमतिमांन॥ जोवायासोहीमिलैनिजआपातजिपंतमांन॥ २९॥ जोकल्लाभकौलाभासिरवंध्यासोमि
लिहैआय॥ कर्मजोगहैमतिजिसीवाहीदेताभिराय॥ ३०॥ जोकड़ुनीतअनीततेतोनिरायपराईगेरक्षमाकरेन
नघटैवटैघरोजीयवर॥ ३१॥ जोजिनदर्शनभव्यकेलाजन्ताभ्रमपाप॥ इहज्ञानिकेयगपड़ेताकोसमकितजा
प॥ ३२॥ संम्पकहैविसराधंतातेंसुद्धज्ञानउपलब्धि॥ तातेंनिजआचरनहैकर्मनासासिवासिद्धि॥ ३३॥ धर्ममूल
संम्पक्तजानिकेहोदेवनिरदोष॥ धर्महीनसमकितविनाहोयनकबहुमोक्ष॥ ३४॥ विनामूलज्योंविटपकेरहेन
फलफूलनवृद्धि॥ धर्ममूलसमकितविनात्योंनहेप्याससिवासिद्धि॥ ३५॥ विषमपरीस्याकोंसहेविनसमकितस

स्थांन ॥ कैरैकोटिलषवरषतपतोनलहैनिरवांन ३६ ॥ चंदतकाठनदलमहानमिटतनहभ्रमिथ्यात ॥ मलउषारतसमकि
तीपुनिनिकासनहिंपात ॥ ३७ ॥ चारितमोहनीकेउदैवरतनधारैलेस ॥ पक्षचानैनिजयारकूंरहैउदासीभेस ३८
जोजगमैंअपजसलहैंवैधर्मविरोधनकोय ॥ याकारिजकोंसमकितीकरैउधमीहोय ॥ ३९ ॥ मेरीनांहीराजरिद्धिसुतद
रापरिवार ॥ रागदोषतनमनवचनकोधनलोभमदमार ॥ ४० ॥ यनमैमैमनवहीकीयोअहंकारममकार ॥ जबजब
बाधंपोकर्मपुनिलयोकुगतिदुखभार ॥ ४१ ॥ मैनहियनकायेनममहूयेनहोगनांहि ॥ मैंयकाकीग्यांनघनजि
सासिवालैमांहि ॥ ४२ ॥ परहलैकीमैंभालिजेउदैआयरसदेय ॥ तासौंयंरवसपरिरहौकरजुदोयसोलेय ॥ ४३
जडकोकरताजदसहीमैमराकरतार ॥ विरथाकरताहोयपरकैसमुगतेप्रमार ॥ ४४ ॥ मनवचकायसरीरसबपु
रपुदगलकेबंध ॥ फुनिउपांनावरनादिवसुद्रव्यकर्मसंबंध ॥ ४५ ॥ मेरालसनचेतनांअसंख्यातपरदेस ॥ गलै
पलैफूटैनहींआदिअंतबिनभेस ॥ ४६ ॥ अहोभागसमकितजग्यैनिजधनलषपोहोय ॥ कोटकलेसबांठावां
ठेआदूषसहतेपरसाथ ॥ ४७ ॥ जेनरभवसमकितगहैतामाहिमासुरलप्य ॥ जेअजांनविठयामगनवडेसाग
रसोय ॥ ४८ ॥ माहिमांसमकितधारकीकोकहिसकेवनाय ॥ सुरपतिनरपतिनागपतिपदवतपदर्दूधाय ॥ ४९
॥ सिष्यप्रश्न ॥ जानेंआपापरलष्यातपागजोगलयाजांन ॥ सोअबांभकेतपापाकंकपोनकेरमतिवांन ॥ ५० ॥ उतर
देवनरकगतिसमकितहीआतमपहचांन ॥ तासांतपागनहिंवनसकेसमतागहैसयांन ॥ ५१ ॥ अनुचितकारिज

नपहुकमकरैउदासीहोय ॥ त्योंकरमांवासिसमकितीजगकारिजमेजोय ॥ ५० ॥ अनुक्रमसतेकठचारताकर्मनासिकुलहो
य ॥ तवनिकसैघरवंधतेनिडरजगतततेजोय ॥ ५१ ॥ सोरठा ॥ वंदौश्रीअरहंत ॥ दयाकथनजिनधर्मकौं ॥ गुरनिरग्रंथ
महंत ॥ ओरनमानेंसरवथा ॥ ५२ ॥ रागद्वेषजुतदेव ॥ मानेंहिंसकधर्मपुनि ॥ सगरंथगुरकीसेव ॥ सोमिथ्याती
जगभ्रमे ॥ ५३ ॥ मरिपलपैसमांन ॥ गुनकोपहचानेंविना ॥ तातेंकरंबषांन ॥ परमेष्टीकागुननको ॥ ५४ ॥ अथअ
रिहंतगुन ॥ दोहा ॥ छीयालीसोगुनसहितनहिंअष्टादशदोय ॥ कर्महनेंअरहंतसोपूज्यकयावैमोष ॥ ५५ ॥
चौतीसेंअतिसैसहितप्रातहार्यपुनिआठ ॥ अनंतचतुष्टयगुनकरैछीयांलीसमुषपाठ ॥ ५६ ॥ छीयालीस
कोंनभनहिअनंतचतुष्टयवांन ॥ सोसांमिनकोकेवलीमुनिअरहंतपिछांन ॥ ५७ ॥ अतिसै ॥ अतिसरूप
सुगंधतननांहिपसेवनिहार ॥ मधुरवचनअतोलबलरुधिरसेतआकार ॥ ५८ ॥ लछिनसहससहअष्टतन
समचतुरसंस्थांन ॥ वज्रऋषभनाराचजुतजनमतयेदशजांन ॥ ५९ ॥ शुभथिसतजोजनविषें ॥ गगनगम
नमुषचार ॥ नहिंअदयाउपसर्गनाहिंनग्रासीकमलअहार ॥ ६० ॥ सवविद्याईश्वरपनोनाहिंवढेनषकेश ॥
अनमिषदृगछायारहित ॥ येदशकेवलवेश ॥ ६१ ॥ देवरचितहैंच्यारिदशअर्द्धमागधीभास ॥ आपसमांहीमि
त्रतानिरमलदिसआकास ॥ ६२ ॥ होतफूलफलरितुसवपृथ्वीकाचसमांन ॥ चरनकमलतलकमलदलमुष
तेजेजेवांन ॥ ६३ ॥ मंदसुगंधवयारपुनिगंधोदिककीवृष्टि ॥ भमिविषैकंटकनहींहरषमईसवसृष्टि ॥ ६४

धर्मचक्रआगेरहैफुनिवसुमंगलधार ॥ अतिसैश्रीअरिहंतकेयोचौतीसप्रकार ॥६५॥ अथप्रातिहार्य ॥ तरुअसोककेनिकें
टमेसिंघासनछविदार ॥ छत्रतीनासिरपेलसेभामंडलप्रसतार ॥६६॥ दिविधनिअननतेखिरेपहुपवृष्टिसुहोय ॥ ठारैदे
सठचमरसुरवाजेदुंदुभिजोय ॥६७॥ अथअनंतचतुष्टाय ॥ ग्यानअनंतअनंतसुखदरसनअनतप्रमांन ॥ बलअनं
तअरिहंतसेइहुखेछवपहचांन ॥६८॥ अथअष्टादसदोष ॥ जन्मजरातिरखाक्षुधाविसमैआरतिखेद ॥ रोगसोगमदमो
हडरनिद्राचिंतास्वेद ॥६९॥ वैरप्रीतिमलज्ञायवोयेअष्टादसदोष ॥ नांहिहोतअरहंतकेसोछविदायकमोष ॥७०॥
मांनुषपर्वपंचेंद्रियात्रयपदभगनथांन ॥ वीतरागअरिहंतपदतीर्थंकरपहचांन ॥७१॥ ऐसेगुनतेकालिनछविके
वलथावरामांनि ॥ समोसरनजुतकेवलीजंगमप्रतिमांजानि ॥७२॥ नामथापनाभावद्रव्यलाधियेगुनपरजाय ॥ अ
ह्योंसयअरिहंतकेपरजतपातिकजाय ॥७३॥ आगमोकजोनामजिनकरिठचारमुषसोय ॥ द्रव्यचहोंडेसिरनमेनाम
निक्षेपाजाय ॥७४॥ व्यारिसंघतेंसाथितेनिराकारसाकार ॥ सोथापनअघहारतेजेआगमोकोविस्तार ॥७५॥ ज्ञाति
यआगममेसर्वहैहोंनहारअरहंत ॥ द्रव्यनिक्षेपाजांनिजिनकरोभजनकुलसंत ॥७६॥ वर्त्तमानकेवलसहितसमोसरन
जुतहोय ॥ पूजतसुरनरनागपतिभावनिक्षेपासोय ॥७७॥ अथसिद्धगुण ॥ सोरठा ॥ सम्यकदरसनग्यान ॥ अगुरुलघु
अवगाहनं ॥ सूक्ष्मवीरजवर्द्धन ॥ निरवाधागुनसिद्धके ॥७८॥ दोहा ॥ गुनअनंतकेचौदराविधेसर्वकर्मकरिनास ॥ तंदे
आठगुणसिद्धकेसमैमतांहिसिववास ॥७९॥ जिनमुद्रानिरगंथागुरुमुनिजगकेहितकार ॥ ताकेपदद्वैतीनतिनवरनोगुन

विस्तार ८० दिख्यासिख्यामैंनिपुनप्रायश्चितपरिहार। धरैंसंघआचारप्रवर्तनआचारिजअनुसार ८१ पढैंपढावैंअघहरैउप
ध्यायमुनिराज। ध्यांनधरैंमुखमौनगहिसाधकैंनिजकाज ८२ तीनोंपदनिनराजकैंछठैंसातवांमांहि। साधपद
मांगुनथकीहूपदउगुनत्तोपांहि ८३ ॥ अथआचारिजगुण ॥ द्वादसतपदसधर्मजुतपालैंपंचाचार। षटआव
सित्रयगुपतगुनआचारिजपदसार ८४ ॥ अथउपाध्यायगुन ॥ चौदापूरबकौंधरैंग्यारैंअंगसुग्यांन। उपाध्या
यपचीसगुनपढैंपढावौंपांन ८५ अथसाधुगु ॥ पंचमहाव्रतसुमतिपनइंद्रीपंचनिरोध। षटआवसिमंजनत
जनसयनभूमिकौंसोधि ८६ वस्त्रत्यागकचलौंचफुनिलघुभोजनइकवार। दंतनधावननाकरेंठाढेलेयअहा
र ८७ तीनोंपदमुनिराजकेअठाईसगुणयांहि। जिकासाधहीमैंमिलैंतिनकौंकहावनांहि ८८ दशप्रकारसं
प्यत्तकैयहुरिपंचविधिउपांन चारित्रतेरभेदजुतअठावीसप्रमांन ८९ सिष्यप्रश्न कहासाधकागुनवि
धरउत्तनपांनप्रधांन कथ्यकौंनसुमुनिमैंताकाकहोबखांन ९० उत्तर चौपही नांनांमुनिउपांनीतपवा
नतिनकैसमकितकानप्रमांन। समकितरहितसाधनहिंहोय। विनासाधकेवलनहिंजोय ९१ दोहा द्रवि
लिंगीसमांकितरहितभिवनजायसुरहोय। किंनपहचांनेनिरथिकाविमांनैंपजलोय ९२ जांगोजिनमतवि
वनानसैसाधुरमतीकिनिथ। वीतरागकोवेदयिकैनमिवोहीहिरदय ९३ तयाप्रश्न। पंचमहाव्रतकेविखैवस्त्र
त्यागकह्यानांहि। वस्त्रत्यागफुनिकौंकथासोसंसेमनमांहि ९४ उत्तर वसनसहितजिनआर्जिकाधैरमहाव्र

तपंच ॥ वसनसहितमुनिनांहियोंवसनत्यागफुनिसंच ॥ ९५ ॥ वहुरि ॥ प्रश्न ॥ धरेअर्जिकावसनज्योंअपल्पधरैकोपीन
वेहमहाव्रतसहितकैयोंअपल्पहोयकौंहीन ॥ ९६ ॥ तथाउत्तर ॥ उतमश्रावकममततेराषतहेकोपीन ॥ सक्तिवांन
ह्वैनातजेयोंमहाव्रतेतेंहीन ॥ ९७ ॥ वसनधरेअसमर्थह्वैनांहीममतअपांन ॥ येपउपचारमहाव्रतीसहितअर्जि
काजांन ॥ ९८ ॥ चौपई ॥ महाव्रतछठमगुनहेसोय ॥ पंचमगुनमेकेसेहोय ॥ पदमपुरांनवंदेमेंकह्योमहाचरत
सीतानेगह्यो ॥ ९९ ॥ मुनिज्योंअसनतपस्याग्राहे ॥ अरजीसकलपरीसासहे ॥ असकिहोयरापेइकचीर ॥ भा
वितमहाव्रतीगंभीर ॥ १०० ॥ दोहा ॥ समकितमांहीकहतहेंभेदसुकारनकाल ॥ गुनस्थांनदृष्टांतनिधिकथन
लचलाचलसाल ॥ १ ॥ अथसमकितकेभेद ॥ भेदहोतसमकिततनेंदशविधित्रियविधिसुजांन ॥ पहलैंदश
विधिकहतहूंकारनकथनविधांन ॥ २ ॥ नांम ॥ चौपई ॥ आग्यामारगफुनिउपदेश ॥ सूत्रवीजसंक्षेपविसे
स ॥ अरथकीरतअवगाढ ॥ दशमोहेपरमअवगाढ ॥ ३ ॥ जोजिनभाषितसोसवसांही ॥ आग्यासमकितमे
इमकही ॥ अशुभत्यागशुभमारगलागे ॥ मारगसमकितयाविधिजागे ॥ ४ ॥ मुनिपुरांनसरधाउरआने ॥ सोसम
कउपदेशवषाने ॥ आचारांगग्रंथकीसरधांन ॥ जोसूत्रसमकितपहचांन ॥ ५ ॥ बीजसमकितीतीलसरधांन ॥ बीजभत
सुनितत्वअनुपांन ॥ लखिपदार्थलिअलपविधांन ॥ सोसंक्षेपसमकितीजांन ॥ ६ ॥ द्वादसांगसुनिपरगटहोय ॥ नां
मविसेसविसमकितीजोय ॥ परकीरननेंजोसरधांन ॥ अर्थसमकितीसोयपहचांन ॥ ७ ॥ अंगवाह्यअरुअंगप्रमांन लपि

अवगाढकेरुद्धिवांन ॥ केवलनिरेषेसवपरजांम ॥ सोपरमावगाढवत्ताय ॥ ८ ॥ दोहा ॥ भेदतीनसम्यक्तमुनिक्षायकसु-
कसरूप ॥ षेउपसम ॥ फुनिउपसमीतेसेभेदअनूप ॥ ९ ॥ अथकारन ॥ चौपई ॥ क्रोधलोभमायाअरुमान
अनंतानकीच्यारभयांन ॥ प्रकतिमिथ्यात्तमिश्रमिथ्यात्त ॥ गिनिमिथ्यात्तमोहकीसात ॥ १० ॥ सातोक्षयनेक्षाय
कहोय ॥ सातोंउपसमउपशमजोयकछुउपशमकछुक्षयह्वैजाय ॥ कछुकउदयेषउपशममांहि ॥ ११ ॥ अथ
सम्यक्तकथन ॥ दोहा ॥ सर्वकालसम्याकितसरधनागनिषसायेक्षा ॥ गतिनरसुरनारकपशुभाष्योकेवल
दृष्टा ॥ १२ ॥ अथसम्यक्तमेगुनस्थांन ॥ चौथागुनथांनकथकीप्रगटेसमकितत्तीन ॥ क्षायकजांनिअजोग
लेयवहुरिसिद्धगतिलीन ॥ १३ ॥ गुनस्थांनहैग्यारवौंजोउपशांतकषाय ॥ तालोउपशमपाईयेवहुरिपतन
ह्वैजाय ॥ १३ ॥ अप्रमत्तगुनसातवांतालौवेदककजांन ॥ येरपरामताभावकोहोयच्यारिगुनथांन ॥ १४ ॥ अ
थसमकितकेदृष्टांत ॥ विनततायज्योभस्ममेंअगनिपरजलैनांहि ॥ त्योनउदेमिथ्यातफुनिक्षायकसमकि
तमांहि ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ ज्योंकजलनिर्मलाढादपवनजोगप्रगटेंकाहीनि ॥ त्योंकषायउनमाद ॥ उपशमनजिमिथ्या
तहै ॥ १६ ॥ दोहा ॥ विनततायवसमीकहैससमकदुकठताय ॥ त्योंथेउपशमशमाकिंतीवरतेंअरसभाय ॥ १७ ॥
अथास्थिति ॥ जियानीस्थितिसमभावहैत्योषिअयाठिगुनथांन ॥ तीनंसमकितकीसुनोअंतरमहूरतमांन ॥ १८ ॥
क्षायककीथितिमोक्षमेजांनिअनंतानंत ॥ जियसंसारीक्षायककीताकासुनिविरतंत ॥ १९ ॥ भनिसागरतेतीस

फुनिआठवरसकरिहीन ॥ दोयकोडिपूरवअधिकअंतरमहूरतमांहि ॥ २१ ॥ अंतरमहूरतादिनवरसआठहोतयपू
हीनकोडिपूरवकीआउजंगितिथिसर्वारथसिधिलीन ॥ २२ ॥ सोसागरतेतीसतिथिफुनिमांनुषतेआय ॥ नरहं
कोडिपूरवविषैगहिदिक्षापासिवजाय ॥ २३ ॥ याविधिजांनंतीनभवअरजोदेयैदान ॥ तेखिचायगिनिभोगनं
च्यारिभवोनिरवांन ॥ २४ ॥ उपसमलब्धिकेजोरतेंकोउत्तमनितिथिधार ॥ परावर्तपुद्गलअरधवकुरितेजेसंसार ॥ २५
उपसमश्रेणीजियधेरइकभवमेंदोवार ॥ अर्द्धपुद्गलपरावर्तमोजानेंयाविरियांचार ॥ २६ ॥ उपशमअंतरमहूरतनि
थितिअधिकारहेनहिकोय ॥ नदभैवासिवद्धकलट्देअरद्धपरावर्तसोय ॥ २७ ॥ येउपशमउत्कष्टतिथिछाछठिसा
गरहोय ॥ दोसागरपटलैसुरगानवमेंछाछठज्ञोय ॥ २८ ॥ अष्टादशतिथिउपारमेंफुनिअष्टमग्रीविक ॥ साग
रतीसतनीगहैगिनोकोडिकेटेक ॥ २९ ॥ जोइनसागरआयमेंकछुककालदहीन ॥ सोयेउपशमसमकिती
मांनुषभवधरिलीनं ॥ ३० ॥ फुनिइहजीविधिइहविधेछाछठिसागरमांनि ॥ दोयवारसोधर्ममेंसागरच्यारिसु
जांनि ॥ ३१ ॥ सातअांनतोजसुरगब्रह्मविषैदशबीसचोदाखांतवसुगमेंअंतिग्रीवइकतीस ॥ ३२ ॥ अथअव
लबलआयत ॥ बंधउदेसत्ताविषेकरप्रकृतिकोनासमिटैनस्थापकथिसरैपरूचावेसिववास ॥ ३३ ॥ सत्ता
कोमेटिनसकेकरैउद्दआक्काद ॥ उपशमतेंअनिरमलरहधारेवकुरिवियाद ॥ ३४ ॥ परमनसागेद्वैकीजिनमतमें
अनुराग ॥ निजदेवागमगुरविषेममपरकरैविभाग ॥ ३५ ॥ अथसम्यक्तीकालिंगभेद ॥ लोकराजअविक

द्वादशकालवमजोगि ॥ पदभखनधोरेइसाज्ञारहितमनोगि ॥ ३६ ॥ अथव्रतीजिनमतकेतिनकाचिह्न ॥
चोपई ॥ नगनमुनीजिनमुद्रालीन ॥ उत्तमश्रावकजुतकोपीन ॥ एकअर्जिकाराधेचीर ॥ चौथाभेदनज्ञांनवीर ॥ ३
६ ॥ अथचौथागुनथांनप्रतिचौईसठान ॥ तिरसकायपंचेंद्रीजांनि ॥ च्याहोंगतिभावसैनीआंनि ॥ तेरेजो
गअहारकविनां ॥ तीनवेदअसंज्ञाजिनपनां ॥ ३७ ॥ मतिश्रुतिअवधितीनसुपांन ॥ विनकेवलदर्शनसव
ज्ञांन ॥ घटलेश्यापाइकईसकषाय ॥ अनंतानवंधीनवताय ॥ ३८ ॥ नांमज्ञांनिअविरतगुनठांन ॥ क्षायकउपश
मवेदकमांन ॥ जीवसमाससंचेंद्रीजांन ॥ पाउपापतायटजुतप्रांन ॥ ३९ ॥ सवसंज्ञा उपाथ्ठवविधिउपयोग ॥
नांहिअहारअहारसंजोग ॥ लाखछवीसजौनकोजोर ॥ इकसोसाठयटकुलकोर ॥ ४० ॥ आरतिरुद्रआठ
विधिजांनि ॥ भदहोयधरमकेआंन ॥ आगपाविचेअयायसुजांन ॥ आविरतमांहीदशविधिध्यांन ॥ ४१ ॥ आस्र
वयठचालीसयंजोग ॥ द्वादशअविरततेरेजोग ॥ फुनिइकईसकषायमिलाय ॥ येतेचौथेथांनकथाय ॥ ४२ ॥ दो
हा ॥ थावरत्रसविकलेन्द्रयाअभविअसमीप्रांन ॥ लब्धअपर्जेसंजमीकेवलदर्शनज्ञांन ॥ ४३ ॥ अनंतानकीचो
कडीकायअहारकदोय ॥ पंचभेदमिथ्यातकाअविरतमेंनहिंहोय ॥ ४४ ॥ अथवंधउदेविकृतिचौथागुन
ठांने ॥ चौपई ॥ वंधसतेत्रिअविरतथांन ॥ तियांलीसअवंधसुजांन ॥ वधविकृतिदशपरकतिजोय ॥ ताका
कथनसुनोअवलोय ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ अधिकवंधअविरतवियेतीनामिश्रतेथाय ॥ तीर्थंकरपरकानिवद्वरिदोमां

सुयसुरआय ॥४६॥ अथबंधविधैविकुति चोपई ॥ क्रोधलोभमायाकुनिमांन ॥ अपरत्याख्यांनीचारिबखांन अ
तिअरुआनपुरवीआय ॥ तीनंसंमानयतनसुभाय ॥४७॥ ओदारिककोअंगउपंग ॥ ततओदारिककायसंघ
ण ॥ संघनवज्रऋषभनाराच ॥ येदसविकुरतिअविरतसांच ॥४८॥ अथउदै दोहा ॥ उदैयकसौचारिकाउदे
अठारेनांहि ॥ उदैबिकुतिसतरासहै अविरतथांनकमांहि ॥४९॥ बिकुतिअनउदै मिश्रमेतानबीसपहुचांन
तामेनिकासिअदेमई पांचचतुरथैथांन ॥५०॥ गिनियकसमाकितमोहनीआंनपुरवीच्यारियोअपरादउआन
उदैअविरतमांहिसंभारि ॥५१॥ उदैविकुति ॥ आनपुरवीआयुगतिनरकदेवअटजांन ॥ कुनिमांनुषतिरजं
चदोयआंनपुरवीआंन ॥५२॥ बिक्रयअंगउपंगअरु बिक्रयदेहप्रमांन ॥ क्रोधलोभमायागरवु च्यारिअप
रत्यारव्यांन ॥५३॥ अजसअनादेदुरभगीसनरापकातिजोय ॥ चोथातेपंचमगहतनबेविकुरलेहोय ॥५४॥ अ
थसतर ॥ इकसौअठतासीसकीसत्तात्रअविरतपाय ॥ तीर्थंकरनामामिलै नीविकुतिरगारकीआयु ॥५५॥ अ
थशुभलक्षण ॥ त्यागगहनमैजोगीनाजिनप्रभावनाभाव ॥ मरभीजिनमतरहासिकाधीरजधरेउछाव
॥५६॥ अथअशुभलक्षण ॥ लोभीपारिजनकाजको भोगीविकथालीन ॥ तिथिबांधेविकलपरचैवनैकप
टतेदीन ॥५७॥ करमप्रबलवैवासिपरेसुनरचौथेथांन ॥ देशव्रतपागअव्रतनांधरैजिनपुजैदेदांन ॥५८॥ सोरठा
वंदेभागहैताहि ॥ जोनिजघरपर्जउप्रभ ॥ अरसांमाथिजोंनांहि ॥ तोमंदिरजापुजिहै ॥५९॥ जोनरनारीकोयजिन

वरनितिप्रतिपरजिये मिथ्यामतीकनिव्र आगामोक्षमांनेनजो ६१ वंनेनप्रजमहांनविभोत्रायवीरजुनअल्प
प्रज्ञोप्रभुसुपांन निरफलमतिथोवोजनम ६२ लीजेसीसचटाय गंधोदिकअरआसिका दीनैमैरगा
लाय श्रीपालन्रपसिरधरे ६३ पंचामृतअभिषेक अतियविस्त्रविकरिकरो मासुकजलहीयेकअ
नसरजैकरताभला ६४ ॥ छप्पय ॥ ननकीवाधाभांनिकनैउद्योतकहावै धोतीदुपटाधोरिप्रभअभिषे
कचावै जालचंदनकसमीरघसैतंदुलधोलावै मिष्टसाध्यैनधानरधनईवेदवनावै सुकसुगंधफल
फलअतिहरितसुसकरधारिके जोयदीपघृतधूपतैंप्रजोजिनअघटारिकै ६५ ॥ सोरठा ॥ कीजैनांदी
ह्मांन दांनानिरंतरादीजिये पात्रभात्तिप्रधांन दुष्यातकीकरनांलये ६६ आरसवांअज्ञांन चरिविनानतकि
वाकैर कैरनप्रज्ञादांन ऋढनाआयऊपजगठ ६७ ॥ इतिचतुरथगुनथांनकथन ॥ अथपंचमगुनथां
न ॥ चौपई ॥ उदैपरत्याअपातव्यांन सबजियजांनेआयसमांनआतमलीनप्रतंगपावांन देशव्रतीपचम
गुनथांन ६८ दोहा धेरगुनइकईसकौतजेअविषयाईसहैरविसनलेमलगुनजितनाबिनमैनसीस ६९
॥ अथइकईसगुन ॥ लज्जादयाप्रसंनचितसौमदिष्टसंतोष्यगुनग्राहीउपगाररतापरनिंदाकनपरदोष
७० प्रीतिसबनमैश्रुघपष्टिगोरवदितिभिनवेन क्रियावांनपंडितरसिकप्रपानीधरमीजैन ७१ नांअभि
मांनीदीननहिमाधिविवहारीवांनी विनैवांनश्रावकगृहीगुनइकईसनिधांन ७२ ॥ अथबाईसअ॰

भिख्या ॥ पीलूपीपरउंबराकठूंबराबरजो२ ॥ मदिराअभिखफुनिसहितमिलतदुलतेंघोल ॥ ७३ ॥ फलअजानवि
षमत्यकावस्तबस्वतरसज्जोय ॥ विनतायाघतरुलनिया ॥ सीतजम्याजलहोय ॥ ७४ ॥ दंताबोलाअलफलफ
लनिसिभोजनसंस्थांन ॥ कंदमूलबहूबीजफलताजिवार्इसअखांन ॥ ७५ ॥ अथवनासपतीप्रतिजीवई
कास्थान ॥ मूलकाटदसफूलतुंबावीजपुसपयेसाम ॥ यनमेंजीवजुवादयादपादयाकरोनाथिआत ७६
॥ अथयगहिंसाकर्म ॥ चलाचाकीऊखलीजलघटहारनिहार ॥ गेहीकेथरकर्मअघकीजेजतनाविचार ७
७ ॥ अथवात्याप ॥ चर्मपात्रकेमध्यकहिंगतेलाघत्तवारि ॥ वीध्यानअनजालबिनछूपावासीरोटीदारि ७७
अनमगादिकसावतासावाफलपंगादि ॥ वरकुसमअरसाकदलश्रावककोनहिवादि ॥ ७८ ॥ जैसेजियेकव
मेमेंधरियेचतजलतेल ॥ जैसेजियउपजतथनेंदोयघटीकेमेल ॥ ७९ ॥ चलनलहोवजारकावाधिकानप्रमानक ।
जचालगीताघडीसपरसचर्मसुजांन ॥ ८० ॥ चाकीधंगाकिवारमेंनिस्वकुपाकीन ॥ दिनमेंच्यारिपिसायचकेन
चिढुरीतिवीन ॥ ८१ ॥ मुनिमरजपादाधंनकीसीतकालदिनसात ॥ गरमीमांहीपांचदिनतीनदिवसबरसात ८
२ ॥ बांडच्यासनीसीरनीख्यापटूरकीजागि ॥ भाजीरोटीदारिहूंदोयपहरलौंभोगि ॥ ८३ ॥ बिनछान्यांजलके
गलीयीवतसतापाय ॥ सोगांवनकेदाहतैंजेतोसंताप ॥ ८४ ॥ गांठपरदुहरायकीवारिछांनिकैपीवसुविधिजि
वान्यांकीजियेधरिकैदयासदीव ॥ ८५ ॥ छांनिलीयाजलतैंहूघटीउलंकीयावसुजांम ॥ अंग्पदूव्यतैमिश्रजलदाय

पहरकाकांम ॥ ८५ ॥ दोयघटीकाचाढ्यांधउद्धकेजांमअनुभचार ॥ दलीक्काछिदिनदोयतीनौघाजोणाधीविचार ॥ ८६ ॥ वरनवा
सपिलौसतेवैकुंटैजोगिन्नजोग ॥ मोदकमेवातेलघृतजीवाप्लीतरसभोग ॥ ८७ ॥ राईलौनमिलायदहीवाडेखाटा
राव ॥ तजेजोजलेखांदधिसुगुडमुखावारिगुलाव ॥ ८८ ॥ साधरमीतेविनकीयाभोजननांहीलीन ॥ लोजेमुखवा
सादूयदोयजांमकाकीन ॥ ८९ ॥ चलताल्लकरीमूलाखिवौदिनमेंअणगानिजनाय ॥ सुविधिवनप्यप्यादूयेनीसिकाकी
यानयाय ॥ ९० ॥ लेनादेनाजोगिनहियाअदमननिजनाहि ॥ जोकिरियआनेंनाहामअपनेमनमेंनाहि ॥ ९१ ॥ जिनमतकैरे
अमादिकोजेविसदेखनिपात ॥ सोत्रसथावरजीवकाघातीगहेमिथ्यात ॥ ९२ ॥ वसनअसनपातरवपछीवतपापमदं
न ॥ रजस्वलातियचारदिनअंतजवतपहवांन ॥ ९३ ॥ प्रद्युनरतैअपेपरेलोहूपानफैंधाय ॥ धोसपांचवेसनातेतरनसु
ल्यासुधथाय ॥ ९४ ॥ द्वादशामहाजनपार्श्वहिजेसदरपदरेजांन ॥ रूपपतनकेदशादिवसमतरकालप्रमांन ॥ ९५ ॥ अ
थदिवचर्या ॥ दोहा ॥ प्रातउठिजसंझ्यांनिकेतनकीबाधाभांनि ॥ मुखधोदातनुनांकरेवंदेजिनदांन ॥ ९६ ॥ वकुरि
न्हायउजेरवसनाकिनलीपांतनधार ॥ निरजनथांनकदेखिकेसामायकलेसार ॥ ९७ ॥ चौपई ॥ जलचंदनतंदुल
पहुपार ॥ दीपधूपफलअर्घसुचारु ॥ वसुमंगलउपकरनसरूप ॥ विविधिजानिचानिजअनूप ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ जोय
हिंसापालाहनाजोनाहिभोजनसेस ॥ जोनाहवीधधाचालितरसअरसाद्रविलेवेस ॥ ९९ ॥ जिनमंदिरजावस्तु
कोमिलेजतनसवारितैंसपरसेहीनानिवारिकैजियकीहिंसाटारि ॥ १०० ॥ प्रथमजिनालयजायकेलखिदरसन

जिनदेव॥ करिअष्टांगअनंतमकोतीनप्रदक्षिनादेय॥१॥ दोकरदोयदयेकसिरमनवचकायसुयांन॥ भूमिविषेदंडवतनमनसे १
अष्टांगविधांन॥२॥ पंचकल्यांनकमेसुनेजेजेकारनकाज॥ तेजिनकुविषेध्यांनधरिलाठीयसमेसमाज॥३॥ तनम
नवचनपवित्रकरिआगमोक्तपाठिपाठ॥ जिनन्हावनकरिपूजीयेराचिउकादहकेठाठ॥४॥ बहुविधिजिनवरस्तुति
पटिफुनिजिनआगमपदाजि॥ जिनमतगुरपदपूजियेकरितत्वनिकोविचाजि॥५॥ स्वाध्यायकोकीजियेजोगुरदीयाव
ताय॥ फुनिइंद्रीअरप्रांनकेतेनीजिसंजमध्याय॥६॥ उक्तंच॥ श्लोक॥ देवपूज्यागुरूपास्ति॥ स्वाध्यायसंजमंतपः
दानंचेतिगृहस्तानां॥ षटकर्मांणीदिनेदिने॥१॥ दोहा॥ जथासाक्तिव्रतग्रहनकरिबहुरिनिजातनयत्नायथ
थिपात्रनकंमोक्तेदांनआरिविधिध्याय॥७॥ एकेषटकमउकृष्टताकरिपरनबुद्धिवांन॥ बहुरिअर्थसाधनकरै
भोजनजोगपिछांन॥८॥ अथजिनमंदिरमेअसेकारजनाहीकरनं॥ पांचोइंद्रीनिकोविषयसउपासेननिद्वार
सोकहांसिविकथाक्रिथाक्रियविक्रयविवहार॥९॥ थकगारिकरकसबचनअसुचिनिउमदपांन॥ सुरत
दिकांक्रीडाअधमजिनमंदिरतजिपंन॥ अपकअरलीनकर्म॥ बाधीकेरनदाहदयेलेकोलनांहि॥ हदतडाग
फोडेनदीनादोदेवनमांहि॥१०॥ दंतकेसरसकुपलाकोलाप्दलफलफूल॥ पशुअकिरायगानिकाकरजथानिब
नक्रेसल॥१२॥ दासीपशुक्रयविक्रयानीलकसंभालआल॥ लोहलाषमलकरीधिरमसावनआदीबाल॥१३
प्रांनहरनमदुराादिविषमक्षवांमाद्दिकथारि॥ जिनमतकेअभिषपुनिवीधाथांनातिलादि॥१४॥ श्रावकके

कुलपायकेकुविनजअतेनिवारि ॥ सुविनजकरिआजीवकाजोपकपदकंडारि ॥ १५ ॥ करतकरतआजीविकारहतघो
सत्रअबसेस ॥ लेपस्वादिकखायकापादत्तत्यागनासीचेस ॥ १६ ॥ थांदिसमेजिनव्रविनिराधिकेप्रमरधीजाय
धेरअवनुगुरकेवचनहरेआपकपाप ॥ १७ ॥ बहुरिआपअपनेसदनदेपरिजनकूजाव ॥ पोढिरहेनिजसजेपेप
रतियकालहिसाव ॥ १८ ॥ जिथासाक्तिसाधनकरेधर्मअर्थअरकाम ॥ करेनदीविपरीतमतगहेदयावसुजाम
१९ ॥ वरन्याश्रावकआचारनयासंक्षेपविधांन ॥ ग्यारेप्रतिमायाहिमेताकासुनोवषांन ॥ २० ॥ कर्मप्रोक्षनिज
ध्यांनहै ननतिथितेह्वध्यांन ॥ सोजलतिथिश्रावककरेदेभोजनदांन ॥ २१ ॥ वनिविरक्तमुनिवनवसेरहतास
दनसुषदांन ॥ उदासीनगेहीरहेआचिरजघरतमहांन ॥ २२ ॥ ह्वेउदाससंसारतेपालेव्रतपचथांन ॥ संजमकी
उतपातिजाहांप्रतिमाताकूजांन ॥ प्रतिमानाम ॥ दरसनव्रतसामायकीपोससचितत्यथांन ॥ दिवसनारिनि
सिनाअसनब्रह्मचर्जपरहथांन ॥ २३ ॥ निरारंभनिरपरग्रहीअनुमतत्यागमहांन ॥ उपरसतकायरिहरलगपारे
प्रतिमांज्यांन ॥ २४ ॥ ग्यारेलोअनुक्रमसहितश्रावकचढतपुनात ॥ भंगअनुक्रमनाचढेचढेगिरेसुअनात
२४ ॥ यहलोश्रावकजघनिगिनितवत्तोमधमवांनप्रातिमदशमीग्यारमीश्रावकउत्तमजांन ॥ २५ ॥ अथ
प्रथमदर्शनप्रतिमां ॥ कुंडलीया ॥ सेवतप्रभअरहंतकोधर्मदयामयजांनि ॥ सर्वसंगत्यागीगुरूमांने
दर्शनवांन ॥ मानेदर्शनवांनआतमापुदगलन्यारा ॥ नेपीमांनषिकोनसातततनिहविधारा ॥ वरव्रतभाव

करैनमैनाहिंआंनकुदेषत आठमलगुनधरैविनसातंनहिसैवत २६ अथआठमलगुन दो पीपरबबरकलुबाअरुचर
पीलूंपांच मधुमदिराआमिषअनआठमलगुनसंच २८ अथविसनंनाम दोहा जंवाआमिषयरतिय
वेस्याचोरासिकार मदिराजुतसातांविसननसेवतनरकेतयार २७ कुंडरिलिय जंवाकयछुनबोलियेसबविस
नकोमस्त तुरतमिलावैआपदापतिप्रिनकासमतल पतिप्रिनकासमतलगारिमुखसहजेसुनिये कोसप
तजोकोटिधीजताकीनहिगिनिये कुलकेसज्जनकेहभयातंहमसंमवा अवघरमेमतिरहेअंतकछुभासिं
जला २९ आमिषकमिकुलकालेतदेकयहुनहोतअदोषनिपटनिंदआसुखावनोंतहापापकाकोष म
हापापकाकोसज्जांनिधरमीजनछाडेरा नायकनकीनिंदासजोगातिनषांनमाहा षषषायबननसेतुष
रूररहेअनामिष जेसेतींबिनिमारिअधमनरकाटतआमिष ३० नारिपरप्यारीबहेकुलकीलाजगमाय
निसिदिनचितचितवतरहेंकवसंगमहेजाय कवसंगमहेजायतहायाकासुनिधज्ञात मिलेमोंतअवि
रुद्धसमनकीचाहिपरजत सुनतराजपतिलेतषोसिधनकरतखुवारी परभोनरकनिवासतजोपरनारिअना
री ३१ गनकामनतिरषतसेपरसतधनहरिलेत भोगकियेरणीकेरहीनभयेतजिदेत दीनभयेतजिदेत
प्रीतिजाकीनाहिसांची चहुपुरसनकीफहानिलजहुघरघरनांची जेसीअधमतेंप्रीतिकरतछेकतनमनति
नका परभोंभोगनरकिरुद्धलोहेकीगानिका ३२ चोरीसचितकुनुषतकैरचितवतनअहितिसापात प्रगटन

भोगे संपदा जांनि परे अनपात ॥ जांनि परे उनपात रूपा विपरीत वनावे ॥ कारो मुख करि काढि मेंढि सिर गधे चढावे र
हासव मिलि करे निरधि जाके संगाथी री ॥ प्रचुर कष्ट भोग्यायन किलेजा वे चोरी ॥ ३३ ॥ वन में वसती ति जिवसै नि
र्धन वसत रहीन ॥ चोरी करे न्याकरी घास चरे मृगादीन ॥ घास चरे मृगादीन तेन पै आयुध साधे ॥ करे क्रू
र चित्त प्रांन पारके प्रांन विराधे ॥ ताके फल ते असुभ भोग भोगे नरकन में ॥ नेक स्वाद के काज अधिक जो पिरे दुव
न में ॥ ३४ ॥ पीवत मद विषई अधम ठावत अपनापांन ॥ जोगि अजोगि न जांन ही हो तां विकल तन प्रांन ॥ हो तां
विकल तन प्रांन नारि निरखे ही दीरत ॥ चाल्वे वाकु कुचाक जांनि जननी निज औरत ॥ ठांनि असुचि विपरीत न
हिं सुध जन नाहि छीवत ॥ हीन सदन में वनी रासि कामि धिक जे पीवत ॥ ३५ ॥ छप्पय ॥ संपक दरसन गपान चारि
त सिव मारग केरा ॥ जन में के विरत था न वढे अनुक्रम थोतेरा ॥ आदि अराप व्रत लहे ढुवे दोप परि प्रातिमा ने सो वढ़ु
रि म्हा व्रत गहे चवे अनी ह्यार दुआलो ॥ प्रवने संजोगा संगुन उह्रांच तुष्य पंत पीर ॥ तहां पाप्याटि केवल नंद ईंन जांनु वी
जि सुष अनुसरे ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ काल अनंतानंत सो रहै सु थिर निज मांहि ॥ लोका लोक विलोक ता उपजे विनस
मांहि ॥ ३७ ॥ सान नन्व परभांन धरि विसन न सेव कोय ॥ आठ मूल गुन संग्रहै सु रष्टु निस्रिव त्याय ॥ ३८ ॥ अ
थर जी व्रत प्रतिमा ॥ पाले पांच इ अणुव्रत धोरे गुन व्रत तीन ॥ सिक्षा व्रत च्यारो सहित सो प्रतिमा व्रत लीन ॥ ३९ ॥ चो
पही ॥ जग सुभाव कुं वारंवार गाहि विराग चिंतवन करे विचार ॥ माया मिथ्या वहुरि निदांन ॥ ना चितै वय रतीवुद्धि

वांन॥४०॥ज्ञानिजीवतेंमैत्रीभाव॥गुनीदेखिहरषेकरिचाव॥दुखितकीकरुनांउरधरै॥दुष्टनितेंमाध्यस्ताकरै॥४१
अथपंचव्रतनाम॥दोहा॥हिंसाअंनृततसकरीअब्रह्मपरिग्रहभार॥येकदेशत्यागवेपंचअनुव्रतधार
॥४२॥कृतकारितअनुमोदनांमनवचतनकरित्याग॥व्रतीदोयजोकरतहैजावतजीवनत्याग॥४३॥लोकलाज
जनपदारथकीर्तिजसलोकपनपाय॥अशुभमनआश्रवाविरतिहैतजेतिनमतिआय॥४४॥महाव्रतीसुनिवरतजै
त्रसथावरकाघात॥अरुअव्रतश्रावकथकीत्रसहिंसावाचिजात॥४५॥चौपही॥गेहतिआरंभननाहिंटरड
रतेअनसरतेलघुकरै॥आगनिचननसुपजिभजसनवायधीवहुधत्वोवरतेजाय॥४६॥प्रश्न॥दोहा॥अरां अ
गहीतजेनवकोटित्रसघात॥नाकेयकेसरहैहगयतीवात॥४७॥उत्तर॥उदिमाविरोधीआरंभीकल्पितहिं
साचार॥संकल्पीउदिमीतजेसमाकरेविचार॥४७॥कुंडलिया॥मैंगहीपदमेंशांतिजिनचक्रीअथहरिषेनस
दसुदर्शनआदिवहुअरुअब्रतकहाधरेस्ल॥अरुअब्रतकहाधरेनकाजकीनेपदसार॥फोजतेयप्यापसकथीसे
वाकेधार॥कीयावरमाविस्तारमुनीस्वरपुरानघनेंहीं॥निकोसुरपदलेंहैअनुकंपलसिवगहीं॥४७॥देषी
अंवेकभागपपरागदंडकवकाल॥सांकेतावोगिरदभदीयेनांहीहाल॥दीयेनांहीहालधर्ममुनिश्रावककथ
री॥परंपरागीदृष्टिदिंगनिमोढीहैव्यारिकर्मकुमाईमिस्तीहुनोताकोनपरखो॥तोमसाहरांपहेंसाअवचंतेवद
देषो॥४९॥दोहा॥नपतिसेठकुंडुंजसंदनमनस्नेतेअनुव्रतभार॥करतेनिजपदजीविकाहरतपायाविकार॥५०

५० अणुव्रत धारे गीघने धरे करी म्रगराज। मांनुष जैनी नां धरे वे ऊ कोटि जिहाज ५१ मैरे जेसा पारके थेउ रगाधि विब
र पांचा पाप फंद रितजे सावरती हितकार ५२ अथ हिंसा का लक्षण। पीडि प्राण प्रमादते सो है हिंसा के पाय पर
की हिंसा होन हो निश्चै होहै आय ५३ जाकी हिंसा हिंसा सो करता हिंसक जान। हिंसा प्राणन पीडनां फल हिंसा
अघ थांनि ५४ जो पि प्रताक्षि आगम कथित कृत कारित अनुमोद। या विधि हिंसा होत है का रिज कीजे प्रमोद
५५ जो पिन राज फल सिद्धित परतन्त्र आगोचर नैन। विरल चलत तरस थव मे जन्म मल भाषत आगम जैन ५६ हिंसा
के संकल्प कौं त्याग वरती होय आरंभ उदिम अविरोधक त्याग अनुक्रम जोय ५७ दुक यापयं ते दुःख वरी दंड्रा नि का
संचार। यहीं प्रांनन निज पीडि वे तन मन वचन विकार ५८ जतन साव धांनी नि पडनादि प्रमाकाल सब हिंसा
वनि गई जे पकदां तन ल हि पाय प्रवेश ५९ जहं सावधानी न है वि आसि प्रमाद के मल। हिंसा जिय की ना हुई तउ
पाय का मूल ६० प्रश्न चौपई प्राणा नास प्राणि ना हिनसे तौं मैं हिंसा के सेव से तिय धन हरते प्राण
नसै तौं मैं हिंसा के सब वैं ६१ उत्तर सोरठा व्योहार दृष्टि प्राण। परमारथ ते ऊपयोग है। ऊपाजे पापी डि प्रांन सो
सो हिंसा प्रवर्त्ते ६२ मत काकाठ पथांन। छिद्र बन्धा प्रानी हिनै। जाका याप महान रायजे साधरसाधि
सुनि ६२ यिक वचन पापाय मनत जुत कांच हिंसके। गारि कांठ आय फेरे नही मोरे नहीं मोरे मेर ६३ हिं
सा सो न हि पाय दयास मांन न धर्म की। हिंसा जगसंताप रूपामातै है जगत की ६४ अथ हिंसा के अतीचा

२ ॥ रोकेवांधेनाहिंकछुदीवावकनहिमारे ॥ कानननाकनाहिंकिछुदेंभपतिरषानाविडारे ॥ अधिकन्पायकाबोभलु
दास्नादेनरिंपानी ॥ रांयोहियेविचारहु याधेकोयनप्रांनी ॥ ६५ ॥ कुंडलिया ॥ जोजियबरजनाहहेकोरेत्राणसम
एराजिनकोसिस्त्रारपीडैपेरोषराहियेभार ॥ रांषेसहियभारजुअंतरयोचाव्हत्रप्रहूं ॥ करेविवुधउपगास्नाजचाहडंभ
हूं ॥ करीयहेअभूरेरथिसत्रजोकरिहैसवगरजे ॥ तिरगाचायपयपदेपकाजअेसेसहीसरजे ॥ ६६ ॥ हिंसान्त्रायंचकोमूल
हेनर्कपंथकेत्रनकूल ॥ फुनिहिंसकफुनिनारकीयाहीयाकोसूल ॥ याहीयाकोसूलतलअरागद्वेसाधारण
कालअनंतानंतनिगोदकेभावधारनसवजियअपसमानलषेभाविधारिकेसम्यक ॥ यातेवुधजनतजोवि
यांजेजेहेहिंसामक ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ धर्मअहिंसाजिनकहोताहीकियेभेव ॥ अनततचोरीपरतियाअारंभधनअके
व ॥ ६८ ॥ अथअनृतत्यागकथन ॥ सांचेअथवाझूठजोअप्रशस्तदुषकार ॥ इसावचनकोत्यागनअनृतवि
रतिविचार ॥ ६९ ॥ विनकीनीकीनीकहेहेकीनीकरिनटिजाय ॥ कृतीअनकृतीकहतहैअनततकेपरभाय ॥ ७० ॥ ध
मेकरपीडाहरेइसीरूपमोसाच ॥ सांचनहींवाझूठहैधर्महरेदेखांच ॥ ७१ ॥ झूठनवोलेसर्वथागहेमोनमुनिरा
ज ॥ गहीवोलेदुषहरनतथाधर्मकेकाज ॥ ७२ ॥ अथझूठसरावृतकेअतीचार ॥ अडिल्ल ॥ षोटादेउपदेशअरुक्रिया
रंपतिकीयोस्त ॥ विनांकहीलिषदेतस्वेधनपरकाभोरल ॥ परतनचेष्टादेषिकहेत्याकेमनकीजव ॥ अतीचार
येपांचहसरवत्रतकेरहसव ॥ ७३ ॥ कुंडलिया ॥ हितमितवचनउचारियेलाधिनिजपरउपगार ॥ जहांकछूनहीं

बोलनांबोलेंहोतविगार बोलेंहोतबिगारसरलतारायोमनमें तजोकसमनादुखदेतोममतापरजनमें कहे
इसाउपदेशजेसाकहनांहीउचितं नांतरल्योप्रभुनांमकरोकारिजअपनांहित ७४ दोहा तनमनकीनोदु
खताअल्पबुरीतहकछि वचनदुख्येजगदेरतानिबोलोठीक ७५ ॥इतिदूजाव्रत॥ अथतीसराव्रत॥ जो
लेंवद्रविविनदीयाचोहीलाहियताय जलदुलेनमुनिविनदीयागहीतजेअन्याय ७६ जोजीवनहैप्रांनतें
प्रांनरखधनधान जेपरकाधनधांनलेसोप्रहत्यारांजांन ७७ प्रश्न चोरीपरतियघाततेसत्यागेदसनेंवांन
व्रतपरतमापुनिवेसोलिख्यातावाकहाविधांन ७८ उत्तर प्रथमसमलमातमतेंजेइद्रंतजेनवकोटि अंतराय
कुंवायकेंपरचाटेनहिसोविटि ७९ कुंडलिया धनप्यारोहैप्रांनतेंधनराखैदेप्रांन जोजियपरधनकोहरै पा
होमोटीहांन याहीमोटीहांनिहोतनिजपरकेंग्याकुल जोतानिंदहुमरेमैखोटीगतिव्याकुल मिलेंद
प्रापतिमांनआंनसमताबसुधजेन तजिअनीतमजिनीतिहरोमतिपरकेतनधन ८० दोहा जोदीसा
चाजिनमतीजिनवरआगपामांन आंनवस्तजांनांलहैलयेंमिथ्यातीजांन ८१ मिथ्यातनवेवरमसेकम
ठरूपदकरठाठ निश्चैबिनप्रापतिकठिनामिलेनहेरेमाठ ८२ अथअतीचार अरिल्ल आपपरेधुचोर
ऊधनचोरील्यायो भाताहरकेबाटभलेमेंघोठचलायो जोविविराजकरीतिलतनपतिकेंहांसिलखोवै चो
रीकेअतिचारपांचयाविधितेहोवे ८३ अथअब्रह्मविरति सोरठा दंपतिचेष्टारागमांसेथुनमुनकरनजे

निजपरनीविनत्याग॥ गेहीअव्रह्मव्रततेरे॥८४॥ प्रश्न॥ गनिकाराजीधनलीयेपरतियराजीमोह॥ सोनकहोआ
पराधहेसोभाखोतजिमोह॥८५॥ दोहा॥ नीतिहूतेनिंदावेदोउकुलअकुलान॥ रागवढेतनबलघटेया
समकोउतपात॥८६॥ ग्यांनरहेनहिधर्मकात्यागेसकलउपाय॥ चकितथाकितचितह्वेरहलहेसदाचित
चाय॥८७॥ कुंडरिया॥ नारिनागनिसोंसंमनपयामेंअधिकाय॥ नागनियाभवकेंहरेयाभवभवदुषदाय
याभवभवदुषदायरेहनहिकुछिसुधिअपनी॥ मांनपांनतजिटेतकेरेनियमरतिजपनी॥ आगालमुखति
दुवारतनीयाआंनेभारी॥ बुधजनसवहीतिजितनेब्याहीपरनारी॥ ज्ञानिलिंगाविनआंनकामक्रीडालोकरि
हे॥ अतिचारअब्रह्मतिनेंपानीपरिहरिहे॥८८॥ दोहा॥ बडीमानछोटीसुतानिजयतनीविननारि॥ नाव
महिमांकाकहूसुरपतिलेवलिहारि॥९०॥ त्यागेतमरतेनदोसितचवनेनांहि॥ तेराव्यापरिनारिमेंतजतामनां
हीकांहि॥९१॥ अथपरिग्रहविरति॥ परिग्रेकहियेपरममतसकलतजेमुनिराज॥ वहुतततजेराषेअल
पगहीकुलवेकाज॥९१॥ प्रश्न॥ ममताआभितरवसेपरिग्रेमध्यखांतानांहि॥ बाहिपरिग्रेक्योंकह्यायासंकाम
नमांहि॥९२॥ उत्तर॥ तेतममतबाहरिमिटेकरेममतह्वेकाज॥ वाहिलवैममताविनेममताबाहरिकाज॥ यअं
तरवाहरदोयहीपरिग्रहतनासमाज॥ रागरोषेजगतमेंतजेसोयजिनराज॥९४॥ प्रश्न॥ तुमरागादिकषाय
कंकहोपरिग्रेतुमरागादिकषायकूंकहोपरिग्रेमांहि॥ केसेदूजेग्यांनकेकथापरिग्रेनांहि॥९५॥ उतर॥ र

शेनह्वानश्रुभावनिर्ज्जतेनदिन्पागेज्ञाय॥ कर्मउदेरागादिकैयेत्पांगेघाटिजाय॥ ९६॥ अथपरिग्रहकेअतीचार॥
कुप्यप क्षेत्रनाजकाथेनवास्तुहेहाटिकमंदिर॥ रूपाहिरनापवर्थानिस्वर्णसोनाअतिसुंदर॥ गाउआदिधन
धान्यतदुल्यादिकहूंपिकांनं॥ परकरकेनरनारिदासदासीवस्त्रानं॥ २॥ मकुपिचंदनादिकोकरिप्रमान
अतिविस्तर॥ अतीचारतवपांचपपरिग्रव्रतमेंअवतर॥ ९८॥ कुंडलिया॥ अतिआरंभअतिपरिग्रहीअ
तिअघकीवढवारि॥ कछुघटायेंतेघेटताकाकरोविचारि॥ ताकाकरोविचारिबीजिवटज्यायसुजानं॥ थेकवी
जवटपेकवीजकेतेवटथांन॥ यातेपरिग्रहदूरधरोवुधजनसमताआति॥ अैसेसंततिमानिघटावोअ
हेानितिअति॥ ९९॥ दोहा॥ ममताअंकुलअागमहैकोयुवारनपार॥ मुनिआगमवोकीधरतज्ञापदुचेम
वपार॥ १०००॥ छप्पय॥ परिगेवसिदूरदासदूरिदेशानिमफलै॥ परिगेवासिवंदीनरहीनचुगलीमुखवे
लै॥ परिग्रवासिअघकररूरावपतातेनाही॥ परिगेवासिधनदेयलेयकीरनिकुलमांही॥ दीनअतीनल
खनहीनरहनादिनदिनाविस्तरे॥ पापारंभकेमोहकरिपरेज्ञायनरकजपरे॥ दोहा॥ पांचेअणुव्रतपुरषदि
नस्यातेसीलियमधारि॥ तीनिगुनव्रतकीजियेफुनिसिक्षाव्रतच्यारि॥ १॥ अथदिग्व्रत॥ दोहा॥ पूरवादि ॥ ४
सानिप्रतिनदीनगरगिरादि॥ जीनातातेंजावन्यानहींजानावादि॥ ३॥ नाहींज्ञानांभ्रमिजिह्व
नासापथिविचार॥ हेउपचासमहाव्रतीआश्रयतानिवारयाकेअतीचार॥ अतिहेत॥ ऊंचानीचेगिरादितले

कुवातेयानर॥ निरजागुफाप्रवेसकरेसंख्याअधिकान॥ दिसिमरज्यादबढावततथामरजादाभले॥ अतीचा
रयेपांचदिसिव्रततेप्रतिकुले॥ अथदेसव्रत॥ दोहा॥ दिसिमरजादकरीविषैधारेअलपप्रमान॥ मासपक्षि
दिनजांमजोदेसव्रतीसोजान॥६॥ गामसीमागृहस्लोभवसिधरेनअधिकपाव॥ तातैहृतामहाव्रतीबाहि
तजपाउपाव॥७॥ सोरठा॥ कीनाअधिकात्याग॥ राख्याअपनेकाजका॥ देखोचतुरसुजानसकलअमर्यादाव्रत
सागधरा॥८॥ भोलाजगतअपार॥ पापनिरर्थकनाजजे॥ राखैसिरपरिभार॥ गुरदयालक्रमउधरे॥९॥ अ
तीचारकी॥ अडिल्ल॥ कहिरसगायेनाहिनाहिभेजेकुकहेके॥ रूपबतावेनाहिकाकरकेफेकेमुषअकार
ठुंकारअनकहैतरनसुनावे॥ राख्याभलसिवायकाजयतननवनावे॥१०॥ अथअनर्थदंडव्रत॥ दोहा
निजपरकेसुभकारननहिउलटाकनतावीगार॥ अनरथदंडसोपाचविधिपगोव्रतीविचार॥११॥ भेदनाम
असुभध्यानउपदेसअघअरपरमादचरीत॥ हिंसाकारनदांनिफुनिपापकथानजीमित्त॥१२॥ चौपई
भलाबुरापरचिंतवनाय॥ असुभध्यानतावैहीजाय॥ हिंसाविरणजीअकषीकलेस॥ परकरायेअघ
उपदेस॥१३॥ तैसेभौरेजलंठौरेनाहक॥ प्रमादचरितवनमेदेखाहक॥ विषअसिअगनफावडादंड॥ हिंसा
कारनदेतप्रचंड॥१४॥ राजचोरतियअसनकहानी॥ पापकथानेदोनेअज्ञानी॥ पनमेकुकहिस्वारथहेत॥
हि॥ नहाकफसोमतिकलमयमांहि॥१५॥ याकेअतीचार॥ अडिल्ल॥ भंडवचननाकरेहासिघुसि

थितिलिनकरिहै ॥ धीरप्रल्हापनकैरेगमनतताापीडनकरिहे ॥ यंत्रपालपदथानअधिकसंचैनविचौरेअती
चारअनर्थदंडकेपांचनिवारे ॥ २६ ॥ दोहा ॥ तीनंगुनव्रतकहिदियेसुनीसिख्याव्रतच्यार ॥ ताकेसाधेसुखसु
गमसधिहैव्रतआगार ॥ २७ ॥ अथसिख्याव्रतनाम ॥ सामायकप्रोषधकरनभोगोपभोगप्रमांन ॥ जोनि
अतिथिसंभागजुतासिख्याव्रतअभिधांन ॥ १८ ॥ अथसामायक ॥ निजसरूपमैलीनताकेपरमेष्ठीध्यांन
समतासबतैधारनासोसामायकजांन ॥ १९ ॥ सबसावद्दितजियेकथत्तरउंनांकरिमरउपाद ॥ भईपरीस्र
कोसहैधरैनाहिपरमाद ॥ २० ॥ धीरदुपुठाधोबतीताहसैानममत ॥ जंनममनलोपाकनकसुखमैसम
चित ॥ २१ ॥ जोलौंसामायकविषैतोलौंमहाव्रतवांन ॥ त्यागीसावदसकलकांमांनमुनीसमान ॥ २२ ॥ अ
थयाकेअतीचार ॥ मनवचतनतिहुंजोगमैंअंनदुष्टताहोय ॥ पाठक्रियाकाभूलनाकरैअनादरजोय
२३ ॥ अथप्रोषधोपवास ॥ परबीआठैचौदशतिजिकैविषैविकार ॥ संसका आरंभतजैच्यारिप्रकार
अहार ॥ २४ ॥ जिनमंदिरकैमुनिनिकटवनिजघरवरथांन ॥ बसिकैधरमकथासुनैत्तिनसुमरैदैध्यांन
२५ ॥ सोवैप्रासुकभूमिमैगहैबसनपरमांनकुधपरेजातननकरैसमतागहैसयांन ॥ २६ ॥ याकेअतीचा ॥ ४
र ॥ अडिल्ल ॥ पजाकेउपकर्नप्राढिकैनांदिठावैमलमलैतरकेकाजविनादेखीभनादै ॥ अप्रासुकतसे
नक्रियाविसमर्नविचारे ॥ भूषप्पासनासहैअनादरतावरधारे ॥ २७ ॥ दोहा ॥ प्रीयरतंगपाभयेअकेक

पनैथांन ॥ दांनदेयभोजनकेरवनेनआरंभवांन २७ ॥ तीनदिनाआरंभतजेराखेधर्मसुध्यांन ॥ ताथीकेमोहारधोत
नेंजोगिसुजांन २८ ॥ अथभोगोपभोग ॥ छप्पय ॥ भोगियकहिवारताहिकविभोगकहेहे ॥ फुनिफुनिभोगेवा
हिताहिउपभोगगहेहे ॥ आदिकस्वापरमांनताहिमाधिभरमात्यादा ॥ भोगवकुलघरायआदरेनांहीज्यहु
भोगोपभोगप्रमांनमेंरतीवातविचारला ॥ वरसंपांवेंभेदयेकपिजेतकीधारला ३० दोहा ॥ नरसघानवहुवंद
फुनिमादिकजांनिअनिष्ट ॥ अनुपसेविजुतपांचयेत्यागेभविजनसुष्ट ३१ सोरठा ॥ गोभाअनमधुमांस
तिरसघातफुनिदुखफल ॥ वहुवधअगण्याभास ॥ सहिजनवेत्तयवेलडा ३२ ॥ आफूआभंगादि ॥ मादि
कमनमोहनवसत ॥ विदलअनिष्टअधादि ॥ हीनवस्तजलविनछम्या ॥ ३३ ॥ अनुपसेविमनोगि ॥ रा
षीत्रिमकरिनेमकरि ॥ आछीअपनेंजोगि ॥ नाहें हमेंत्यागेसुधी ३४ यामेंअतीस्वार ॥ अडिल्ल ॥ सचित्त
सपैजुदीवस्तफुनिवस्तसचितजो ॥ मिश्रसचितजुतआचित्तवहुरिअधपकीवस्तजो ॥ जेरसमयफुनि
पुष्टरागपरमादवढावै ॥ प्रव्रतरावीविचारिनांहियेदोवलगावे ३५ दोहा ॥ जोनरइरप्याजगततेहुवरण
नप्रकास ॥ सोभोगलैंपभोगानीतिभोगेअलपउदास ३६ अथअतिथिसंविभागव्रत ॥ जाकेतिथिका
नेमनहिंरहनाघरलेनांहि ॥ सेपुनिवैलाहैंउत्कुसुलकअतिथिकहेजगमांहि ३७ पनवेत्मावन
कालतोयडरिफुनिजद्वार ॥ भोजनदेवेहरयकरिनोधाभक्तिकरार ३८ अथनोधाभक्तिनाम ॥ पडिमा

हुधोवेचरनगंधोदिवांग्कासिरलाय ॥ अंबुधरिपुन्नाकरेसुधमभवचनकाय ॥ ३९ ॥ श्रावकव्रतपांचरिगियेजीमे
देकेसांन ॥ संविभागतअतिथिकोअैसेकरेसुजांन ॥ ४० ॥ याकेअतीचार ॥ अडिल्ल ॥ सचितपात्रनाधरेसचि
ततेढाकेनांही ॥ परकाल्लेयनदयअनादरनाममनमांही ॥ कालउलंघनाकरेह्हैस्मात्सुर्जेकिकारण ॥ संविभा
गव्रतअतिथिकानातीचारयमउचार ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ चउभागमुनिकोंअसनदयभोगभूजांहि ॥ फुनिसु
रनरपतिहोयमुनिमुक्तिलहैसकनाहि ॥ ४२ ॥ सोहेपरीस्पातपकरजोफललहातमहांन ॥ सोफलमुनि
भोजनदयेपावतसहजसुजांन ॥ ४३ ॥ मुनिवरकूंभोजनदयेउनकेसंजिमवद्धि ॥ निजपरभवलोभोगभुक्त
रवायेघरारिद्धि ॥ ४४ ॥ अथसमाधिमरण ॥ मरनमिटेनाहिजगतमेपरगटकालकुसार ॥ अंसीबुधिजिहहकैं
मरिहैसमताधारि ॥ ४५ ॥ कृतघीनकषायतत्तयोनज्ञानीनिजआय ॥ उपंना धेरसलेयनंमरतनिजातम
ध्याय ॥ ४६ ॥ सावधानह्वाधनमिरेअनंतीवार ॥ तनधनमनतेममततजिमरनमरनसुधार ॥ ४७ ॥ कृपमव
मवांरागतनयोनहीनिरंद्रीवृलजानअग्यानिवारिगिरसलसासकूवनापहवाने ॥ जोतिसुगनीके
दवकैसोदीनिजभासे ॥ सवसोछिमाकरायहृरषिममनायवनासे ॥ पहलेत्यागोध्यानकोंहूधलेतक ॥ ५
कुहिसेजे ॥ वहुरिवारिहत्यागकरिआतमपरहेखीभेजे ॥ ४८ ॥ प्रश्न ॥ दोहा ॥ जेमरिहैतनकरसकरिते
अपघातीहोत ॥ ताकेसंभाषतकहासोहैधर्मउधोत ॥ ४९ ॥ उत्तर ॥ जेजियमरेकषायवसिकरिनानाउ

जुपात ॥ अगनिवारिगिरिसम्बविलतेहांनैकपचात ॥ ५० ॥ कोउजगतनसोनामिटैज्ञानेविधमक्रसाध ॥ तनेभोगातनकी
नकरिधारैमनसुसाध ॥ ५१ ॥ सर्वकरैव्रतहैसफलकरैसलेखनअंत ॥ जैसैमंदिरकलशतैतेपरलहसैअत्यंत
॥ ५१ ॥ मरनांह्नीवचनानहीयहजगरीतअनादि ॥ सहजरसांनसलेखनांमपंग्नीयोतनचादि ॥ ५२ ॥ अंतमनासो
हीउताभाषतबालगुपाल ॥ ताकोसुधस्योंअंतसोबोहिभयोनिहाल ॥ ५३ ॥ यामैअतीचार ॥ अडिल्ल ॥ जीवनि
वांछैनांहिमरनैंकूंवांछै ॥ मित्रनसौंनाप्रीतिनाहिंचाहैसुखआछै ॥ भोगनिमैरुचिहांनिबांधिदैनाहि
निदांन ॥ अतीचारयमपांचसलेखनकेपहिचान ॥ ५४ ॥ सोरठा ॥ जरतरूपरीगोइजतनकीयानाउपउामी ॥ नव
सुग्यानधनलेहु ॥ बुधजननिकेसनाउजे ॥ ५५ ॥ यमातिसममक्रिसुजांन ॥ पांचपांचअतीचारहै ॥ यनमैयन्हैसमां
नजिथाजोगिउभिंतधेनं ॥ ५६ ॥ मुनिश्रावककोधर्म ॥ सुनियेग्रंथअनेकमे ॥ भोजेनाहीभर्म ॥ निजस्वरेदे
ख्यांविनां ॥ ५७ ॥ बिनाधनीकेजोग ॥ फोजनकुक्रिकाजनकरै ॥ त्यौमुनिविनसबलोग ॥ मनमतहैबातनधरै ॥ ५८ ॥
अवहसुगमसंजोग ॥ जिनपूजनअरदांनका ॥ सोपरमाटीलोग ॥ अरुरैथोरेकरै ॥ ५९ ॥ लेनादांनमिथ्यातव
तेहिदानकानांमसै ॥ बडेग्रानरन्यातत्रैसेभाषितदुरमती ॥ ६० ॥ लेनाजानमिथ्यात ॥ साधरमीलेवेनहीं ॥ पर
पोषेउतपात ॥ मिटैदांनकीविधिसवै ॥ ६१ ॥ वरनतसकलपुरांन ॥ परगटश्रावकधर्ममे ॥ दोऊलेनादांनदो
नंकेसुभबंधहै ॥ ६२ ॥ साजनग्रंपाजिमात ॥ हरखतमनज्योराकरै ॥ त्योंसाधरमीभ्रात ॥ पोषोघनतेवसनतै

६३ ॥ औषधिविधिविधिवनाय ॥ सास्त्रसोधिलिषिदीजिये ॥ आभेअसनसमुदाय ॥ गेहवसनधनभांनये ॥ ६४ ॥ नवधन
वचनलगाय ॥ साधरमीयोंथांभिये ॥ लीजेपुंन्यवनाय ॥ थितिनिकरनसंम्यक्तगुन ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ अतीचारहोवा
नेर ॥ पंचअणाव्रतआंन ॥ सप्तसीलहुजीविथे ॥ तिथप्रांतिअनुमांन ॥ ६६ ॥ गुनव्रततनीविसुद्धताआगे
जाविधिहोत ॥ सोअलक्रमवरननकहं प्रतिमांप्रतिउद्योत ॥ ६७ ॥ अथतीजीसमायकप्रतिमा ॥ साधेसामाय
कसंभनहीउलंघेकाल ॥ दूषनरहितविसुद्धचितजगाउैध्वनरिकूपाल ॥ ६८ ॥ अथचोथीप्रोषधोपवासप्रति
मा ॥ आठैचौदसिसुद्धपल्नप्रोषधोपधरिवास ॥ वसुदुपदुगघोडसपहरकरेयेकमवास ॥ ६९ ॥ योसाधप्रति
थलरहेसहेपरीसाघोर ॥ असनननेषोडसपहरकाजनकारिहैंओर ॥ ६८ ॥ अतीचारहोवानदेमनविसुद्ध
उलसंत ॥ कीयाविननाहीसहेकरेआपुपरतंत ॥ ६९ ॥ अथपंचमीसोचित्तत्याग ॥ सचिततजेप्रासुकलहे जो
गिसमेमखाय ॥ अतीचारटोरैसुधीमततरानेभवनाय ॥ ६९ ॥ अथछठीप्रतिमा ॥ दिवसनारिनिसमेअसनके
हिनिसियरवीमांहि ॥ त्यागतनमनवचनकरिदोषलगावेनांहि ॥ ७० ॥ तीजीप्रतिमामेहरेसमायकअति
चार ॥ प्रोषधकेअतिचारकाचोथीमेपरिहार ॥ ७१ ॥ भोगोपभोगअतिचारकायांचीछुटहुार ॥ याहीलो
श्रावकजघनहोताहेअधिकार ॥ ७२ ॥ अथसप्तमीप्रतिमा ॥ निजपरनारीसेयवोत्यागेनवकरिवारि ॥ दोष
विघ्नहोवानदेब्रह्मचर्यव्रतधारि ॥ ७३ ॥ अथनववांडि ॥ छप्पय ॥ तियाकथानकरैकरैकरेनहिनेननिसेना

तियासंगनहिंचलैकहैनहिंहितकेवेना॥पुव्वजतनतनांकरैकैरनहिंअसनपेठभर॥ परवसमैरैनांहिंयेजेनरि
अघनतपर॥ नारिसंगसेनांनाहींयेनवेवाडिसुधारिचितजतनराखितियहिंरनिफुरसील्लयेतकेकाजं
नित॥७४॥अथअष्टमप्रतिमां॥दोहा॥षेतीसेवावनिजसबत्यागनिरारंभहोय॥रखैअल्पसाधांनध
नअष्टमप्रतिमांसोय॥७५॥अथनवमीप्रतिमां॥उचितवसनतनधारिहैनाहिंसोनहिराग॥माहिंमआव
गेहमहांकरैधांनधनत्याग॥७६॥अथदशमीप्रतिमां॥सीखनदेघरकाजमेंवसैनिरासाजाय॥जातबुला
यांअसनकूंनितघरघरखाय॥७७॥अथग्यारमीप्रतिमा॥भेदग्यारमीमैंकहेक्षुल्लकअईलकदोय॥व
स्नोजिमंकरहनकोंग्रथजिनागमजोय॥७८॥छप्पय॥क्षुल्लकजिनालयवसैभमैसीषैगुरआगे॥परवीपो
साधैउपवासधारिनिसमेंजागे॥लेनिरदुष्टअहारपात्रदुकरांधैतांमे॥येकवसनजनधरैदुनियकोयनिजंघ
में॥संप्रकरांवैउचितदिनठाठीपकूनराखही॥विपतिपरेसोसवसहैवचनदीनतांभाषही॥७९॥अईल
महापुनीतवेलालुंचैनिजकरते॥लेकरपात्रअहारवेउकआवकघरतैं॥कमंडलपीछीहाथकमरकोपी
नवनाई॥शीतउष्णतनसहैवुसनयुकुराठतनाई॥येकाकीजनारहैरहतजहांमुनिजनघनै॥कठिको
पीननिहारिनिजंतआयनपोधिकाजनै॥दोहा॥चतत्वरतमप्रतिमाजवैधरवत्पागेनांहि॥तिरजगदृत
हीधारिहैसवनसकल्लनरमांहि॥८०॥अईयत्लफुनिमुनिआर्जिकातीनवमेंमयाहि॥सप्ऋवनिहैक्षुल्लक

सोमुनिविनिसिवनलहांहि ॥ ८२ ॥ देशव्रतीकाआचरनचरन्यां अलपप्रमांन ॥ अव्रतमेंचरचालीयौ चानुरवीस
प्रमांन ॥ चौपही ॥ सावितिरजंचमनुष्यगतिदीयसैचीतिरसपचेंद्रीहोय ॥ मनकेच्यारवचनकेच्यार ॥ औ
दारिकनोजोगानिहार ॥ ८३ ॥ संज्ञितासंज्ञितातीनवेद ॥ विनकेवलदरसनकेभेद ॥ प्रत्यारव्यानसंज्वलनकषा
य ॥ नोकषायजुतसतरेगाय ॥ ८४ ॥ भविकअहारकसमकितलीन ॥ उपशमवेदककषायकृतीन ॥ मतिश्रु
तिअवधितीनअसुभगपांन असुभलेस्यातीनेपहचांनि ॥ ८५ ॥ परनच्यारतरूद्रकुध्यांन ॥ जानौधर्मविनासं
स्थान ॥ देशव्रतीपंचमगुनजोय ॥ जीवसमासपचेंद्रीहोय ॥ ८६ ॥ छटपरज्याप्तदशाविधिप्रांन ॥ संज्ञ्याच्या-
रिधरतबुद्धिवांन ॥ दर्शनज्ञानछषउपयोग ॥ मुनिकषायसतरानेजोग ॥ ८७ ॥ तिरसघातविनअविरतपा
रा ॥ सातवीसगिनिआश्रवधारा ॥ जोनिअठारालषकाजोर ॥ सोठपचपनलषकुलकोर ॥ ८८ ॥ अथदे
शव्रतमेंनांहिहोयसो ॥ दोहा ॥ देवनरकविकलत्रयथावरअभविकुगपांन ॥ मनपरजेकेवलशुकलसु
वविनगुननांहिसमांन ॥ ८९ ॥ द्विकअहारकाविक्रयायुद्ध्रिमिश्रअवदार ॥ कारमांनजुगजोगयटपंचम
गुननलगार ॥ ९० ॥ अनंतानकीचौकरीअरुअप्रत्यारव्यांन ॥ कृष्णनीलकापोतपुनिअनाहारकीयां
न ॥ ९१ ॥ असंज्ञिमीसंज्ञितनहींनांहीपंचमिथ्यात ॥ तिरसघातअविरतनहींनहींअसैनीजात ॥ अथक
र्मबंधचोपही ॥ पंचमगुनसतसैठिकावंध ॥ त्रेपनपरकनिदोतअवंध ॥ वंधमांहिविकलतसमुदाय ॥ च्यारलो

प्रत्याख्यानकषाय ॥ ९३ ॥ विकलनिग्रनउदै बोधैजनी ॥ दोउकूं इकठीकरिगनी ॥ तिनीन्रनउदैपंचमथांन ॥ सो
हीवंधविषैपहचांन ॥ ९४ ॥ अथछठेकथन ॥ दोहा ॥ उदैसत्यासीप्रकतिकानाहिउदैपैतीस ॥ उदैमांहिवि
कलनिवसरहावीरनिगुनदीस ॥ ९५ ॥ आयुरगतीतिरजंचदोत्र्याहारोपरत्यारव्यांन ॥ नीचगोतउद्योतएकनि
उदैविकलनिवसुन्नान ॥ सत्ता ॥ दोहा ॥ सत्ताविकलानिपसुआयकीनहिसत्तानरकाय ॥ इकसौसैतालीस
कीपंचमसमझायाय ॥ ९७ ॥ इतिपंचमगुनस्थानकथन ॥ अथप्रमत्तछठागुन ॥ प्रत्याख्यानषेडपद्रागमीजग
सोभयेविराग ॥ गाम्यात्राथिरपरियनसदनत्र्यातममेत्रनुराग ॥ ९८ ॥ नाकाश्रावककुलियतहूंजोउनचि
तवनकीलजाकेपढतेसुनतहीभासनजगानत्रतलनि ॥ ९९ ॥ कुंडलिया ॥ धीरजत्र्यानिततनरच्यादीयेद्राष्टिस्व
रूप ॥ मांनंचप्रवरतेटव्याच्यधममतमलकूंप ॥ त्र्यधममतमलकूंपरोगकाभाजनसोहत ॥ तिसिदिनइंद्रीभो
गभरतपरनननहिहोवत ॥ तिथिाक्षिनभंगुरभगत्र्यासनांहीकाधीरज ॥ याभेयहीसारकूरततपधारतधीर
ज ॥ १०० ॥ जननीभगनीजनकसुतबंधुपाथिकजनजांन ॥ भववनवाटमनुष्यभवभामिलापछिनत्र्यां
न ॥ भैामिलापछिनत्र्यांनकाजनिजगतपरस्वारे ॥ बहुविधिहितउपजायकरतनितिमोसोरागारे ॥ तोप्र
नलषित्र्यायुकहेत्र्यवठीलनकरती ॥ संपतिनातीसवेविपतिमेवहिननजननी ॥ १ ॥ मंदिरमत्तकरिदं
चडुरुपरथभरिपथांद ॥ मोतीमनिमांनिकरजतकनककोसमेउपाद ॥ कनककोसमेंउपादमेरसुषानिसमै

सोये परदलसीनेंलग भोरहीनेंढेरायेघरघरजायतनफिरेवडेकुलकेअतिसुंदर ॥ तहेवोसटापरेकूपरीमां
नमंदिर २ थावरतनधारेतजोकिनोढिनकालअनंत निपटकठिनस्योनिकायकेतरस्यरासेउपजांत ॥ न
रसिरासिउपजंतभरमसोभ्रास्योगातिमे जोमांनुखतनपधरेकरसोवासमुकतिमे ॥ जोमिथ्यामतमगन
लहेसादुखनांनकर सागरदायहजारभटाकेफुनिवानिहैथावर ३ दोहा ॥ जोअसहीनत्रसहोयतोसाग
रदायेहजार उत्तमयाअरजथानितांअंतरमहुरतवार ४ तनदीपगातिथितेलसोपरगटनरभवजोति
जोलोकाजअकाजसोथिहातनअवांनकमोति ५ ज्योंमुक्ताकरतेंकुन्नासागरमैंनापाय ॥ त्योंनरभव
योयोदृथाकहिकैसेमिल्जिाय ६ नरभवउत्तमपायकेउत्तमकारियकाज ॥ याभवविनसिवनांलहेकी
नेंकोटइलाज ७ थावतभोगजनंगमिळगअकांदुखअसराल त्यागकीयेविनसुखनहीआयमिले
हेकाल ८ कुंडीलिया भखनतनमेंधारिसवसाजेसवेसिंगार निकसेदिसाकाजकोलासलगाय
रिवार लारलगपरिवारहरखदुखदोऊरजत निरखेयाकीवारवीरताअदुतकाजत अपसोहनधीरक
हूंउपमांविनहूखन मुक्तिरमनकेकाजचल्पादूजेसजिभखन ९ दोहा गहिसांहसगुरपैगयाल
परेवदनकीन वीनतिपटिरूरयसोतनिमदक्षनांदीन १० धर्मचन्द्र सुनिवीटियोधर्मसुन्योजिनभा
षहाथजोरिविनतीकरीजिनदिक्षाअभिलाष ११ सचेतुमेसारदकोरहुमगुरकहीसराय नवदिस्या

तेनेंलापासवसोक्षमांकराय ॥ २२ ॥ तजेवसनधनधांमधनलयेननिलतुसमांन ॥ जियाजाततजिनरूपधरिलि
येकेसुसुज्ञान ॥ २३ ॥ करिविसुद्धतनमनवचनधरेमहाव्रतपांच ॥ पांचसुमतियालतगुपतिलेप्राश्चिनक
हिसांच ॥ २४ ॥ त्यागिसदनवनमेवसेससिमेयरितातीर ॥ ग्रीषमऋतुगिरिऊपरेवरषारितनितरुधीर ॥ २५ ॥ स
हघोरउपसर्गजोसुरनरतिरजगकीन ॥ करेनचलमनमेरिसमवनेपरीस्पहलीन ॥ २६ ॥ मित्रशत्रुदोऊनप
नहीरागनहीदोष ॥ मनकीममताभिटिकेहोगयेलायकमोष ॥ २७ ॥ प्रश्न ॥ नहिसरीरनहिकालवहतासा
साजैन्नकाय ॥ यादुरधरमुनिकीविरतिकैसेधारलोय ॥ २८ ॥ यातेंतनरुपजासकीजोगियरिग्रहधार ॥ निर
दूषनमुनिमांनियेश्रावककरतविचार ॥ २९ ॥ उत्तर गाथा ॥ अष्टपाहुडका ॥ जहजायरूवसरिसोतिलनतुस
मित्रंगगिहदिहत्थेसु ॥ जइलेइअप्पबहुयं ॥ ततोपुणजायणिगोयं ॥ १ ॥ भाषा ॥ चोपई ॥ जियाजातधरि
पसुज्ञांन ॥ तंजोपरिग्रहतिलतुसमांन ॥ अलपवहुतपरिग्रहफुनिगहै सोनिगोदमेंअतिदुषसहै ॥ ३० ॥
गाथा ॥ सावियसियबस्थियकधरो ॥ जिणसासणेणजइविदितिप्यपहो ॥ णग्गोविमुरकमग्गो ॥ सेसउम्मग्गया
सव्वे ॥ १ ॥ चोपई ॥ वस्त्रधारीहैंतनसिरिगगनांहि ॥ जोतीर्थंकरजिनमतमांहि ॥ विनपरिग्रहनागामगमोष औ
रतितिमार्गेअतिदोष ॥ ३१ ॥ गाथा ॥ भरहेदुसमकालेधम्मज्झाणंहवेइसाहस्स ॥ तंअप्पसहावठि
दे ॥ णहुमणइसोदुअण्णाणी ॥ १ ॥ चोपही ॥ भरथभूमिमेंदुखमांकालधर्मध्यांनजुतसमुनिहाल ॥ निज

सुभावेंमेंमगानसुआंन नहिमांनैंजेनिपटअसपांन २३ गाथा अज्ञाविनिस्परामुद्धा अप्पाइज्ञाट्टाबिलस्सइ
दत्तेन्तोपंतियदेवत्तं तक्कुपाराविदंजंति १ चौपई अग्रहातिरपनसुधमुनिराजआतमध्यायलहेसुराज
केलोकांतिकसुरहैजाय वैबिदेहसोमुरं क्षाजाय २३ दोहा थिवरकल्पमुनिसंघजुतजिनवरकल्पीयेक
क दोउदसाप्रमादवासि षष्ठमगुनाजिनचाक २४ अथप्रमाद चौपही धर्मरागसंज्वलनकषाय विकथा
वचननींदसमभाय तननिंथिदायकानिरसनअहार यहेप्रमादपंचप्रकार २५ दोहा कूटागुनटानाविषे
चतुरवीसपरधांन नरभवभविपरज्ञाप्रापंच्येंद्रीदिउआप्रांन २६ पीतपद्मलेस्याशुभ अपावेंजोगाविचार वच
नच्यारमनच्यारफुनिदुकहारकअवदार २७ तसकापदस्थानातिहसैनीसंज्ञपाव्यार संजमकेदउथाप
नां सामायकपरिहार २८ च्यारपांनदरसनात्रिविधियोउपयोगासाते हादसअलमनुस्सकोट्टिहैलाख
चतुरदसगुणात २९ जीवसमासमञ्चेंद्रीमनपरमनच्यालीतअहार आरतितीनिनिदांनविनधर्मध्यानपद
च्यार ३० चौपही समकितउपशमवेदकस्यायक आश्रवाचौवीसेलायक नामैंतेराजांनिकषाय बहु
रिस्परहैजोगवताय ३१ दोहा नोकषायसंज्वलनचतुतैरहेतकषाय षसटमगुनमैंमांहिसोआ
गकहैवनाय ३२ चौपही अप्रविंअसेनीपअपच्येंद्री देवनरकथावरविकलेंद्री केवलदर्सनके
वलग्यांन अनंतांनअनपरत्याख्यांन ३३ प्रत्याख्यानजुतद्वादसयोग कारमांनदुकविक्रयजोग

कृतिमिथ्यअवरोहनपाय जिंयासूपातसूक्ष्मसंपराय ३४ लोभप्रात्रअशुभकर्मसनमधारा हीनप्रांनअरु
हीनअहार हीनप्रज्यापअविरतधारा रूढध्यानमिथ्यातनसारा ३५ दोहा कहुकनांहिपरिहारयोमि
लेनउकंठव्यार कायअहारकाउपशमीमनपरिजेपरिहार ३६ अथकर्मबंधउदेसत्ता चोपही त्रे
सठिबंधसत्ताउनताही बंधविकृतिषटपरमतमांही अथिरअरतिपुनअशुभअसाता सोकअजस
कीरतिषटपाता ३७ अथउदे विकृतिअनउदेपंचमथाना तेंतालीसप्रकृतिवखांना तामेंनिकासिप्र
कृतिदुकहलक आनउदेभोषष्ठमथानक ३८ उदेइक्यासीषष्ठमगुनमे इकतालीसोनांहिउदेमे विकृ
तिपचपरकृतिकिजानो तिनकावरननअबवखानो ३९ दोहा निद्रानिद्राषकफुनिप्रचलाप्रचलाजानि
थ्यानग्रद्धिनिद्रासहितद्धिकहारकपहचांनि इकसोषटचालीसकीसत्ताषष्ठमजांनि नरकतिरजगते
आयद्धकनहिसत्तापहचांन ४० ४१ उदिरना उदेसमांनाउदीरनादेउाविततनोजांनि गोरंषष्ठमेतेकह
फरकसोसंजोगीलोउआनि ४२ मिनषआयद्धवेदनीविकृतिउदीरनमांहि सोठीषष्ठमथांनमेउदेवि
कृतिमनांहि ४३ इतिषष्ठमगुनथांनवर्नन।६ अथसातमगुनस्थान त्पगेरहाप्रमादकीधर्मध्यानम
होय अप्रमत्तगुनसातमाजासुजानिहेदोय ४४ अथोकर्नेचारितचरनतासभावद्रढनांहि प्रथमअप
रमत्तजांनियोपरैप्रमत्तकेमाहि ४५ प्रथमचरनचारित्रकाधरेअ्रांतिद्रढहोय सोसातिसेदजाकहीविदि

हैमेनें सो होय ॥ ४६ ॥ बिन थय समाधि नस्यात मोक्ष कहुं थात चलवांन ॥ अथ छेद करन अप्रम धरै तव आवक की हांनि ॥ ४७
चौपही ॥ अथ अप्रमत्त निवृतकरना ॥ अंतमिथ्याती हसन थरना वही मांनि चारितके थरना ॥ सप्तम थ
कीनव मलो बकरना ॥ ४८ ॥ अथ चौवीस ठांनां नि रे ने ॥ दोहा ॥ षष्ठ मते सप्तम विषे चादि बस्तु यंजाय ॥ सब आहार
अहार दुक आरतिध्यांन नकोय ॥ ४९ ॥ बंध उदे सत्ता ॥ नाहि बंध अविकृति जुत ओसठि परमत्त जांनि ॥ तिन
मनिकों सि आहारदुक बंध सात मे थांनि ॥ ५० ॥ या विधि सप्रम थांन मे रक सठि बंध न पांहि ॥ बंध विकृति देवायु
को गुनसठि बंध लहां हि ॥ ५१ ॥ नांहि उदे च्यालीस य उदे छिहंतरि जाय ॥ उदे विकृति इक्यासिकी अपरमत्त गु
न सो यय ॥ ५२ ॥ अहुनर बहु कीलका त्रीनि पस फाटिक च्यांनि ॥ च्यारि समाकिति आहारनी उदे विकृति यहवां
नि ॥ ५३ ॥ इकसा तीया लीस मसठि सत्ता मैनां हि सत्ता विकृति वसु पकति कीसय तम थांन क मां हि ॥ ५४ ॥ अ
नंतानकों चौक रीतीनं ज्यात मिथ्यात ॥ देवआयु जुत आठ ए सत्ता विकृति हि ज्ञात ॥ ५५ ॥ चौपही ॥ पर प्रास्प ॥ १
न अपरप्र प्रास्पांन ॥ केथंके उपकुभ मतां आंन ॥ प्रथम अपरमत्त सप्तम धारै ॥ धरि प्रमाद फुनि छट्ठै सिधारै
दे अंते सात मे गुन थांन बनें नं ॥ १ ॥ अथ आठकुं गुन ॥ दोहा ॥ पूरब कारन अनादि में अकृतमी कपरिनाम ॥ प्रा ॥ ५
पत कय हुनां भयस प्रापायनि अभिरांम ॥ ५७ ॥ नाम अपरबकर्ने हिरूपनाम विधि दोय ॥ इक स्पायक को
नीचै हतो उपसम होय ॥ ५८ ॥ अथ आठ मांमे चौवीस ठांनां ॥ जेथ अट्ठम गुन थांने ते फर क आठ मांमां हिय

तुरवीसथांनाचिवैताकेकहेवनाहि ॥५९॥ चोपही ॥ छेदोयथापनाहेसामायक ॥ नहिपरिहारसातमांलायक
नैस्यायेकसुकलहीजांनोपीतपद्मनांहीपहचानो ॥६०॥ समकितउपसमष्यायकआनो ॥ वेदककहा
सातमांथाने ॥ येकप्रथक्तवितर्कविचारआन ध्यांनकात्यागनहारा ॥६१॥ जोगआहारककाविनए
ही ॥ संज्ञातीनआहारविनोही ॥ औरसकलषष्ठमवतजानो ॥ परकथनकहापरमानो ॥६२॥ अथवं
धउदेसत्ता ॥ सोरठा ॥ वंधआश्रवनमाहि ॥ वंधविछतिछतीसकी ॥ यहअष्टमगुनतांहियासठिप्रकृति
आवंधहे ॥६३॥ दोहा ॥ अष्टमगुनथांनाविषे सातभागमतिधांम ॥ वंधविछतिछतीसकीतिनकावरनो
नांम ॥६४॥ प्रथमभागमेविछतिहेनिंद्राप्रचलादोय ॥ छठाविभागमेविछतितीसकीहोय ॥६५॥ पं
चेंद्रीपरस्पापतात्रसबादरपरतेय ॥ जांनिविहायोगतिसुभसुस्वरसुभगआदेय ॥६६॥ आहारकतन
नमिश्रपुनिआहारकद्दुजांनि ॥ मिश्रवेक्रायकवेक्रयकविछतिविधमप्रमानि ॥६७॥ आंनिपुरवदेवगति
समचतुरसंस्थांन ॥ कारमांणतेजससुथिरतीर्थंकरनिरमांन ॥६८॥ परसगंधरसवरनपुनिअगुर
लघुअपघात ॥ अरुउसासपरघातजुततीसप्रकृतिकीजात ॥६९॥ रतिहासीभयजुगुप्सा विछतिसा
तसंभाग ॥ वंधविछतिछतीसयोजांनिअष्टमीजाग ॥७०॥ सोरठा ॥ नाहिउदेपंचासउदेवेदेछितसमे
विछतिप्रकृतिप्रकास ॥ हास्यादिकषटजांनियो ॥७१॥ दोहा ॥ सतदूकसोअडतीसकानाहिसत्ताम

सरधांनि ॥ सत्ताविकृतिकीपुंन्यता ॥ उपसमअष्टमथांनि ॥ ७१ ॥ इतिअष्टमगुनथान ॥ ८ ॥ अथनवमगुनथांन चौ
पई ॥ कैउपशमकैक्षायकभाव ॥ भयेलीनपरिनामउपाव ॥ सोपुनिपिल्लदिअधोनहिआवै ॥ निजसरूपमैथि
रतापावै ॥ ७२ ॥ परवभाववस्नाचलहोते ॥ सदृजअंदोलभयेथिरजोते ॥ सोअनिवृत्तकरनगुनथांन ॥ ताके
अंसपंचपरमांन ॥ ७३ ॥ यामैचौवीसठानां ॥ गतिमनुष्यपंचेंद्रीजाना ॥ त्रसकायनवजोगविष्यात ॥ मनके
च्यारवचनकेच्यार ॥ याकेऔदारिककायाविचार ॥ ७४ ॥ प्रथमभागमैतिनिवेद ॥ द्वितीयभागपैवेदकहेद ॥ आदि
भागमैसातकषाय ॥ दूजैमैसंज्वलनचताय ॥ ७५ ॥ विनकेवलदर्शनषटग्यांन ॥ भविपनजैयदरशविवैधिपरांन
लेस्पासुकलअसन्यकुसैनी ॥ जीवसमासपंचेंद्रीसैनी ॥ ७६ ॥ प्रथमसवितर्कविचारध्यांन ॥ अनिवृत्तकरननाम
गुनथांन ॥ जांनिजोगनौसातकषाय ॥ प्रथमअप्रथवासोलेथाय ॥ ७७ ॥ दर्शनतीनच्यारिविधग्यांन ये
उपयोगसातवर्षांन ॥ वारैलाषछतीकुलकोडि ॥ जोनिजनमचौदालषजोडि ॥ ७८ ॥ समकितक्षायककउप
शमथापन ॥ सामायकअरछेदउथापन ॥ मैथुनपरिग्रहैजुतजांन ॥ संपातीनवमगुनथांन ॥ ७९ ॥ अथ
वंध रेषा ॥ नाहीवंधअप्रत्यानपैअनिवृत्तकरनसुजांन ॥ वंधप्रकृतिवाईसमैपंचविकृतिपाइचांन ॥ चौपई
पुरषवेदसंज्वलसुजांन ॥ क्रोधमांनमायालोभांन ॥ पांचभागमैपांचहिहोय ॥ विकृतिनवमगुनथानांजो
य ॥ ८१ ॥ हासकविउदैकहपनहैनांही ॥ उदैविकृतियटताकेमांही ॥ पुरषनपुंसकनारीवेद ॥ प्रथमभागमैकरै

उसेर ॥ ८३ ॥ इजेतीसैचोथीछीन ॥ क्रोधमांनमायायेतीन ॥ भागपांचमेंषइरनेंलोभ ॥ उदैविकृतिजानोविनछोभसो
रहा ॥ नहिसत्तापइरादीस ॥ हैयकसोअठतीससत्त ॥ नामप्रकृतिकृतिस ॥ सतेंप्पाविकृतिनोभागमे ॥ चौपई ॥ ना
रकतिरजगतिनिगतिदोय ॥ येहीआंनपरवीहोय ॥ निद्रानिद्राप्रचलावडी ॥ स्त्यानगृद्धनिद्रादुखगाडी ॥ ८५ ॥ उ
द्योतनआतापअरुएकेंद्री ॥ साधारनसूक्षमविकलेंद्री ॥ थावरजुतसोलेसवआंन ॥ प्रथमभागमेंविकुरतजा
न ॥ ८६ ॥ प्रत्याख्यांनअप्रत्याख्यांन ॥ इहेंअसाविकृतिवसुमांन ॥ वेदनपुंसकतीजंभागम ॥ नारीवेदचतुरथे
भाग ॥ ८७ ॥ पंचमहास्यादिकषटगयें ॥ षष्ठमपुरषवेदतजिदये ॥ सातेंआठमेंनवमेंअंस ॥ क्रोधमांनमाया
निरवंस ॥ ८८ ॥ इतिनवमगुनस्थांन ९ ॥ अथदसमगुनस्थांन ॥ क्रोधलोभमायासंज्वलनं ॥ बादरलोभकलि
तकृतजनं ॥ सूक्षमलोभासिवाअभिलाषा ॥ सोदसमांगुनजिनवरभाषा ॥ ८९ ॥ अथयांमेचोथीसठांनां ॥ सू
क्षमलोभयेबंधीनाहिं ॥ औरकषायरहीनवतामे ॥ सूक्षमसांपरायनामा ॥ संजमतामेंगुनकाधामा ॥ ९० ॥ भाअ
परदसमगुनथांना ॥ संज्ञापहिरोयेकथांना ॥ चतुरवीसमेंअरुरहीजो ॥ सोजानोनोमोदिकहीजो ॥ ९१ ॥ यामें
बंधउदेसत्ता ॥ दोहा ॥ इकसोतीनअबंधहेसतरेंबंधसुजांन ॥ तामेंषोडसकोविकृतिजाकोसुनोविधांन ॥ ९
२ ॥ चोपई ॥ पंचप्रकृतिभानिग्यानावरनी ॥ विननिद्राचक्षुदर्सनावरनी ॥ अंतरायकीपांचवषानों ॥ ऊंचगोत
जससोरजानो ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ नाहिउदेवासटिनिनोउदेसाठिपहचांन ॥ विकृतसूक्षमलोभइकपाइदसमागुनथांन

६४ सत्तायेकसोदोयकीनाहीयठचालीस सूक्ष्मलोभहियेकलासत्ताविकृतिभेदीस ६५ इतिदशमगुनस्थां
न २० अथग्यारमागुणथांन कहिउपसांतकषायसबवेसउपसम्यमोह उपशमश्रेणीअंतजिहकह्या
ग्यारमासोइ ६६ फरकनवमगुनथांनसोयायेअबकहंबनाय नाहीतीनवेदजिहनांहीसंवेकुषाय ६७ जि
थाख्यातसंजिमदृहांनहिसंज्ञासबजांन चतुरवीसभेदसंजोगेनकेभासाभांन ६८ अथयामेबंधउदेस
त्ता बंधयेकसाताप्रकृतिनहियकसोउगनीस बंधविकृतिकीहीनताभाषीहैजगदीस ६९ नांहिउदेत्रे
सठिप्रकृतिविकृतिकहे भेदाय उनसठिपरकृतिका उदेजानिग्यारमांसोय ७०० सत्ताकथनजहांनहां
श्रेणीकियकलपषि सोयेकादशथांनमेंयकसोयेकाविसाषि ७ इतिग्यारमा ७१ अथद्वादशमागुन
स्थांन जेक्षायकश्रेणीसहिततेदशमांगुनमांहि सत्तामोहाथिपायकेद्वादशगुनपजांहि २ यामेचो
वीसठाना चौपई चरंपकत्वचितकेविचार आनध्यांनकानासंचार समकितक्षायकनिरमलजांन ३ उ
पशमरहाग्यारमेथांन ३ नांहिवेदकषायहसंज्ञा जिथाख्यातसंजिमपरतंपा बाकीजोरतुवभय
रमान विनिधिभेदभाविकरिसरधांन ४ दोहा जेपारेमैतेयारवेमारगनांहिविधांन द्दष्टसमाभेक्षाय
करनयारेउपशमठांन ५ यामेबंधउदेसत्ता आंनप्रकृतिकाबंधनहिबंधेसातायेक बंधविकृति
कीश्रुंगताकेवलनिकटविवेक ६ उदेसत्ताथनकाविषेसोदेषीकहिजाय नांहिउदेपैसठिप्रकृतिछीन

मोहमेंगाय ॥ ७ ॥ थटपरकतिदर्सनतनीपांनावरनीपांच ॥ अंतरायकीपांचजुनविकुरतिसोरेसांच ॥ ८ ॥ चखुअचखु
अवधिकेवलनिद्रांठांनि ॥ प्रचलाजुतथठकीविकुतिद्रसनावरनीजांनि ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ सैंतालीसनयाय स
न्नायकसायेकमेंयोदसवीकाटिजाय ॥ उदेविकानिमेंजोकही ॥ १० ॥ इतिद्वादसम ॥ १२ ॥ अथतेरमांगुनस्थांन
दोहा ॥ हूंनोकेवललाब्धितहां घातीकर्मबिनास ॥ अंपादर्समसंजोगगुनलोगगुनलोकालोकप्रकास ॥ ११ ॥
बिनछायादुतिफटकसमअनमिखद्रगदुलसाय ॥ सातधातकेमलरहितअंतरीखदरसाय ॥ १२ ॥ आनंत
चतुष्टपसंजुगतप्रातसुखसुहोय ॥ दोषकेअठारेतेरहितनंधंदनीकातिदुसोय ॥ १३ ॥ मनविकारपरमादतं
जिधेरध्यांनवनिआय ॥ प्रजतबंदइंद्रादिपदमेंटेभवसांताय ॥ १४ ॥ अथनोलाब्धि ॥ अरिल्ल ॥ जिथाख्यातसं
जमीख्यायकीसमकिनी ॥ केवलदर्सनधारगपानकेवलपनी ॥ दांनलाभउपभोगभोगवीरजलहा ॥ येके
वलनोलाब्धितेरमेंगुनगहा ॥ १५ ॥ अथयामेचोवीसठांनानेरले ॥ चोपई ॥ गतिमांनुखऊंचेकुलमं
हि ॥ देवनरकतिरजगगतिनांहि ॥ येकेंद्रीविकलेत्रिकिविना ॥ जाकोंजातपचेंद्रीगिनां ॥ १६ ॥ सेत्रकायदेह्या
बरनांही ॥ सातजोगयामेंजेजापाही ॥ अनभेसांचववनमनच्यार ॥ कारमांनतनदुकअवदार ॥ १७ ॥ असति
अभेसनवचननकाय ॥ हारकविक्रयदुकनहिहोय ॥ नाहीतीनंवेदसुयाय ॥ नांहीसंज्ञानाहिकसाय ॥ १८ ॥
नहिमत्यादिकच्यारचोग्यांन ॥ येकचराचरकेवलज्ञांन ॥ चाख्यअचाख्यअवधिनाहिकांम ॥ केवलदर्सन

हीअभिरांम ॥ १८ ॥ अभविरासमेनांहिकोय ॥ भविसंम्यक्तीक्षायककुंजोय ॥ उपशमवेदकनांहिपिकांनि ॥ नांहिमि
स्रीसैनीजांनि ॥ २० ॥ सामायकछेदोपथापना ॥ नहिपरिहारविशुद्धलापना ॥ नाहीहैसूक्ष्मसांपराय ॥ जि
थाख्यातहीयेकबताय ॥ २१ ॥ अनाहारहारसुजांन ॥ त्रयोदशमसंजोगीथांन ॥ अठयसम्प्रदशाचापांनजी
वपंचेंद्रीसैनीजांन ॥ २२ ॥ सूक्ष्मक्रयप्रतिपातबताय ॥ शुक्लध्यांनकातीजायाय ॥ आरतिरुद्रधर्मनहिहोय के
वलकेउपयोगदोय ॥ २३ ॥ आविरतद्वादशपांचमिथ्यात ॥ अवरकषायपचीसोजात ॥ आठजोगजुतये
तेनांहि ॥ आश्रवजोगासगनमांतांहि ॥ २४ ॥ चोरलाखकोडिकुलतने ॥ चौदेलाखजानिमसने ॥ लब्धपायेकशु
क्लपरधांन ॥ बाकीलिउपाकानविधांन ॥ २५ ॥ आगेबंधउदेसत्ता ॥ सोरठा ॥ प्रकतिइकयासीजांनि ॥ वि
क्रतिअनउदेव्यारमे ॥ जहतीर्थंकरआंन ॥ उदेहपहैतेरमे ॥ २६ ॥ दोहा ॥ नाहैउदैपरकतिअसीउदेहोयचा
लीस ॥ विक्रतिकरनहेतीसकीसंजोगजगदीस ॥ २७ ॥ बरनचतुकसंस्थानषटअरविहायगतिदोय सु
थिरअथिरश्रुभअश्रुभसुसरदुसरदुकजोय ॥ २८ ॥ यकउसासयकबदनीपुद्गलिप्रत्येकनिरमांन व
ज्ररिषभनाराचकोसंघनसकसुजांन ॥ २९ ॥ पारघातअपघातदुककारमांनऔदार ॥ अगुरलघुतेजस
यक्कुरिअंगोपांगोदार ॥ ३० ॥ चौपई ॥ सत्ताप्रकतियेच्यासीतनी ॥ त्रेसठिपरकतिक्षयमेगिनी ॥ त्रयो
दशमसंजोगीथांन ॥ बंधयकसाताकोजांन ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ उत्तरगुनपरनपंचेंपरनवलेप्रमाद ॥ सपेसील

सवभेदतेसोवरनोंविनवाद ३२ ॥ अथप्रमादकथन ॥ सोरठा ॥ विकथावचनकाआय । इंद्रीनिंद्रानेहजु
त । च्यारिच्यारिपनथाय । एकएकपदरैगिनो ३३ ॥ अथपचीसकषाय ॥ छप्पय ॥ अनंतानअप्र
त्याख्यांनजुजानियै । प्रत्यारव्यांनसंज्वलनच्यारिभैआंनियै । क्रोधलोभमदमांनभेदतैसोलह । हां
सिअरतिरतिसोकगिलांनभैफुनिगहा । पुरसनपुंसकनारिवेदतिहुधारियै । गिनिपचीसकषायहि
यातैंटारियै ३४ ॥ अथविकथापचीस ॥ भारज्याभोजनदेसराजरिपकाविकहांनी । चोरचुगलपाखं
डदेसगुनलोपवखांनी । देवीनिछरमकांमनिंदरटोली । निजकरनीपरसंसकलहपरपीडाबोली
देसकालअनुचितवचनक्रांतिआरभउपदेश्रामर । यसोगिलांनवाजित्रसुरयेविकथापचीसलर ३५
॥ अथसाढासैंतीसहजारप्रमाद ॥ सोरठा ॥ सनेहमोहयेदोय । निंद्रापंचथकीगुनें । भेदतवेदआ
हैय । यैगुनेइंद्रीमांना ॥ ३६ ॥ तैंवसाठिहोजाय । सोपचीसकेषायगुन । जवयदरैसैथाय । सोगुनिये
विकथाथकी ॥ ३७ ॥ उमसाजारसैंतीस । अपरअधिकापांचसै । भेदकहेजगदीसयाविधिसवैप्रमादके ३८
॥ अथअसीभेदप्रमाद ॥ प्रथमच्यारिकषाय । गुनियेइंद्रीपांचसे । तवैपसहैजाय । सोविकथागु
नेतेंअसी ॥ ३९ ॥ अथसीलकेअठारहजारभेदकाबोधप्रकारनिरूपरण ॥ दोहा ॥ आतमधर्म
अनेकहै नामभेदसंखेप । निजतोदर्सनज्ञानव्रतयादोयपरखेप ४० वरनंदोपयरूपराजैसेसीलसुभ १

य ॥ परपेक्ष्यातियकालजनसुखसायोधिविभाव ॥ ४१ ॥ आंनदमयसंसारंगाकोवचमनकायलगाय ॥ कृतकारि
रितअनुमोदनांतबनोभेदह्वैजाय ॥ ४२ ॥ मैथुनपरिग्रहआरंभसंग्पाकेरनमारि ॥ तवकत्तीसंदेहनाहिकोइंद्री
पंचनिवारि ॥ ४३ ॥ जवइकसौअसीवनेसोगुनिदशविधिजीव ॥ तिनकीहिंसाकातजानठासैसोलाखिल १
च ॥ ४४ ॥ अथदशविधिजीव ॥ बहनीवारिवियारंभसाधारनयरतेक ॥ विकलेंत्रयापचेंद्रीयागनिदस
धारवंबक ॥ ४५ ॥ क्रोधादिककेत्यागह्वैदशलक्षनद्धसार ॥ तिनतेंदारासैगुनेठारैहोतहजार ॥ ४६ ॥ लक्ष्मा
यक्ष्यावरनियात्रयवतियकीयापक्ष ॥ चरनोत्रयादक्षसहसजिनआगमतेंदक्ष ॥ ४७ ॥ चेतनजडइतियदो
यविधिजबकाकरूखयांन ॥ सोहेतीनप्रकारतेकाठचित्रपाषांन ॥ ४८ ॥ वचनसहितमनकायतेंतगुनेंहो
तषटभेवकृतकारीतअनुमोदतेंअठ्यादशागिनलेब ॥ ४९ ॥ इंद्रीनितेंठारेगुनेंनिवैभेदह्वैजाय ॥ यकसो
अस्सीहोतसोदरवितभावलगाय ॥ ५० ॥ क्रोधकपमदलोभतेंगुनेंसातसैवीस ॥ अवुध्यमनतनितपकेस
भोभेदकेंहजगदीस ॥ ५१ ॥ सुरीमिनषनिरजंचनीमनवचतनतेंताय ॥ कृतकारितअनुमोदगुनियातवी
सहुजाय ॥ ५२ ॥ येनकोपंचद्रीगुनेंह्वैइकसोयतीस ॥ दोसैसत्तरिबिनतहेंदरवितभावितहीस ॥ ५३ ॥ औरें ५
संगपांचमारितेसहसअसीहोजाय ॥ अनंतानकीसोलहतसोलहगुनाय ॥ ५४ ॥ सतरासहसरूदोयसे
असीचेतननारि ॥ वीससातसैजोडिजदठारैहोतहजार ॥ ५५ ॥ इमिसीलठारेहजार ॥ ॥ अथउत्तरगु

नचौरासीलाषभेदवर्नन ॥ चौपई ॥ उत्तरगुनचौरासीलाष ॥ सो वरनंजिनआगमसाष ॥ जियविभावके
कारनवाजे ॥ सो सव उत्तरगुनमें त्याजे ॥ ५६ ॥ हिंसाअंनृतमईथुनचोर ॥ परिग्रहक्रोधकपटमदजोर ॥ लो
भजुगछ्याभैरतिदोष ॥ दुष्टवचनतनमनकायोष ॥ ५७ ॥ मिथ्याप्रमादपिसुनअग्यांन ॥ इंद्रीजुतइकईस
सप्रमांन ॥ अतिक्रमव्यतिक्रमहीनअ्याचारअनाच्यारागुनच्यारप्रकार ॥ ५८ ॥ वेइकईसच्यारिपनगुने ॥ चौ
रासीहुगुनमुषभने ॥ यनकोंगुनियेदसविधिजीव ॥ चौरासीसैहोतुसदीव ॥ ५९ ॥ सीलविराधनदसाव
तिगुने ॥ सहसचौरासीहोतेसुने ॥ तियसंसर्गपुष्टरसपंच ॥ सुंदरयजुगधआदांन ॥ ६० ॥ भषनगांन
द्रव्यसंजोग ॥ दुष्टजननमैंहूउपयोग ॥ नृपसेवारैनीसंचार ॥ येदससीलविराधनहार ॥ ६१ ॥ यनतेंसह
सचौरासीभये ॥ सो आलोचनदसगुनलये ॥ आठलाषच्यालीसहजार ॥ हैं उत्तरगुनविस्तार ॥ ६२ ॥
फुनिदसप्रायश्चितजेदोस ॥ तिनतेंगुनेकोडिकेरासतवहैंचौरासीलाष ॥ मनधुरभाषितसतासा
ष ॥ ६३ ॥ इनकीभावनरायसदा ॥ तोप्रापत्तिहोजावकदा ॥ गुनथानापरपाटीमांहि ॥ जैसेंहवरननहैंताहि
॥ ६४ ॥ दोहा ॥ मिथ्यासासादनमिसरतीन्नंगुनमेंनांहि ॥ अविरतविरताविरतगुनसमदृष्टिपांहि ॥ ६५ ॥
आनंतानमिथ्यात्वकाहांनचतुरथेथांन ॥ येकदेसधारैवातदसव्रतगुनवांन ॥ ६६ ॥ परमत्तहोतमहाव्रती
धरिसामायकदेस ॥ अप्रमादगुनसातमेंजहविशुद्धतावेस ॥ ६७ ॥ गुनअपूर्वअनिवृतकरनरागादिक

अमत्त॥ यामेसांमायकमहापरनवन्याचरित्र॥६८॥जातअमत्तकषायसवदशमांगुनकेअंत॥जिथाख्यात
चारित्रगुनअपारैवारैसंत॥६९॥गुनपूरनजातेरवेक्षीनमोहसापेषि॥घातकर्मअरजोगकानासचोद
वेदेषि॥७०॥अरतिरूद्रकरनांनहीधरनांधरमाविसोषि॥तामेभेदव्योहारतजिनिश्चेयेकहियेषि॥७
१॥भेदविचाराविचारतेहोतनकर्माविनास॥जबअभेदसुधकोगहेतवपावेसिववास॥७२॥अथपंचप्र
कारचारित्र॥चोपई॥मुनिपदकाचारित्रसुजान॥पंचभेदभाषाभगवांनप्रथमसदासामायकसार
छेदथापनांदोषनिवार॥७३॥फुनिपरिहाराविशुधसुषदाय॥हांमेगुनसूक्ष्मसांपराय॥जिथाख्यातअ
तमअविकार॥पपारैवारैगुनकाधार॥७४॥सामायकत्तोवरननभया॥व्रतप्रतिमांमेसोकहाचित्तया॥श्रा
वकनित्तपनेमधारिकैरे॥मुनिवरसूदासासताधरै॥७५॥अधिकाधरैनित्यत्रिकाल॥सावद्यित्यागीजी
विकुपाल॥श्रावकदुपटाधातीधरै॥मुनिवसनगुनममनपरिहरै॥७६॥कालउलंघनपरतिनकरै॥स
मताभावविशुद्धअनुसरै॥दोषलगाव्रतछेदेतदा॥फुनिथापैसाहूजावदा॥७७॥दोहा॥प्रथकवरस
तीधुनिसुनिरपटेनिकटजिनराय॥दड्डाकाल्हउत्तपतमरनसवेवताहिजाय॥७८॥तीसवरसवयकापुरी
विशुद्धरहितपरमाद॥गामनकरैरनितिकाबादासंध्याछोडिप्रमाद॥७९॥प्रत्याख्यांनपूर्वगाहेवलवीर
जकाधार॥प्रदुरनिरजराकरतहेधरैकठिनआचार॥८०॥जोकदाचिसुस्वाध्यायकेंकरेविघनअतिघोर

येकचरनठांदैरहैकितेघोसबठोर ॥ ८० ॥ येपरिहारविशुद्धहैसुनिसूक्ष्मसांपराय ॥ अणुद्धपरवकैहैजहां
संज्वलनलोभकषाय ॥ ८१ ॥ कैउपशमकेदोयबेसबदपमोहकषाय ॥ येनादशकेवांरवैजिथ्याख्यातचित्थाप
८२ ॥ थिरतरहैउपशमागिरैअथ्रेक्षायकीभाव ॥ जिथारव्यातसंपूरनहूतअनतचतुष्टयपाय ॥ ८३ ॥ सामाय
कचारित्रतेअनंतअधिकाविस्तार ॥ होहेभावविशुद्धताजिथ्याख्यातलौसार ॥ ८४ ॥ इतिचारित्र ॥ अ
थपंचमहाव्रतभावनासहितकथन ॥ दोहा ॥ करेक्रियाश्रावकधरमसोउपागेअनगार ॥ ओमहाव्र
तमेआदरैताकातैयंप्रकार ॥ ८५ ॥ तिरसघातसंकलपकरित्यागेश्रावकधर्म ॥ त्रसथावरजियजातकौ
घातजेमुनिपर्म ॥ ८६ ॥ कृतकारितअनमोदनामनवचतनमेंस्लाय ॥ तजेविरागमिहाव्रतजोलौतनमेंअ
य ॥ ८७ ॥ अथअहिंसाव्रतकीभावना ॥ अरिल्ल ॥ वचनगुप्तमनगुप्तईर्ज्यासुमतिकनावै ॥ आदाननिक्षेपनासु
मतिनिर्दोषविवेकधेरउठांवे ॥ यांनपांनदिनदेखिकरैनिर्दोषस्वकघर ॥ प्रथममहाव्रतपंचभावनाभावेमुनिवर
८८ ॥ अथअनुव्रतभावना ॥ दोहा ॥ धरमरहैअराजीयकवेकहिनअसीयरागप ॥ तजेकरूंमुनिसर्वथा
भावेहितमितसाय ॥ ८९ ॥ देशकालवयभावलखिजिनआगमअनुसार ॥ उपदेसेकेश्रुतपढेनिजपरकाउ
पगार ॥ ९० ॥ भावना ॥ अरिल्ल ॥ क्रोधकेपरत्यागलोभपरत्यागलगावे ॥ बेरहांस्यपरत्यागिकोंनहूभैनां
ल्यावे ॥ अधर्मअंनुअनुसारवचनमुखनांहिउचारे ॥ दुतिपमहाव्रतपंचभावनासाधविचारे ॥ ९१ ॥ अथतं

यमहाव्रत॥दोहा॥चिनदीयजलमृत्पकाश्रावकतोनहिलेत॥मुनिवरलेनहिविनदीयाभईपरीस्पालेत॥८२॥भाव
ना॥अडिल्ल॥कोटरगुफानिवासवसैसूनोघरपाया॥वरजैजहांनजायआपवरजैनहिआया॥निसंवादनकोस
रैभोजनजिनभाख्या॥त्रतियमहाव्रतपंचभावनाइमश्रभिलाख्या॥८३॥ब्रह्मचर्यमहाव्रतदोहा॥श्रावकपरना
रीतजैराखैव्याहीनारि॥निजपरचेतनजडसवतियत्यागैश्रनगार॥८४॥भावना॥अडिल्ल॥त्रियभववचनाकोहल
थैनहिरागिमन॥पुष्टश्रसनताकैरकौसंसकारनाहितन॥पहलैसुभैरनांहिजानियेपंचभावना॥कोरश्रप्र
श्रंतजीमुनीसुरधारिचावना॥८५॥श्रथपरिग्रहत्यागमहाव्रत॥दोहा॥परिग्रहकोंपरमांनतेराखैगेहीनेह॥
तिलतुससमराखैनकुंछूमरछातुजैश्रछेह॥८६॥भावना॥पांचोंइंद्रीकेविषैइहांहैपंचप्रकार॥येनश्रस
नोगिमनोगिपरहभावनकरैउगार॥८७॥यहैमहाव्रतभावनालिषीजिनागमवांचि॥ताहिवितारनपु
नियदानिजश्रातमसैराचि॥८८॥श्रथषटश्रवासि॥समतावंदनाथुतिकरनप्रतिक्रमनस्वाध्याय॥षट
श्रवसमुनिनितिकरैमनवचत्यागवनाय॥८९॥श्रजालिषंमुनिचरितकोंसूत्रानिकेश्रनुसार॥ताकोंसुन
तेसमऊतेदू[illegible]रिजातश्रघभार॥१५००॥श्रथमुनिचरित्रगीता॥छंद॥श्रढयासी॥ततनज्ञानचरनिकल
हेदिसपातैरचारितध्यावना॥तपतंपेवारैधसप्रधारेदशरूढादशभावना॥भोगपरीसैवीसदोकोंधर्मश्रुक्ल
श्रपदरे॥सवमोहमारकर्मटारैराज्यसिवकाजाकरै॥१॥श्रथतेरैचारित्रगीता॥छंद॥धावरतसकीतजे

हिंसारखवयपरातिनकहै ॥ विनदीयाल्लेनाहिंत्रियात्यागेपरिगहैकुहिंनांगहै ॥ तनमनवचनकेजोगरोकैगुपतितिहुंसा
धेयहीं ॥ परिव्रतकरैतवसुमतियालेपंचजिनवरजेकहीं ॥ ५ ॥ पंचसुमतिगीता ॥ ऋडापमांन निंद्रारिचालेवच
नतिनिमाठिनकहै ॥ निरदोषपरघरयेकवेरानिरसभोजनकोगहै ॥ मेलेउठावैपुस्तकादिकआचितभूमिक
रीनहो ॥ मलपत्रखेपेभूमिप्रासुकभुमतियमपांचूमहो ॥ ३ ॥ अथद्वादशतपगीतां ॥ अनसनउपनेदरस-
नित्यागैवरतपरिसंख्यानहै ॥ विविक्तसय्यासनकरलेसोकायबाहिरतपयहै ॥ प्राचित्त विनईवयावरतीसा
ध्यायनैमेंध्यावनां ॥ व्युत्सर्गध्यानसुज्ञानजितरभेदषटतपपावनां ॥ ४ ॥ अथअनसनतपगीता ॥ त्यागैच्या
हाराभेदच्यारापरिगहाआरंभहरै ॥ विषैइंद्रीपांचत्यागैउचितथलआसनकरै ॥ तजिरागदोषयाहोयचोथा
भवतैजिनवरजेपे ॥ आगमविचारध्यानधोरभव्यअनसनयपथपे ॥ ५ ॥ अथउनोदरतप ॥ श्रावकघटावै
जेवैमुनिकेविवधिभोजनदेतहै ॥ येसुतपभोजनलेअपूरनउदरभरनाहीतहै ॥ जालचामिटावैरजनस
टावैगाहैप्रमुकसरनकैयमकैरैआमादजित्रतकोंदूषणआरस्महरनको ॥ ६ ॥ अथव्रतपरिसंख्यातपगीत
का ॥ थापैश्रावकसदनसंख्यातणारसंस्माधरै ॥ कैधपदानीकायचेष्टासोमिलैभोजनकरै ॥ जोनांमि
लैविधिलनक्षेनांहींआधिकसमताकोंगहै ॥ दुयज्ञनभ्याधाहरनसाधवरतपरसंख्यानहै ॥ ७ ॥ अथरस
परित्यागतपगीतां ॥ रसदूधदधिघृततयांडच्यारामध्ययनमेंराविले ॥ साध्यामिलैतौकरैभोजनप्रयम

आख्यादेखिलें सवविधिभोगनिनागत्यारागतनहीतजिद्या वरअसकिहोकेकोरे भोजनदेरेजो विमताभया ८ अ
णविवक्तसत्यासनतपगीता वीतोअनंतोकालअकलोनांहियरनताभई कौनाप्रतनअजन्नमलीनांभरपु
धिविपताभरे घरदारसंपतिनिभ्रतकारनजांनिदुखदायकचुरा निरजनसघनवनभूमिप्रासुकसघनआसन
जाकरा ९ अथकायकलेसतपगीता घनधांनदासकलन्याग्तनितजनांसुगमहे तनयकभेकअनादि
कालिसतेजुदाईविषमहे सोहरततनतेममततनतेध्यारिसमताजिनमती जवधरततनपरमादकौतवकायक
लेसकरेजती १० अहाराद्विप्रहुरिवसतजात्यंतथाअंतअनपक्षहे मिथ्यामतीह्वकरतातिनकोपाकितपया
पाक्षिहे आनंमतभवनत्यांनांहीचहुरिमनआधारहै यहतपअंतरअवेभावतातहिकरतेंसारहै ११ अथप्रा
यश्चितप्रगीता छंद प्राचित्तजानोदोससहनांभरतांकनोभनां आलोचनाप्रतिक्रमनतदुभैपुनिविवेकसु
थांभना व्युतसर्गतपक्षतकेदजानोपरिहरनपुनिथापना नोविधिजिधाचितदोसप्रानेश्रुद्दहैचितअपना
१२ अथआलोचनागीताछंद दसोदोसकरकेगुरनकहनादोससोआलोचना अलपप्रायश्चितभेकीयेदं
यगोयासोचना मुक्तिअसकिकोगुरथोरदेसोधारिहैसनकूंकहै कोनैनरायप्राटभायेदोसतीजासोपहे १३
अल्पहलागागिनेनादहीकहेमोटाकुचितहे योदोसमोटाअहमोटाजांनिकोटागचितहे पहलेचतावैतोसु
नाउँपांनिसेवापेपागा जवघनंवात्लेतवयोत्नांआपकेहूसनत्मगा १४ गुरुवचनमेसंदे[illegible]केआनका

पछुतावनिफेरै॥ सामायिककोपडिक्कैलैकेंआपहीदृश्यनहरै॥ जैसादूसैतैसाहीमोमेंमांनविनपूछेकरै॥ दोसयेआ
लोचनाकेटारितेआनंदभरे॥१५॥ मुनितोकहेयेकांतगुरुकेंआर्जिकादोमिलिकहै॥ जोमांनमेंतैकहेनाहीसोवरतकेंहन
नेहै॥ मोदोसमिथ्यादोषहकरनाप्रतिक्रमनसोजानियेआलोचनप्रतिक्रमनदोउकरेतदुभयमांनिये॥१६॥ दोषी
कौसंगहरनासोविवेककह्यांनियेमुतसर्गतनतेममततजनाव्युत्सर्गकहनाजानिये॥ अनसनादिककरनतपकहे
छेदनकुंनलैरलिंगावना॥ दिकालयादिगयेतिनमेंमांसपाखिघटावना॥१७॥ परिहारसोसंगवाहिरदेननाकरिअ
वादआपना॥ छेदीगईफुनिधरैदिक्षाज्ञांनिसेउपथापनां॥ येकोनधारैसोकह्यौतद्वचनजिनअवधारिकै सो
करौबुधजनसदाकल्मषसुद्धभावसवारिकै॥१८॥ परनारपरपराउपकर्नगादहनांआंनसंघमैजावनां॥ पूछेविना
उत्पादिकरनातहांलेआलोचना॥ विसमनैंआचासिदोगवकछेनधर्मप्रतिक्रमनकरै॥ अतिचारलागेप्पानिमेंजो
नेवनदूमेंनआदरै॥१९॥ अचितामिश्रतसाचितलेलेयवनअनुचितउद्धरै॥ व्युतसर्गलोतोकरजोतत्रीविनेअनो
कांतिरै॥ पगलागेपुस्तकहरितनघर्मैदैअनसनादिकतपधुरै॥ मिथ्यातपापैमलिनिधैकेछेदरिक्षाआदरै॥२०॥ मूलगुन
मदोसलायेसावधारिकोफिरै॥ मरज्पादवीतिअरजनकरैतसुगुरताकोंआदरै॥ उनमत्तभोलासंकतजिकैआंनि
अतिपायनिपरै॥ बहुरिदिक्षाहोततताकूंदोखयमानिरमलकरै॥२१॥ इतिप्रायश्चित्तवर्णनं॥ अथविनैतपगीताः॥
मोक्षसंसैभरमतजिविनैज्ञांनसुधारना॥ जिनैंदर्शनतत्वरुचिमेंदोससंकानिवारनां॥ ग्यांनदर्सनसहितचारि

तविनैभावविरागता॥उपचारप्रतासिपरोविगुरकौनमनधरिअनुरागता॥२२॥आचार्जिनिघाद्दायतपसीसिस्परो
गीगरागनका॥कुलयंधसाधमनोहदउाकायेधवाधारहरनका॥अंनिद्रमल्वेकायकारिकैवयाव्रतसाधनकरै
निरविचकसावनसल्पागुनपलैकलमयहरै॥२३॥रविरिद्धिधारिदमेंदुद्रीजतीताद्दिवयांनिये॥अवाधिम
नपर्जेसद्दिनजोताद्दिमुनिवरजानिये॥अनगारयोसवसदनत्यागीसंघजिनमतमुनितना॥मुनिआर्जिका
श्रावकत्रियाकोसंघभाषेमुनिजनां॥२४॥अथस्वाध्यायतपगीत॥वचनातोपाठपठनाप्रकैंद्यकरनापूछन
अनुप्रेक्षिचितवनआमनायाशुद्धपदकायोघना॥उपदेशदेनोसांचकहांनांभेदतपस्वाध्यायके॥संसैनिवं
वारकदोकल्यारकअतिविशुद्धतादायके॥२५॥अथव्युत्सर्गतप॥व्युतसर्गकहानांममतनजनावाह्यभि
तरपरिगहरा॥सोकहाक्षाग्रेमहाव्रतमेंधमेंदउामेंपुनिकहा॥अरकहाप्राश्चितभेदमांहीविहारतपमैंअवकहा
सोदोसनांउत्साहकरंताउन्नरातिरहैंसदा॥२६॥अथध्यानतप॥ध्यांनज्यांनरोकिचितकोएकठौराराखिवो
संहननउतमतीनमेअंतमहूरतथ्यामिवो॥दोध्यानआरतिरुद्रषोटाकुगतिदामिथ्यामती॥दोयवरोधर्मसुक
लधरिकैसुगतिवलैसमाकिती॥२७॥इतिद्वादशतप॥अथदशलक्षणीकधर्मगीताकं १०॥उत्तमक्षमा॥प्र
थ्वीहस्तावेनीथिजावैअसीरिद्धिमुनिकैवनी॥तिरदुखजनउपसर्गठानैघोराविपताअतिघनी॥सोसहैसारी
क्षमाधारी॥कोधमनमेंनाधरै॥जियजातमातसमांनमानेदुष्टताकासंकरै॥२८॥मार्दव॥रिधिरिद्धिधारिअव

धधारीवडानुकूलप्रतितपकैरे ॥ मोसानकोऊग्रोरदूजादूसामदमाननाधरे ॥ करतेछ्वावसधारिष्यावसकेरहैनिज
ध्यानमें ॥ सबममतत्यागीमुनिविरागीस्वेमंत्रपनेग्यानमे ॥ २९ ॥ आर्जव ॥ मुनिमनवचनतनसरलशठेकपट
तानाहींकरे ॥ द्वैदोसगुनजाकेंहैगुरसोदियसोप्रायश्चितधरे ॥ सोकरतवर गतमाहसैप्रतीआपनाहितकरनें
याआर्जवागुनधराभविजनधर्मविघ्रनिवारने ॥ ३० ॥ सत्य ॥ परनास्वाबेथुतिवनावेसीसुनावेकहनको ॥ कोषड
गवांवेकुढिकहावेआपनेचितचैनको ॥ वनाहिवोलमोनआनेजानतेसबउपायमें ॥ सबकुठत्यागीसत्यपागि
प्रगटसकलजिहानमें ॥ ३१ ॥ सौच ॥ अंतरायहोतजायवहुदिनयेकादिनविधिमिलिगई ॥ तवलेतग्रासविराग
तासंतवधताकोतजिदई ॥ फुनिजाकदाअंतरायआवेग्रासतवततषिनततषिनतजे ॥ मनमेविषादनकरेमुनि
वाकुंचतागुनकोसजे ॥ ३२ ॥ संजमः ॥ मासोपवासीमेंगेलजातसुरपरीछाकारनें ॥ चहुंधारसवजीरवेभूपरिवा
टगामननिवारनें ॥ संवरनठारेजोगाधरेअचलवानिकेधरिनिमे ॥ उपसर्गघोरेअमरहारेसीसधारेचरनमे ॥ ३३
तपः ॥ नरुस्त्रपावसकरेकावसफासमांझरदुषसहे ॥ नदीकिनारेध्यानधारेसीतकेरेसीदहे ॥ ग्रीषमरुपरीसि
लाहेरीजोगप्रतिमांव्रतधरे ॥ जपतपसोहंजपकरषितरुषकर्मनिरजरे ॥ ३४ ॥ त्याग ॥ धनधान्यसपातिकोलिदंपति
ततीज्यांजोरननित्रा ॥ मनरुरीसमताधरीसमताकरीकरनाअगिना ॥ नितिदांननिरमेदेतसबकोग्यानदेव
भविजना ॥ मुनिहिविरागीतपकुंत्यागीहेगरागीनिजप्रना ॥ ३५ ॥ आर्किंचन ॥ मरानकोइमेनाकिसकामिन्नमिंन्न

परेदरा है॥ नांकुयेकवहूदेोयातेनदिऱ्येवन्यारेभसेरें॥ द्रविसवग्रनादीअंतवंजितग्रपुनग्रपनसुभावमे॥ ममताभिटावे-
भाविपावेल्यगेग्रापपुपावमे॥ ३६॥ ब्रह्मचर्य॥ सवकांमनाग्रसमनिसमनांयहग्रब्रह्मजपममता॥ नारीनपुंसकपुरसनं
हीवस्तचेतनग्रारत॥ ब्रह्मचर्जिध्यायाजिनूपापभेायिकेसुषसासन॥ दसधर्मपालेसाधानिश्चैअरश्रावक-
ग्रासत॥ ३७॥ इतिदशधर्म॥ अथद्वादशभावनागीतछंद॥ जेतीजगमेवस्ततनतीग्राथिरपरजेतेसदा॥ परिनमनरा
यननांहिसमर्थइंदचक्रीपुनिकदा॥ तनधनजुवनसुतनारिपरिकरजांनिदंभानिदमकरसा॥ ममतानकीजेधारि
समतपांनिजतलमैनमकसा॥ ३८॥ चेतनग्रचेतनपरिगहेसवहूचाग्रपनीनिथिलहे॥ सोरहैनाहिकरारमांफिक
अधिकरायपानांरहे॥ अवसमनकाकाइंदलोकाइंदनाहिरहतंदे॥ सर्नतायकधर्मग्रातमताहिमुनिजनगहतंदे॥ ३९॥
सुरनरनरकपशुसकलहरकमचेरवनिरदे॥ सुषसायतानहिभासताग्रवचिंतिमेंग्रनिसनरहे॥ दुषभांनसी
तपदवगतिमैनारकीदुषहीभरे॥ तिरजंचपिनथावियोगरोगीयोगसंकठमेजरे॥ ४०॥ कंयाभरतताहफलताकेया
दषपरकरथावकं॥ कयालयग्रायालपजागाफाजभूषनरावकं॥ जीवतफरततुमयकलकुंकालकंताहगया
संगिग्रारनांहिलगतेरीसीयभरीगाहिभाय॥ ४१॥ इंद्रीनितेजाग्यांनजावंतविदांनदंग्रलयिहे॥ सुसंवरवक
रतग्रनभाहातवपरताश्चिदे॥ तनग्रांनजडजानंसरूपीतंग्ररूपीसत्पदें॥ करिभेदग्यानसुध्यानधरिनिजंग्रा
रवातग्रनित्पदे॥ ४२॥ कयादेयिसग्रापिफरैनाग्याहपसुदरतनलया॥ मलमतभांडाभस्यागाठातनजानेभमग्रा

या ॥ संमघनांहीन्यातमातुरकौनचातुरतापरै ॥ कालगटकैनांहिआटिकैकौ दितुजकांगिरपरै ॥ ४३ ॥ कौषवान्अस्कोचुरानांदीव
स्ताविवाधिसुभावदैतनरथाविकलपदांनिउरमेंकनतरागउपावैहै ॥ येभावआश्रवबनातनदीद्रव्यआश्रवसुनिकथा ॥ तु
जनिमततैंपुद्गलकरमबनिनिमतंहुईतेविथा ॥ ४४ ॥ तनभोगजगतसरूपलखिकरिभविकगुरसरनाल्यासुनिध
र्मधारचाभरमगारत्याहरयविरुचिसनमुखभया ॥ इंद्रीअतिंद्रीदशविलीनीतिरसथावरवधतज्या ॥ तवकर्मकेआश्रव
आतरोकेध्यांननिजमेंमनासज्या ॥ ४५ ॥ तजिसकलपतीनंवरतन्तीनिंवाफिर्भितरतपतप्या ॥ उपसर्गसुरनरजडपशुकृत
सह्यानिजआतमजप्या ॥ तवकर्मरसविनझोनलागीद्रव्यभावानिरजरा ॥ सबकर्मदारिकैमोक्षवरकैरहितैचेत
नउजरा ॥ ४६ ॥ चिविलोकअनवमलोकमांहीलोकमेद्रव्यसवभरा ॥ भिनभिनमहपअनादिरचनांनिमितकपरनकी
करा ॥ जिनदेवभाख्याजिनप्रकास्याभर्मनास्यासुनितिरा ॥ सुरमिनरपतिस्गगनाग कीदि उरधमधअधोधरा ॥ ४७ ॥ अ
नतकालनिगोदअटकचानिकसिथावरतनधस्याभुवारितेजबयारिह्वैकेविंयद्रीपशुअवतस्या ॥ ह्वैकैतयद्री
केवीयंद्रीह्वैपंचेंद्रीमनविना ॥ मनजुतमिनषद्दोनादुलभदेशपांनअतिदुल्लभघना ॥ ४८ ॥ न्हंनाअरदेनांतीरथजा
धर्मनाहीलपज्प्या ॥ नगनरहेनांभर्मनांहींथसमांनंहीतपतप्या ॥ वरधर्मनीजआतमसुभावताहिविनसवनि
रफल्ला ॥ बुधजनधर्मनिजधारिलीनांतिनैकीनासवभला ॥ ४९ ॥ इतिद्वादशानुप्रेक्षा ॥ अथबाईसपरीस्याजी
तांकुह ॥ अतिसुधातिरथागीतगरमीडांसमसनगनअरतिपना ॥ तियासनआसनसैनवंधनकोधअनजाचकमना ॥

कुलिगिनिचलनाभरूराग्यकरवमालिनतनसनमानला ॥ प्रापान्प्रपानलदुर्लनावाढूलवाधामुनिजनां ॥ ५० ॥ घनकानि
प्रासीमासचासीकरनऊटपारनें ॥ सवसदनगलनकोनयोन्लसुद्धभोजनकारनें ॥ नवउलटप्रायेन्प्रचलठायेध्यांन
नजमेंप्रतिपंग ॥ वरसुधाव्याधासहतभारीहारिकेनाहीभंग ॥ ५१ ॥ कटुकमिल्याप्रकातिविरोधभोजनकठीन्तिस
मेंकेगरा ॥ ग्रीषमरूषारीतपभारीध्यानगिरसिरपधारा ॥ मुनिपीतिअम्रतभयतिरपतअपनाप्रनभोस्वे
षसाधमरीयाधमठीप्राजपसवाप्राघ ॥ ५२ ॥ निसिमाहसारीसीतभारीसहेचोफटामेघर ॥ जागवजमेंस
वजतरबरकेपिनकेमहकोहर ॥ केम्भगिनिजारसान्लधारकरजागतन्अनेकथा ॥ मुनिन्गनतनभावसन
ाघधरध्यांनसुपकथा ॥ ५३ ॥ मलपटवाजेअंतेगदाजनपराविसिरपरअथा ॥ गिरसिखरठाढेचरनदाहेसिला
तातीकिमथा ॥ वरदहनभयबहुलकसकेनननाधीरजलहे ॥ त्यांलीननिजरूकेभीनमुनिवरपरमआनंदम
ग्नहे ॥ ५४ ॥ घनघारगाजिवूंदवाजेरायदलनठपकपरमुरवाऽआरपिकपुकारसिखरतफूलेनफेर ॥ ननदांस
चंटभभिफुंदवसअंकुरफसे ॥ नवध्यांनधोबलांहिहारसाधआनंदमेवसें ॥ ५५ ॥ सिरचकरवातराजकरतसा
हतपुरसमदा ॥ जगआथिरजान्याधमअंान्याभमभान्यातपमहा ॥ फलदिगंधरविनाभयवनगहसंवरजि ॥ ६५
नेकला ॥ ननननगनसोहेजगतमोहेपापथाकेदुषस्हा ॥ ५६ ॥ अतिकठिनदुद्धरनगानरहनाकठिनविरतिज
मीतनी ॥ कटुगारमावाधामोदवरयावासीतवाधाकटुघनी ॥ कटुमिलतभोजनकठंनाहीकटुंकटिदुषघ

नों॥ नवन्मरनिनैंनिांहीकव्रतमुनिरैंवधरत्तसमनाक्रतिमनं॥ ५७ ॥सिवक्रर्दूनारीविधिविकाहीपंचवक्कतावेकरा
रांवनम्रायारचम्रमायानारिनाग्गनिविथभरम्मुनिजांनित्पागीढू विरागील्लनैंगल्लाईव्रदांमें॥ तियसंगासोंत
षुसीहांतेसोनाचिंतवैसुपनमें॥ ५८ ॥ गजरथतुरंगाचपलचंगावैरिकैचल्लनेसदा॥ हाथरथपिरतेक्रगनाप्पा
दनकदूपिरतेकदा॥ अवगढ्ढतवंध्वरसुमनवंटकचल्लनाचीतकरना॥ नयाक्रतिजल्लदक्रतिधीरनदोल्लेसक
ल्लविकल्लपतजिद्या॥ ५९ ॥ ल्लयिभूमिप्राशुकथाुरिक्रासकपांजतिवरध्यांनमें॥ नवक्रसुरकीन्नोघोरवि
रयासोरडुठत्तजिहांनमें॥ नवनाहिडरपेक्रचल्लथरपतनवचनुमननिरमल्ला॥ सवक्रशुरकरनीगढूनिरफल
विधिपाईकैकल्ना॥ ६१ ॥ कितिजिंसेजफुल्लानिवपल्लाल्लनढूल्लतपथ्यापोनमें॥ गंधक्रागरसुवापतियागरपा
ठनेलग्ममनमें॥ वनसघननिरजनसीहस्यानल्लनिढ्राढभैकारीवहै॥ जहारनिपिक्लल्लीभूमिकंकरक्रल
पनिंद्राकोगहै॥ ६२ ॥ अरंपराधविनल्लाथिस्याधदृङ्गनयकरिवाधंभारन॥ नवमोनरायेनाद्दिमायाद्दस
मताभारनुं॥ त्तियजातसांतमित्रभारगगदोसकरैनहीं॥ वेसाधभेरिवाधमेटानमोसिरलागिकेमहीं ६
३॥ मुनिभयेनरपतिसिठधनपातित्यागिसदनविभोधनो॥ ल्ल्याठिचारचुगल्लसवाल्लपटकदोसप्याती
जेना॥ सासुनैकानांनाहिल्लक्रनाकोधा दूरधनजमना॥ सुरपस्वरनांसांनिसरनांधांनिथंनितपोधनो ६४
सवससवाधाभयतिरघोसीतावरषाधामकी॥ निजंगावनाहिजाचेकादृसोनिश्चकांमकी॥ सुठली

यपहलेकरियेजेतेनांहितिनयादिनकरै ॥ निरमैनिसंकउकलंकवर्जितसुद्धजिनमुद्राधरै ॥ ६४ ॥ चिरकालपाल
नधर्मतपतैसरकितनुरवलथया ॥ दिनच्यारिवीत्तेफिरतैं रीतेलाभभोजननांभया ॥ अतिवधतिभावविशु
द्धनितिनितिगपांनमनपरंजैलया ॥ हूंनमं नितिप्रतिबमंदुरगतिसाधवेजगमेंजया ॥ ६५ ॥ तबसस्तचालै
कौनटालैसुघनवननिरजनतहां ॥ मैसदीभारीन्याकिसारीतुछबाधायाकहां ॥ योकवाकिंधारन्यावितारजन
नकरनांनहते ॥ जसत्रायकेरहजायमेरानतानाहींदहते ॥ ६६ ॥ धरिजिमप्रतिमाध्यांनउतमांधारिविठसिल
पैर ॥ उदिआयकंटकपरयानेनुनिश्चलकताघटकेतअरे ॥ तिहिंव्याहिकाढेविपातिबाढेसहैसोसमत्ताधरै
उपसर्गतालोरहेजोलोध्यांनतेमननांटरै ॥ ६७ ॥ अतिधरतजोरागासेमरोरागारमअतिठपोकुलतप ॥ च
लैपसीनापानऊनीबाउठीसुवपुतचपलाबिमालिननतनुमनकोनमोरत्लांनवस्रआनननदी ॥ जिनन्हां
नत्पागपाधर्मपाउपामाहकोजीतासही ॥ ६८ ॥ जेमपपदतजिगुधप्रभुनिपदस्यमनकरतजादहै ॥ कोदायिस
ठअपमांनहानेतवेनांअनुकुल्यातदे ॥ कोपप्रपजधर्मवर्फजवन्वाहरयातहै ॥ अपमांनसमांनजांकेसापु
कातिकापतहे ॥ ६९ ॥ हमपठनआगमअरअध्यातमकथनसंच्याकरतेहै ॥ अमानजान्यांनगतमांन्पाअं
नैविद्याधरतहै ॥ याकरतनांस्तिमांनमननेंमरवातगपानचठावना ॥ हूंनमं तिनकेचरनूरजकूंकरामुजिकृपा
वनां ॥ ७० ॥ चिरव्रतपाल्यादोघटाल्याकोटकूं ॥ जोसुनिअतिसरिद्धिहोनीमोनउपजोमापटके ॥ अगपांनये

मननां द्विलपावैं आपध्यावैं आपमैं ॥ कोटिकभवका पापनासैं करत जिनकेजापमैं ॥ ७१ ॥ परद्रव्यैं अनादिकालतत्वका
सरद्धानतैं भवनिरद्यौ ॥ बडभाग बुधजन ताहि के जिम नतत्वका सरधा गह्यौ फुनि धरि महा राकैं जो बाकमसंक
दिककरै ॥ जिनवांनिकूं करि पारिखि रमेउठीसंकापरिहरै ॥ ७२ ॥ इति बाईसपरीसे गीताछंद संपूर्णं ॥ अथ पंच
प्रकार मुनिकथन ॥ गीताछंद ॥ पुलाक बकुस कुसील निग्रंथ शुद्ध निपट स्नातका ॥ निरग्रंथ नग्न सबै मुनी
स्वरूप ज्ञानपांचें ज्ञातका ॥ हीन अधिक कषाय चारित भेद यातैं वनत है ॥ सबही दिगंबर पद मैं जैनी न सन अध कै
सरत है ॥ ७३ ॥ केइ प्रकार सबासि तैं मल गुन मैं दोष जात विराधनां ॥ अतिचार जुत है कदु दिनां ही मूलगुन की भावना
ज्यौं साल्लि तुसजुत चालि मांही त्यौं बरत्तहु सन मिला ॥ निरग्रंथ नग्न पुलाक मुनि का दोष तैं है एसा जिला ॥ ७४
जे मूलगुन कुं सुद्ध राखै उत्तर पर नाव ने ॥ उपकर्ण ज्ञान असिष्य गुरते राग मन तैं नाहि नैं ॥ जिनधर्मका उत्साह
चाह रथ असिमानना ॥ ज्यौं बालि निकसी सालि तुसजुत त्यौं बकुस मुनि जानना ॥ ७५ ॥ कुसील मुनि ते दोइ कुस
ज्यौं दवी ज्यौं निपट कषायता ॥ संज्वलन हीन कषाय पर्वक सो कुसील कषायता ॥ विन मोह अंतर वृद्धि क स कातै नि
जप्रदेश चलाय है ॥ प्रति सेवना सुकुसील मुनि जिन भवदूजा गायहे ॥ ७६ ॥ मोहा छिपायामहू त्तें माही रहाके
वल आवुना ॥ पर्ति मिटया बाप अंतर सव विकास अपावना ॥ दोउ रक्ते दै मयै चावर ज्यौं निग्रंथ सुथित है ॥ मे
दमांतिनके चनेक मत्ता निजयात जनके मिति है ॥ ७७ ॥ जिनअपांन दूरिनादर्नेनास्पाट्य मोहाच्छिपाय कै ॥ के

बलप्रकास्यास्यकलभास्यान्तरायमिटायेवै॥ अतिकूटिचोयेमयचांवान्योस्नातकईसहे॥ मुनिद्रंदफुनिंदानदिंद
नमिनमिकेपवित्रसीयहे॥ ७८॥ संजिमसुरतप्रतिसेवनांफुनिभीर्थेचिन्हुलिंगकेनाते॥ उत्पादलेस्याभावथानां
साधिलवसुहेतते पुलाकादिमुनिवरपंचपञ्चनुभागसुविचारिना॥ तवहरेसंसाजगप्रसंसाहीयसुभवि
तन्त्रावनां॥ ७९॥ पुलाकवकुसकुसीलजुतप्रतिसेवनायनतीनमे॥ संजिमसमायककेदथपनादोयदोपचा
रितलीनमे॥ च्यारिसंजिमजिथाख्यातीविनकषायकुसीलमे॥ निरगंथस्नातकजिथाख्यातीसुहुमावसुसी
लमें॥ ८०॥ दशपूर्वधारपुलाकवकुसीलजुतप्रतिसेवना॥ निरगंथकषायकुसीलदोउचौदपूर्वलेवना॥ जिनंथ
नवकुसकुसीलनिरगंथश्रोठप्रवचनमात्रेकार॥ आचारवस्तपुलाकजिथनसुकवलीविनसत्रका॥ ८१॥ त्या
उपालेकोवकानेवसिद्धसमाक्रिफुनित्यागजके॥ प्रतिसेवनापातालिनिरगाथस्नातकावेन्यवतर॥ व्रतदोयफल
गनपुलाकमुनिकैकप्रितकेहितभादना॥ उपकरनतनकीसुकृताकावकुसकेमनसोधुना॥ ८२॥ तैसवेतीर्थ
कसमेमाहातपांचसमकती॥ द्रवीलिंगनांहीभावलिंगभिविकतप्रकसवजती॥ कोईपटावकापठतहे
कोयसकोगमनमे॥ विनहनानाजानियाविधिविवाधिनप्रनध्यांनमे॥ ८३॥ च्यारीजिघन्यसाधमेफुनिस
नातकासिवहीलहे॥ पुलाकवसुअरसारवलोवकुसप्रतिसेवनागहे॥ निरगंथकषायकुसीलदोकअनु
तरनलोंअवतरे॥ उत्पाद्उत्पजघनदोबिधिश्रोजिनवरउच्चरे॥ ८४॥ कुमतीनलीनपुलाकजानसेठवकु

सप्रतिसेवना ॥ मुनिकुसील कषाय वैं का पोतजुत सुभलेवना ॥ लेस्या सुक्ल निरग्रंथ स्नातक जो गहीतै तिनक
ही ॥ संख्यातीत सुथांन लोंड्र पाकथन आगम में सही ॥ ८५ ॥ हीन अधिक कषाय थांनक सुनो जैसे होत है ॥ थोरे पुला
की धरै ताते बकुस मुनि के भात है ॥ याते अधिक प्रतिसेवना सु आनि कषाय कुसील है ॥ निरग्रंथ आगे का विशुद्ध
ताते स्नातक का काउ कीन है ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ पुलाक बकुस कुसील दो मुनि निरग्रंथ स्नात ॥ कहे राजत ते सदा वाद्य दी
प विख्यात ॥ ८७ ॥ सब मुनि पांच भांति के जीन घाटि ना कोरि ॥ उदै हतक थे बंदू सदा दीप अरदा दुइ वार ॥ ८८ ॥ इतिपु
लाकादि मुनि गण वर्णनं ॥ अथ प्रश्न ॥ चौपई ॥ उदै असाता होत तू है है ॥ सुधा परीसै सहित जु दाहै है ॥ याते
ज्यापद्य मगुन सोहै ॥ अनाहार आहार दिदोहै ॥ याका उत्तर ॥ होता सुधा आदि भहि कोप ॥ देव सातै तन प्रम
के सहाय ॥ ता पेत सदेह कबना पा सुनि लेजा जो आगम भाय ॥ ९० ॥ जपा मोहन हीन गाविराग ॥ ख्यान्याहीत
नैते अनुराग ॥ विषै भोग है इंद्री कारन ॥ इंद्री रहित नइ दां सुख धारन ॥ ९१ ॥ नांहि प्रयोजन उद्दीपांन ॥ प्रगटना आ
तम के वलपांन ॥ भया घातिया कर्म विनास ॥ रह्या अघातन का आभास ॥ ९२ ॥ तरकि मल निरर्थक जैसे ॥ व
लीजब दीभासै असे ॥ अनंत चतुष्ट महिमा धारी ॥ नहां परीसै को ना विचारी ॥ ९३ ॥ येउपचार परीसै कही ॥ के
रिज कारि है कुछि नाही ॥ अरस आहार काय थिति होय ॥ सो अब वहन न सुनि यो लोय ॥ ९४ ॥ कर्म वर्गना गदर
अहार ॥ नाहि पहेत वेहन आहार ॥ येउथ्यापि जे केवल ग्यांने ॥ ते अकास कफल वखांने ॥ ९५ ॥ गाथा ॥ तो

कर्मातियपरे॥ कर्मनारयमानसोअभमंरो॥ तारपसुकवलाहारो॥ पंषीउऊंनिगोलेउ॥ भाषा॥ चौपई॥ नरपशुकवलाय
पेद्रीलेव॥ कर्मनारकीमनसादेव॥ संजमीनोकर्मअहार॥ पंछीओजाहारविचार॥ २६॥ असनपासकोकवलाजा
नि॥ धातुविद्रुकोंओजकवयोनि॥ जलसींचनविधिलेवआहार॥ कर्मकानाहैनोहार॥ २७॥ प्रश्न॥ दोहा॥ अनप्र
रआहारविधिकहीसवलायरधांन॥ धुनिविहारआसनक्रियाकेसैहोतसुजांन॥ २८॥ उत्तर॥ दोहा॥ कायवच
नमनक्रियाताकोकहियेजोग॥ सोअरागीदोउनमेविनउक्रातेयोग॥ २९॥ सोरठा॥ जोगाक्रियासुभाव॥ हो
तओरएकभावते॥ गलितमोहपरभाव॥ विराजततनहेमघजपो॥ १५०॥ जोदिविधुनित्तपेगाज॥ त्योंकरनात्यो
वरसना॥ आसनसुथिरसमाज॥ त्योंविहारत्योंध्यावनं॥ १॥ उदेकालजवहोय॥ कत्रयासमविवाधवका॥ नदे
जतनविनहोय॥ विहारादिविधुनिक्रिया॥ २॥ मनकिरयाउपचार॥ कायवचनविरियाप्रगट॥ जैसेमायाचार
विनाजतनहेतियनमे॥ ३॥ चौपई॥ आयुकर्मनैतिथिअधिकाय॥ गोत्रनामवेदनीपाय॥ तबतिनकीतिथि
क्षयकेकाज॥ समुद्घातहेसुतउलाज॥ ४॥ दोहा॥ अंततेरमांथानेमआतमकेपरदेश॥ निकसिपैसिकोथिर
बनेसमुद्घातकेभेस॥ गाथा॥ दंडकुपाटवाले॥ कवाडजुपंलोकतस्समिस्संतु॥ पदेरपलोपपूरे॥ कर्मचय
होदरायपरवो॥ ५॥ दोहा॥ हैसमयादंडकतनहेओदारिककाय॥ अनाहारअपजैनहिपरजैहाएवताय॥ ५
समयादोयकपाटकेमिश्रउदारिकजोग॥ परतरपूरनसहितमिश्रवर्गनाभाग॥ ६॥ पातरपूरनादोयकेसम

याथ्यारिप्रमांन ॥ अनाहारअपर्जाप्तकारमांदपरस्वांन ॥ ७ ॥ अनाहारअहारतायाविधितैपहचांनऔरभांति
मांनेतिकैमिथ्यामतमेंज्ञांन ॥ ८ ॥ इतितेरमांगुनस्थांन ॥ १३ ॥ अथचतुरदसमगुनस्थांन ॥ दोहा ॥ मनवचतन
आसितत्वपेकिरियाकारहैनांहि ॥ कुवियथांनकीलीनोंअचलगुनअजोगकेमांहि ॥ ९ ॥ चलनमांउरनाथेरनां
रिविधुपेकिरियाकारहैनांहि ॥ कुवियथांनकीलीनोंअचलगुनअजोगकेमांहि ॥ ९ ॥ चलनमांकुठनाथेरना
रिविधुनितउपदेश ॥ संजोगीजिनकरतअपानहिअजोगमेंलेश ॥ १० ॥ त्रयोदशमगुनथांनतेगुनअ
जोगमकीन ॥ चतुरवीसप्यानकाविषेभायतहजहीन ॥ ११ ॥ नाहिजोगल्लउपानहीनांअहारअनहार
रुपरतक्रियानिरवृतीशुक्लध्यांनउपचार ॥ १२ ॥ षटपर्जेदशप्रांननहिनांहिंआश्रवाकाय ॥ नांमन
जुतमनविनन्हीगुनअजमाहिहाय ॥ १३ ॥ संयमसंजोगीसमसवैजांनिचोदमांमांहि ॥ कर्मप्रकतिका
कथनमेंबंधउदीरननांहि ॥ १४ ॥ अथउदै ॥ दोहा ॥ आपूगतिमानुषतनीपचेंद्रीत्रसकाय ॥ परज्यापत्रवा
दरसुभगतीर्थंकरपरजाय ॥ १५ ॥ ऊंचगोतपकवेदनीजसकीरतिआदेय ॥ येद्वादशपरकतिउपदैआति
नासकरिदेय ॥ १६ ॥ चौपई ॥ सत्तापकतिपिच्यासीहोय ॥ दोयवेदनीगोत्रदोय ॥ मिलषअरूपनांमकी
आसी ॥ तिनकाकथनकहतप्रतिलसी ॥ १७ ॥ पनसरीरसुरससंघात ॥ पांचपांचयेजांनिविख्यात ॥ षठसं
घनषटहीसंसथांन ॥ थिरओरअथिरअशुभसुनआंन ॥ १८ ॥ आनपूरवीगतिसुरदोय ॥ दोयविहायोग

तिसंजोग ॥ सुस्वरदुस्वरदुरभगनिरमांन ॥ आठपरसदुकगंधमुजांन ॥ १९ ॥ अनादेयअपजसअपघात ॥ अगुरल
घुफुनिहपरघात ॥ अनपरजउस्वासप्रत्येक ॥ नीचागोत्तवेदनीयेक ॥ २० ॥ येसबप्रकातिवहत्रिपिक्षानि ॥ अंतिस
मेपहलैमेहांनि ॥ रहीतेतेरहलहजेसमे ॥ तोविनासिसिवरमनीरमैं ॥ २१ ॥ उदैसमेंथीवारेवहो ॥ जिनथनआयजुतजे
रसही ॥ समयचरमेचारहहैथांनकरीहैनासासिवालेजांन ॥ २२ ॥ दोहा ॥ चौदेराजअंतमैलोकासिथराथीर
वास ॥ कतअतपहुसिद्धभैयेनमंनिरंतरतास ॥ २३ ॥ सोरठा ॥ नित्यनिरंजननाथ ॥ सुद्धसिद्धसर्वज्ञसिव ॥ परमा
त्मविनसाय ॥ अछेअतुलअनंतसुष ॥ २४ ॥ इतिचतुर्दशगुनस्थांन ॥ १ ॥ सोरठा ॥ नांनाजीसापेषि ॥ पुन
स्थानकनेनकिया ॥ मनेअपजेगिसोषि ॥ नांहिकेथांनकहतहूं ॥ २५ ॥ चोपई ॥ षीनकषायमिश्रसंजोग
अरव्यापकअनेकाथोग ॥ येतमोजियप्रांननहरे ॥ परनआयअंतनमेकेरे ॥ २६ ॥ मिथ्यातीप्रतिव्याहलं
है ॥ सासादनजुतनकेनगहै ॥ समकितसहितदेवशुभथापगुनअजोगतैमुक्तीकोदिजाय ॥ २७ ॥ प्रथमदु
तियचौथाजियजांन ॥ जनमलेपोषिअपजेवांन ॥ सचमसमांहिअहारकहप्य ॥ तहांअपजेत्यानेसांय
२८ ॥ समुदघाततेरमांनअंत ॥ होतअपजेसिवकाकंत ॥ औसांहिपरज्यापतसही ॥ पजेअपजेचारमांन ॥
ही ॥ २९ ॥ प्रश्न ॥ दोहा ॥ नवमादसमांथांनयोकिमअनिमिपापसंजिमकुडउथापनालेइपावेदकषाय
३० ॥ उत्तर ॥ दोहा ॥ नांहिविवध्यतिनाप्रगठअसेसरहतसुभाय ॥ अपुनैजानननजोगनांहिकेवलसदरला

य ॥ ३१ ॥ अथ गुनस्थांनकौ अनुक्रम ॥ औसर अनिवृत्तकरन तव त्यागै आ मिथ्यात ॥ करि विशुद्धता भावकी चतुरथ गु
नकौ पात ॥ ३२ ॥ द्रव्यालिंग जुत मुनि गरहै अनिवृत्तिकरन जु धार सप्तम षष्ठम गुन गहै मिथ्याभाव निवार ॥ ३३
॥ प्रश्न ॥ पहलै तै दूजै जाइ है दूजा तै जि आत ॥ तीजा तै चौथा लहै कौन अनुक्रम पात ॥ ३४ ॥ उत्तर ॥ दूजा तै
जा अति सिथल नहि चढहै गिर जाय ॥ तातै प्रथम मिथ्यात तजि चौथे मैं चढि जाय ॥ ३५ ॥ कै सम्यक आदि मिथ्या
तम अमीसा सक्ति महांन ॥ दूजा तै आलंबि के चारै याप तै सम्यक्त्वांन ॥ ३६ ॥ मोह विपर्जै भ्रम दुरै शुद्ध मानि हिय
आंनि ॥ कौ अवलंबन जिनवचन पढ़ै वेआविरतथांन ॥ ३७ ॥ तदां विशुद्धता भाव थिरतै ऊंचे चढि जाय ॥ उ
पसम मिटि मिथ्या उदै जो नीचा तै गुन आपाय ॥ ३८ ॥ बंध अनागत आयु विन धरै समकित कोय ॥ सो भुव
नत्रिक देव विन देवसुरग का होय ॥ ३९ ॥ ज्या तिन्ह आयु मैं बंधि कौ फुनि समकित लै सोय ॥ हीन भूमि षट न
के सुर भवनत्रिक विन होय ॥ ४० ॥ महाव्रती फुनि अनुव्रती मरि सुरगा ही जाय ॥ नरनारक तिरजंच की गति ति
नै नहि पाय ॥ ४१ ॥ आयुबंध जिन कर लीया नर नारक तिरजंच ॥ ते अनुव्रत म्हाव्रत विषै करै भाव नहि रंच ॥ ४२
पचिंद्री परज्यायता पहलै उपसम थाय ॥ सप्तम लौं चौथा थकी मुहूरत एक बताय ॥ ४३ ॥ फुनि दूजै उपशम
धरै ॥ कौ मिथ्या गुन पाय ॥ कै यह उपशम आदरै कै ष्यायक ह्वै जाय ॥ ४४ ॥ दूजा रै उपसम आतै चार उपार लौ
जाय ॥ तहां मन ह्वै जाय तब वगलै चतुरथा आय ॥ ४५ ॥ तीजौ उपशम नाधरै लौ मिथ्यात उपाय ॥ कै षिपा

ष्यायकगहैंकैवेदकतापाय ॥ ४६ ॥ उपसमप्रेरागिकैविषैजोतीमिरतनपाय ॥ सोअनुक्रमयकेघातीप्रेपरंप्रमतमे
आय ॥ ४७ ॥ उपजतसुरसुरगतिविषैउपशमसहितसुजीव ॥ तहांअपरजैअवासतापंडितजनलषिलीव ॥ ४८ ॥
वेदकनिजतिषिभोगिकैधरैजैसेभाव ॥ कैउपशमकैष्यायकीकैमिथ्यातउपाय ॥ ४९ ॥ निश्चैलष्याय
कभावकीमहिमाकहीमहान ॥ जामेइंद्रनरिंदकीपदईतुछसमान ॥ ५० ॥ चौपई ॥ मिथ्यातीहैज्ञानदि
धरैसासादिमिथ्यातामिश्रकोवरै ॥ मिश्रथकीसासादननांहि ॥ सासादनतेमिश्रनपाहि ॥ ५१ ॥ सासादनी
मिथ्यातीहोयरहै ॥ औरगुननिकोंनाहीलहै ॥ याविधिरचनाकछुइककही ॥ गोमटसारमांहिअतिसै
हि ॥ ५२ ॥ इतिभांतिसमपरूपनावर्णनं ॥ १ ॥ अथसंख्यापरूपना ॥ सोरठा ॥ कहिचौदहगुनथान ॥ सतविधा
नपरनकीया ॥ अबसंख्यापरमांन ॥ भाषतगोमटसारसुनि ॥ ५३ ॥ चौपई ॥ सर्वहिजीवरासिकेमाहि ॥ सिद्धरासिप
रमांनघनाहि ॥ सोपरहैसंसारीजांन ॥ ताकोनंतानंतप्रमांन ॥ ५४ ॥ सोरठा ॥ अभविअनंतप्रकेमांन ॥ तातेभ
विकअनंतगुन ॥ जेभविअभविसमांन ॥ अनंतगुनेभविनिकहेते ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ असंख्यातलोकासम
गाय ॥ जिथाजोतिअधिकअधिकाय ॥ तेजभूमिजलपवनप्रकार ॥ वनस्पतीकासुनोविचार ॥ ५६ ॥ अ
संख्यातलोकासमजोय ॥ अप्रतिष्प्रतेकासोय ॥ द्वोपकअसंख्यातीहैगुने ॥ तबेप्रतिष्ठप्रत्येकबने ॥ ५७ ॥
साधारनजियनंतानंत ॥ तीनकालकव्यहनान्अंत ॥ असंख्यातवांभागहिजांन ॥ अपनेंअपनेंबादरमां

न ॥ ५५ ॥ बहुभागनसमसूक्षमजीव ॥ याविधिथावरपांचसदीव ॥ अलापअपर्जेसूक्षममांहि ॥ पर्ज्योपत-
सूक्षमबहुमांहि ॥ ५९ ॥ बादरजीवअपर्जेघनें ॥ पर्ज्यापृथ्वीरेसेवनें ॥ तरसरासिकीसंख्यासुनौ ॥ श्रीजिनभ
षीसादिभनौ ॥ ६० ॥ सोरठा ॥ असंख्यातकाभाग ॥ प्रतरांगुलकोदीजिये ॥ जापरमांनकाभागजगत्प्रतर
कोंकिजिये ॥ ६१ ॥ सोत्रसरासिप्रमांन ॥ तामैभीकिकालेन्या ॥ हीनअधिकपदवांन ॥ असंख्यातश्रेनीसं
मां ॥ ६२ ॥ रजसातप्रदेश ॥ मुक्ताफलकीमालज्यो ॥ गिनियेतिनकोंकुस ॥ तवश्रेनीसंख्यावनै ॥ ६३ ॥ चौ
पई ॥ त्रसरासिकीसंख्यामांही ॥ असंख्यातवांभागविनांही ॥ रहेसेबहुत्यारिकीजै ॥ बेनैबांपंचेंद्रि
कोदीजे ॥ ६४ ॥ वाकीबंटामैकवेबाया ॥ असंख्यातवटतादिवनाया ॥ तामैचादायकगहीजे ॥ [illegible]
त्रंपंद्रीविकोदीजे ॥ ६ बहुभिभागबेंद्रीदीजे ॥ ६५ ॥ शुभाकवांटजोकाय ॥ असंख्यातवटतावेहोय ॥ एकभा
गमांहीगयेलीजे ॥ रहेसबेतइंद्रीकीजे ॥ ६६ ॥ बाध्यावाटायकज्याहि ॥ असंख्यातवटकीइपतादि ॥ जामे
एकपंचेंद्रीतनें ॥ बटचौपंद्रीकेबहुघनें ॥ ६७ ॥ बेंद्रीतेपंचेंद्रीताई ॥ हीनअधिकयोसंख्यागाई ॥ तामैपं
चेंद्रीआधारि ॥ संख्याबरनतहूंगतिच्यारि ॥ ६८ ॥ अथनरकगति ॥ चौपई ॥ द्वितीयवर्गघनअंगुलमूल ॥ ता
पेगुनजेंश्रेनीपूर ॥ ताहिप्रमांननारकीजीव ॥ सातनर्कमेसबसदीव ॥ ६९ ॥ वर्गमलश्रेनीकाल्हेय ॥ सोश्रे
नीकोंभागादेय ॥ वर्गमूलकाअनुक्रमजेह ॥ नर्कनर्कप्रतिपायेतेह ॥ ७० ॥ [illegible]ग्यावाभागदेहूजे ॥ दश्वावाव

यैभागदेतीजै ॥ चोथोवर्गआठवांभाग ॥ छट्ठमवर्गपंचबहुनाग ॥ ७१ ॥ ततियवर्गधनठीपजांन ॥ दूजावर्गसातैवेषांन
दूजतेंसप्तमलेगाहि ॥ नारकीनकीसंख्यागाई ॥ ७२ ॥ सोवासंख्यपटादीहिचढांवै ॥ ताकीरेहैप्रथमभैपावै ॥ वर्गचारके ।
कोटमल ॥ दूजावर्गभ्याथिअनकूल ॥ ७३ ॥ फुनिफुनिवर्गनिकारेजेते ॥ याकैसंख्यावरतीतेते ॥ ताकाभागदीयेजो
रहीं ॥ जाप्रमांनसंख्यासोकहीं ॥ ७४ ॥ जोजनकोडाघनांगुलश्रेनी ॥ इन्हेंआदिभाषीजहांगीनती ॥ तहांतहां
सुभसंगमसुतिवांन ॥ परदूजनकीसंख्याजांनै ॥ ७५ ॥ अथतिर्जचपंचेंद्रीसंख्यातैं ॥ दोहा ॥ जंबलचरथलचार
अकरापंचेंद्रीतिरजंच ॥ असंख्यातश्रेनीसहितजांनंविनपरपंच ॥ ७४ ॥ अथमानुष्यगतिसंख्या ॥ मनुजअ
ढाईदीपमेउतकृष्टेउपजाय ॥ होतअंकउनतीसलोपज्यापतसमदाय ॥ ७५ ॥ चोपई ॥ मिनठअठाईमदीप
प्रमांन ॥ बरनंसंपावरनविधान ॥ कोडाकोडीकोडाकोडि ॥ प्रथमअंकसातकोजोडि ॥ ७६ ॥ सोरठा ॥ लाघ
वानवेआनि ॥ अथानपैसहजारफुनि ॥ यिकसोवासठजांनि ॥ कोडाकोडहै ॥ ७७ ॥ लाघरुकबावनसीस ॥ विया
लीसहजारधरि ॥ यरसातचालीस ॥ कोडाकोडीअंकपे ॥ ७८ ॥ बहुरिलाषसेतीस ॥ उनसटिसहसधरीजि
य ॥ त्रिनसेबावनसीस ॥ संख्याकोडिसुदीजिये ॥ ७९ ॥ तीनिलखउनतालीस ॥ सहसपचासमिलायफु
नि ॥ आनिअसैकतीस ॥ मिनठअठाईदीपमें ॥ ८० ॥ अथअंकरचना ॥ ७९२२८१६२५१४२६४३३७
५९३५४३९५०३३६ ॥ चोपई ॥ जोमांनुषसंख्यापरमांन ॥ नारितीनगुनतामेआंन ॥ एकभागकोमुरयस

मांन ॥ भाषे अढाई दीपप्रमांन ॥ ८१ ॥ अथ देवगतिसंख्या दोहा ॥ गिनिप चासलाष कोडि जुत द्वादश आको आकोडि ॥ येती
पलिके रोंम सम अप्रमत संख्या जोडि ॥ ८२ ॥ चोपई ॥ वर्गतीन्न सें जो उनंतकां ॥ लेपर दे आसंख्य गना ॥ जगत्र अंतर
कोंताकोभाग ॥ सोअंनंत संख्या कीजाग ॥ ८३ ॥ अंगुल दोसेंक्रूप्यन ताका ॥ वर्गप्रदेश आली जियेजाका ॥ जगत्र अं
तर कौंभाग प्रदेहि ॥ ताप्रमांन ज्योतिषि गिनि लेहि ॥ ८४ ॥ वर्गमूल प्रथमघन अंगुर ॥ जगश्रेणी ते गुने जु मुनि
वर ॥ ताप्रमांन संख्या गिनि लेव ॥ भवनवासके येते देव ॥ ८५ ॥ तृतियवर्गघन अंगुल मूल ॥ तातें गुनी जगश्रे
नीतल ॥ ताप्रमांन संख्या गनि लेव ॥ सोधर्म ईसांनी देव ॥ ८६ ॥ सनत्कुमार महेंद्र दोय ॥ दस लेदे हो तरदे
सुर लोय ॥ सुर्गलांतव कापिष्टार ॥ बहुरि शुक्र महाशुक्र बिचार ॥ ८७ ॥ सतार सहस्रार सुजांन ॥ सु
लियन पांचजुगल प्रमांन ॥ येकादश नव साता आंन ॥ पांच च्यारि अनुक्रम तेजांन ॥ ८८ ॥ वर्गमूल श्रेणी पल
प ॥ भाग अनुक्रम से नी होय ॥ अपनां अपना दोय प्रमांन ॥ जिनवर भाषित करि सरधांन ॥ ८९ ॥ आनतप्रान
तकल्पनिवास ॥ आरन अच्युत सुरगकावास ॥ अधोमध्य उपरकी सात ॥ तीन तीन ग्रीवक विस्तार ॥ ९० ॥ न
वानिशोत्तर नांपरकार ॥ सर्वार्थसिद्धि अनुत्तर च्यार ॥ येक येक प्रतियेतीजाग ॥ असंख्यात वां पल्यविभाग ॥
९१ ॥ द्रव्यस्त्रीका जांपरमांन ॥ तातें सात गुनां पहिचांन ॥ इतिय अच्या जिनि गुनां कहे ॥ सर्वार्थसुरपे ते रहे ॥ ९२
सोरठा ॥ यहे समुच्चय जांन ॥ जियप्रमांन जलें नकीया ॥ प्रथक प्रथक गुनवांन ॥ संख्या अब वरनन करे ॥ ९३ ॥ चौ

पहली ॥ गुनमिथ्यातम्भारग्यातिजंतजिनवरभाषेअनंतानंत ॥ दूजातीजाचौथातना ॥ तीनूंगतिमेमांनुषविनांट
४ ॥ असंख्यातवांपल्यविभाग ॥ अववरनौमानुषकीजाग ॥ पंचवनकोडिदुतियगुनधार ॥ मिश्रकोडिये
कसोआर ॥ ८५ ॥ सतसैकोडिअविरतीथांन ॥ तेरैकोडिदेशव्रतमांन ॥ पांचकोडिआनेवलाय ॥ सहस
ठ्यांनवेदोसैभाय ॥ ८६ ॥ फुनिषट्परमतगुनकेधार ॥ मुनिवरमांनुषभवअवतार ॥ अप्रमतेआधेमु
निराय ॥ जोंनिअप्रमत्तसमधाय ॥ ८७ ॥ अष्टमअपूर्वकरनसुजांन ॥ नवमांअनिवृतिकरनप्रमांन ॥ द
शमांहैसूक्ष्मसांपराय ॥ येकादशउपशांतकषाय ॥ ८८ ॥ प्रथमैकप्रथकउपसमगुनदाय ॥ येकचया
टिअत्रिनसैमुनिराय ॥ येकादशविनक्षयोथांन ॥ अष्टमतेहादशलोंजांन ॥ ८९ ॥ क्षायकश्रेनीसहि
तमुभाय ॥ उपशामतेदूनेमुनिराय ॥ उपशमश्रेनीक्षयाकथांन ॥ उपश्रेयेकहीनचेजियजांन ॥ ९० ॥ दो॰
हा ॥ आरतालयअठ्यानवेसहसपांचसदाय ॥ बंदूकेवलसहितजिनसंजोगीगुनजाय ॥ १ ॥ जिनअ
जोगगुनथांनमैकूनसमैद्रुचाठि ॥ सोजगाजालजनायकैकरमुक्तिमठाठ ॥ २ ॥ षष्ठमतेअंदाजलक
तीनघाठिनोकोडिमुनिसंख्याजिनवरकहीमैबंदकरजोडि ॥ ३ ॥ इति गुणस्थानप्ररूपना ॥ ॥ अथ षेत्रपरू
पना ॥ जियषेत्रपरूपनांवरनैआगमदेषि ॥ नांनांजीयअपेषिफुनियेकजीवसापेषि ॥ ४ ॥ पहलेनां॰
नाजीवप्रतिवरनौषेत्रप्ररूपनांवरनैआगमदेषि नांनांजीवअपेषिफुनियेकजीवसापेषि ॥ ४ ॥ निवा

सथावरपांचकायकेसर्वलोकमेंवास ॥५॥ त्रसनालीमेंत्रसजीवचौदीराजूमांन ॥ दीरघराजचौदहैनाड़ीरि
हिजांन ॥६॥ तामाहीविकलत्रयामद्धिलोककेमांहि ॥ दीपअढाईकेविषैभोगभूमिबिनपांहि ॥७॥ अरु
यंभदीपपरसमुद्रस्वयंभूथांन ॥ लवनोदकालोदधिविषैबिकालिंद्रीकीथांन ॥८॥ औरदीपसमुद्रसबैवि
कलिनकेसुरथांम ॥ विकलत्रैकेजनहिपाइयेपंचेन्द्रीविश्राम ॥९॥ पंचेन्द्रीतिरजंचसहितअसंख्यातहैदीप
औरदीपदधिमेंनपाहिमिनुखअरढाइदीय ॥१०॥ अधोऊरधविनमाधिमेंतिरजंचकाविश्रांम ॥ तातैति
रजगलोककासारथीकहैनांम ॥११॥ दीपअढाईकेविषैमांनुषोत्तरकेपार ॥ तामाहीमानुषरहैनांना
हिसंचार ॥१२॥ चौपई ॥ येकभागलौजोजनलाय ॥ मद्धिलोककेनीचैभाय ॥ ऊपरिसातराजूमहीन ॥ य
कवीसजोजनपरवीन ॥१३॥ सर्वेवादककायेतथांन ॥ तामांहीनोप्रसिद्धप्रमांन ॥ ताकावरनतहंविसतार
ग्रंथपुरातनमांहिनिकार ॥१४॥ तेरमेरिकेजोजनलाय ॥ ऊपरिमद्धिलोकसमभाय ॥ भुवनवासमुरवि
तरदेव ॥ दोयजातिकाथेअथेव ॥१५॥ जोजनसतसोनिवेप्रमांन ॥ मद्धिभूमितेऊंचाजांन ॥ ताहपैइकसोदस
जोजन ॥ देवजोतिगीवासप्रयोजन ॥१६॥ मेरिऊपरेराजूसात ॥ यदजोजनइकवीसाविख्यात ॥ ऊपरिऊपरिदे
वविमांन ॥ कल्पवासअहमिंद्रस्थांन ॥१७॥ दोहा ॥ सर्वारथसिद्धऊपरेद्वादसजोजनमांहि ॥ ईषतपभारभूमिहै
इलवसुजोजनजांहि ॥१८॥ तापैवसुजोजनतनीसिलाछत्रआकार ॥ आठिकोससबकालहैनिगोतिताप्पैवहै

उयार ॥ अथअधोलोकक्षेत्र ॥ पंकभागखरभागदलललयजोजनविस्तार ॥ वकुरितीचलाख्यातदलजोजनयाविहजा
र ॥ २० ॥ पनविनराजसातसिद्धतरातरमसान ॥ तिनहमेस्थांतनरककेअनुक्रमतेंविख्यात ॥ २१ ॥ अथयकेकजी
वप्रतिजेताक्षेत्रहकैताकोकथ्यारम ॥ जातेंजेतातनथकीजेताहकेआकास ॥ तेताअकेकजीवप्रतिखेत्रकारत
कास ॥ २२ ॥ चोपई ॥ नवअपर्जेजीवसुजांन ॥ ससंख्यकनिगोदयाआंन ॥ अंसधनोगुलकापदचान ॥ अस
ख्यातवांभागप्रमांन ॥ २३ ॥ कुंडलिया ॥ अंतस्वयंभदीपमेगिरिनागेंद्रसुजांन ॥ ताकेपरलाभागमेंक
र्मभूमिकाथांन ॥ कर्मभूमिकेथांनकमलदेवानिमनमोहे ॥ चोडेजोजनयेकसहसपकदीरघसोहैय
केंद्रीकोगाढाम्हयासमांनिनहिजंत ॥ भाख्याजिनजिनवचनजिनकीनभवअंत ॥ २४ ॥ दोहा ॥ संखस्वयं
भूदधिविषेआंननजोजनच्यार ॥ लंबाजोजनच्यारहेपांचकूसविसतार ॥ २५ ॥ चोपई ॥ चोडाधनुयस
नससाठ ॥ पोनच्यारसोधनुषानेवाढा ॥ कोसतीनलंबाइजांन ॥ अंतदीपवीछूपरमांन ॥ २६ ॥ अं
लिजोजनदीरघपकजांन ॥ कोसतीनऊच्यापरमांन ॥ होयकोससचोडाइजाय ॥ अंतसुयंभयांनकहाय
॥ २७ ॥ लंबाजोजनयेकहजार ॥ सहस्त्रार्धचोडाविस्तार ॥ ठाढूसजोजनपुरकार ॥ अंतसमदमेमत्सा ॥ ७
कार ॥ २८ ॥ अथमानवअरीरक्षेत्र ॥ दोहा ॥ प्रथमकालमेंआदितनतीनकोसलंबाय ॥ दुतियकालमे
कोसदोत्रतियकोसयकगाय ॥ २९ ॥ आदिचतुर्थकालमेधनुषपांचसेपाय ॥ प्रथमपांचमेसातकरल

रैयेककयाय ॥ ३० ॥ अथअल्पअवगाहना ॥ चौ० ॥ येंद्रीअल्पअनधरीजोय ॥ जंतकुंथवातेंद्रीहोय ॥ कांनमाछि
चौपंद्रीजांन ॥ तंदुलमत्सपचेंद्रीआंन ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ व्यारिवारसंख्याततेंदोयघनांगुलभाग ॥ तासमांनधक
अनुधरीअल्पवेंद्रीजाग ॥ ३२ ॥ घनअंगुलकोतीनवरदेसंख्यातकाभाग ॥ सोपमांनचनकुंथजाभाख्या
मुनिवराग ॥ ३३ ॥ सोरठा ॥ संख्यातहैवार ॥ घनअंगुरकोभागदे ॥ ताप्रमांनधनुधार ॥ तंदुलमत्सरूमाछिक
३४ ॥ अथनारकीनिकीकाय ॥ दोहा ॥ सातधनुषअरतीनकरअंगुरछोटकेंउपेंबा ॥ प्रथमनरकमेंनारकी
याबेयेतीकाय ॥ ३५ ॥ आदिनकेंतेंकायकीदुगनदुगनलंबाय ॥ येहीअनुक्रमसातमेंधनुषपांचसेंय
५ ॥ ३६ ॥ अथदेवनाकाअवगाहना ॥ विंताअसुरनेभवनसुरहोतधनुषदसकाय ॥ जांनुंअसुरकुमारत
नधनुषपचीसलंबाय ॥ ३७ ॥ ऊंचीव्यंतरसबनिकीकायधनुषदसहोय ॥ सातधनुषलंबायतनदेव
जोतषीजोय ॥ ३८ ॥ सर्कधर्मदुंयांनमेंसातहाथकीकाय ॥ सनत्कुमारमहेंद्रसुरखटकरतनलंबाय ॥ ३९
३९ ॥ ब्रह्मब्रह्मोत्तरसुरगपुनिलांतवकापिष्ठकार ॥ जुगलदोयकादेवतनपंचहाथविस्तार ॥ ४० ॥ देवशु
क्रमहाशुक्रकातनऊंचारकारच्यार ॥ सुरसतारसहश्रारवपुसाढातीनविचार ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ आंनततय
कीअच्युतलोजांन ॥ हाथतीनऊंचाईतनमांन ॥ आदिग्रीवकनहाथअढाय ॥ अंतग्रीवकरछोटउचाय
४२ ॥ नौअनुदिसअनुत्तरपंचास ॥ येकहाथतनऊंचप्रकास ॥ सहजेंओसतायेगाधेरे ॥ हीनआधिककार

नेतकेरे ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ प्रथमच्यारिगतिजीवकाकथ्योसेत्रसमांन ॥ बहुरिकहुं गुनथांनप्रतिसोभविसुनोसयांन
४४ ॥ क्षेत्रमिथ्यातीवकासर्वलोकपहचांन ॥ अविरतसासादननामिश्रत्रसनालीमेथांन ॥ ४५ ॥ चंवमथ
कीअजोगलोंसुनियेअआधार ॥ असंख्यातदधिद्वीपमेंअढाईदीपमझार ॥ ४६ ॥ ताहुमेविनभोगभूमें
कर्मभूमिहीजांनतामेंषंडमलेछकुंविनआरिजखंडसुथांन ॥ ४७ ॥ बहुरिहोयप्रविसुनुलमेंफुनिभेटेगु
रपाय ॥ येतेथानिककहनतजबजिनमतउपजाय ॥ ४८ ॥ पूरवपश्चिममेरकेथोडसथोडसदेस ॥ रहेंका
लचोथासदाजहातहमुनिउपदेस ॥ ४९ ॥ दक्षिणउत्तरमेरकेभरतऐरावतदोय ॥ अवसर्पनिउतसर्पनी
कालफिरनिजिहजोय ॥ ५० ॥ सोरठा ॥ येकभरथप्रतिजांन ॥ च्यारितीस्थयकहेकरी ॥ पककोसतरिथ्या
नदीपअढाईकर्मभू ॥ ५१ ॥ जांनिकर्मभूपंक ॥ होतषंडषटमांहि ॥ तिनमेंपंचआरिजयक ॥ आरजमलेछीधर्म
विन ॥ ५२ ॥ चोपही ॥ अहुस्वयंभूवाहरिदान ॥ गिरिनागेंद्रपरेहथांन ॥ च्यारिकुखंकोनेंच्यारि ॥ बहुरिस्व
यंभूसमद्रमझार ॥ ५३ ॥ पनहुविषैकर्मभूजोय ॥ त्रसथावरत्रिजगाहीदोय ॥ वाकीरहेदीपसवमांहि ॥ जि
नभोगभूरचनायांहि ॥ ५४ ॥ इतिक्षेत्रपरुपना ॥ ३ ॥ अथसपरसपरूपना ॥ सोरठा ॥ सपरसच्यारप्रकारभा ॥ ७
नतउत्पादआर ॥ क्षेत्रसुपरविविहार ॥ ताकुंभवबरननसुनो ॥ ५५ ॥ लछिन ॥ दोहा ॥ स्वथिदारसपरसातिं
सुतहांअटकपरनांहि ॥ जोयेत्रभेउपाजिवाताकीसीमामांहि ॥ ५६ ॥ पराविहरपरभातिहासुरविआपन

जांहि॥ केविद्याधरकेअमरमित्रसनुसनेजांहि॥ ५७ ॥ मलदेहत्यागोविनांनिजपरदेश्रावलाय॥ मारनांतसप
रसकेरेजाथलबांधीआय॥ ५८ ॥ पूर्वजनकंत्यागिकिनतनगहेसशरीर॥ सोसपरसउत्पादकाभाषेपांडिधी
धीर॥ ५९ ॥ अथनरकेगतिसपरस॥ सपरससुपरविहारकानरकीनकेजांनि॥ अपनेअपनेविलनितेनाबा
हिरपहचांनि॥ ६० ॥ मारनांतउत्पादकरिसबनरककेजीव॥ मद्धिलोककीकर्मभसपरसकेरेसदीव॥ ६१ ॥ अ
थतिरजगगतिजीवकासपर्स॥ चौपई॥ सर्वभोगभूतिरजगजांन॥ सुपरविहारआपनेथान॥ मारनांतउत्पा
दबताय॥ अंतिमदेवलगतिसबरहानिथाय॥ ६२ ॥ थावरतरसकर्मभजीव॥ मारनंतउत्पादसदीव॥ तीनलोकस
पर्शविख्यतार॥ सुपरआपनेजोगविहार॥ ६३ ॥ अथमानुषकासपरस॥ दोहा॥ जांनअढाईदीपमेमानुषसुपर
विहार॥ मारनांतउत्पादसेसबहीलोकमझार॥ ६४ ॥ अथदेवसपरस॥ सुरगसबकेअरुभवनत्रिकस्वाविहारउप
जांन॥ उपरिअपुनेंकअलोततेरनरकतयथांन॥ ६५ ॥ कल्पपवासभवनत्रियापरविहारतेंजाय॥ उपरिसोरेसुर्ग
लोकतेनवकेलपछाय॥ ६६ ॥ अनुदिसिवकृतिपिनोत्तरनिनवग्रीवालोजांन॥ परविहारसपरसेनहीस्वविहारनिजथां
नि॥ ६७ ॥ ज्योतिषव्यंतरभवनसुरसऊर्धभर्टसान॥ मारनांतउत्पादतेंसर्वलोकपहचांन॥ ६८ ॥ सेसकल्पअहि
मिंदरअपारनांतउत्पाद॥ मद्धिलोककेथांनतेंअधोईहनहिनाद॥ ६९ ॥ अथमध्यलोककेभीविमिकोअक्रु
त्रिमजिनभवनस॥ कृष्णपम्भरदासजिका॥ परमसारसेच्यापजीमचोसदिसेना।स॥ द्गतोजनअतीय

सतकचौकनऋमभासा ॥ दुगनिश्रसैनीलौश्रावनवसुसहसधनुषगानि ॥ सोनीसुपरसबिषैकैपौनौजोजनश्री
मुनि ॥ नौरसनाकोघ्रानद्वासैतालीसहस्रनारफुनिदोसैत्रेसठिबारहश्रावनविषैक्षेत्रपरमांनभनि ॥ ६९ ॥ श्रब
गुनस्थानप्रकार ॥ सुपरसकैस्वामीनियनवरनपांगतअनुसार ॥ सोहीफुनिइरसनकहैगुनस्थानपर
कार ॥ ६९ ॥ सपरससबैप्रकारकामिथ्यातीगुनथांन ॥ श्राश्वासगरलोकमैजिघ्राजोगपरमांन ॥ ७० ॥ चौप
ई ॥ मधिलोकतेऊपरिजायसातलश्रमभृताय ॥ अधोभागहूराजूसात ॥ मारनांतउत्पादविख्यात ॥ ७१ ॥ ना
उपजेसासादनजाय ॥ सूक्ष्मवादरबहुनीहाय ॥ बनसपतीप्रथ्वीश्रपमांहि ॥ ह्वैवादरसस्मैनांहि ॥ ७२ ॥
त्रतियनकैलोकनिकैजांन ॥ ऊपरिश्रच्युतसुरगपहचांन ॥ परविहारसासादनयतो ॥ स्वविहारनिजक्षेत्रनि
मितो ॥ ७३ ॥ जांनिमिश्रश्रविरतगुनथांन ॥ स्वविहारस्पर्शनिजठांन ॥ परविहारश्रच्युतलौंहाय ॥ नी
चानकैतीसरजाय ॥ ७४ ॥ त्रिग्यांप्रथ्वीचौथैजांन ॥ मारनांतउत्पादविधांन ॥ ऊपरश्रच्युतसुरगलौंजांनु
नरलोकनकेपूरलौठांन ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ पंचमतैढाईद्वीपलौमाश्वासुपरविहार ॥ अपुनेठाईदीपतैवाहरि
नांहिनिकार ॥ ७६ ॥ श्रणुव्रतसोरैसुरगलौंमारनांतउतपाद ॥ मुनिउपारगुनथांनलौंसबैपरनाउत्पाद ॥ ७७ ॥
कृदसंखणिकखायकश्रहसंजोगगुणथांन ॥ मारनांतउत्पादनाहिस्वविहारहीजांन ॥ ७८ ॥ समुद्घातबीते
रहैपरसैलोकाकास ॥ गहिश्रजोगविहारतजिकैरासिवालैबास ॥ ७९ ॥ इतिसपरसकथनकालरूपन ॥

कालकथनहैसोयविधिसोसामांनिविसेष ॥ प्रथमकथनसामांनकालसेनोआगमदेषि ॥ ८० ॥ चोपई ॥ येकेंद्रिआदि
पचेंद्रीतांई ॥ नानाजीवचतुरगतिमांई ॥ सदानिरंतरकालपिछांनि ॥ जिनभाषामिथ्यातीथांन ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ स
थावरविकालिंद्रियायेकजीवप्रतिकाल ॥ जिघनसुद्रभवग्रहनंहैउतकष्टविसाल ॥ ८२ ॥ लोकआसंख्या
ताननंभत्रापकहनीवाय ॥ कालवनसपतजीवकाअनंतानंतकन्याय ॥ ८३ ॥ पूरवकिनेकेकोडिजुतसागरदे
यहजार ॥ जोउत्कृष्टत्रसबंनेतोयेतानिरधार ॥ ८४ ॥ जोत्पाँणेत्रसथावरकोफसेनिगोदकुआल ॥ आसंख्या
तपुद्गलतनेंपरावृतलोकाल ॥ ८५ ॥ सत्रहसंकीवचनिकाकनककीतिकीमांनि ॥ तिथिमेमोहलीतिरस
कीलिपीतद्दांतेजांनि ॥ ८६ ॥ फुनिफुनिजीविकालिंद्रियाउपजेग्रहवार ॥ तोसागरहुकसहससहोवकुरी
तेंभसंसार ॥ ८७ ॥ चोपई ॥ येककोटिपरवधारिआय ॥ येकजनमपंचेंद्रीथाय ॥ पुरषनिपुंसकनारीवेद ॥ व
सुधसुगहेत्रसेनीभेद ॥ ८७ ॥ यहीआलकमतीनंवेद ॥ सेनीजनमधरेविनषेद ॥ मनजुतमनविनकाकर
जोर ॥ परवअठतालीसाकोर ॥ ८८ ॥ अंतरमहूर्तमध्यकेमांहि ॥ आठजनमभवछुद्रलहांहि ॥ कहरिवहीभ
वंवदनमांह्हि ॥ वेदेआलुकमजनमलहांहि ॥ ८९ ॥ दूजीबारहकायहजोर ॥ पूरवअडतालीसहीकोर ॥ पु
निफुनिजनमपंचेंद्रीयांन ॥ तोयाविधियेतापरमांन ॥ ९० ॥ सोरठा ॥ पूरवकिनेंवेकोर ॥ सागरयेकहजार
सो ॥ देवनरकगतिहोय ॥ फुनिथावरविकालिंद्रिया ॥ ९१ ॥ रलगेहैसिवहोय ॥ अंतमांहिजिनवरचानं ॥ नेथा

वरचिरहोय ॥ जेअरगपांनविषयाग्रमन ॥ ९२ ॥ चोपही ॥ येकवेदहीधारेकोय ॥ कितेकाललौपाचे सोय ॥ ताकी
मर्ज्यादासुनिमित ॥ वेदनपुंसकअनंतानंत ॥ ९३ ॥ सोरठा ॥ तीनिपैतालीसैंहाथे ॥ सादिसहससंख्यातरुअपठै
यतीपलतियभाष ॥ पेतहीसागारपुरष ॥ ९४ ॥ येकजीवप्रतिभीत ॥ त्रिधनकालगतिच्यारिमे ॥ अंतरम
हूरतअंत ॥ कहूंमिथ्यातकहूंतनतजे ॥ ९५ ॥ चोपई ॥ मांनुषगातिमैवारहत्यार ॥ गहैजन्मताकीसुनिवार
पुरषसैतालीसजुकोर ॥ अधिकतीनपाल्यैतांऊजोर ॥ ९६ ॥ पुरषनपुंसकनारीतनें ॥ सोऊपंद्रेसौ
भनें ॥ कोडिपूरवसैतालीसजात ॥ येतेजन्मचालीसरुसात ॥ ९७ ॥ उत्तमअठआठभवपाय ॥ मद्धिमछुद्र
भवबहुसुषसुलपाये ॥ फुनिवैहीउत्तमभवधरे ॥ पुरषनपुंसकनारीधरै ॥ ९८ ॥ पल्यपतीनउत्तमभमाय अं
तिहिअतिकुपजेजाय ॥ तनपावैदवपलैवास ॥ अतिक्रांतिकमकातवैविनास ॥ ९९ ॥ दोऊगातिमैविसरामं
नि ॥ मांनुषलोनिज्यागतिजांनि ॥ सुषभावकगतिउतमपाय ॥ तीर्थनाथपदपावसकीआय ॥ १७०० ॥
अथकषायकाउत्कृष्टकाल ॥ असंख्यातसंख्यातअनंत ॥ अनंतानबंधीविनसंत ॥ समकितकीअव
रोकनथांनि ॥ जननीभवकोनिगाहचुथांनि ॥ १ ॥ दोयहूमांसअप्रत्याख्यान ॥ देशविरतिकुंहांनिमहं
नं ॥ प्रत्याख्यानदिनपदहैजाय ॥ याकोमिटतमहाव्रतहोय ॥ २ ॥ महूरतलौसंज्वलनकषाय ॥ जियथाख्या
तचारितदुषदाय ॥ जबलौंवेदउपशमनकषाय ॥ नवलौंभ्रमभवभवमठकाय ॥ ३ ॥ अथगुणस्थांनप

तिकाल ॥ दोहा ॥ वरनौं अंतर विसेस विधि जो गुनथांनन सीव ॥ मिथ्या द्रष्टी च्यारि गति नाना जीव सदीव ॥ ४
काल जिघनि मिथ्यात का अंतमुहूरत मांन ॥ बहुरि त्यागि समकित गहैं च्यारौं गति जियज्ञांन ॥ ५ ॥ अ
थ येक जीव प्रति जिघन्य काल ॥ चौपई ॥ नंतानंत अभवि का काल ॥ आदि अंत तें रहित विसाल ॥ अं
त सहित बिन आदि प्रमांन ॥ अनंत सांत भवि पछ्याजांन ॥ ६ ॥ उपसम समकित गहै मिथ्याता का उत्तम का
ल विख्यात ॥ पुद्गल अर्द्ध परावृत जांन ॥ अंतरमहूरत जिघन्य प्रमांन ॥ ७ ॥ सोरठा ॥ दीसाहि कोडाकोडि सा
गर कल्प प्रमांन कौं ॥ समया अनंतगुना रि पुद्गला द्धू परवर्तसो ॥ ८ ॥ चौपई ॥ भनि हैं जतीं जे गुनथान ॥ नां
नां जियप्रति उत्तम ज्ञांन ॥ पल्य का असंख्यातवां भाग ॥ जिघन समै सासादन जाग ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सासादन यक
जीव प्रति जिघा नियम लो काल ॥ उत्तम तिथि षट आवली यरन्पा बुद्धि विसाल ॥ १० ॥ समया लो गुनथांन
का कहें वरन्पां कहि सोय ॥ अंत समय के समैम धारि मै रन्पा होय ॥ ११ ॥ मिश्र रहित है जीव के उपसम महूरत
यक ॥ जिघन महूरत जिघन लो वरन्पां जिनै विवेक ॥ १२ ॥ अविरत अनुव्रत म्हाव्रतीनां नां जियप्रति ज्ञांनि
जिघनात म विधि लायते सब काल पहचांन ॥ १३ ॥ चौपई ॥ देष्य कोडि पूरब कछु हीन ॥ तीन तीस सागर सुर
लीन ॥ यता ख्याय कचा या थान ॥ अंतरमहूरत जिघन प्रमांन ॥ अंतरमहूरत अविरत थांन ॥ १४ ॥ पूरब को
डि येक कछु हीन ॥ देसव्रती उत्तम तिथि लीन ॥ जिघन काल जो धारै कोय ॥ अंतरमहूरत पावै सोय ॥ १५ ॥ प्रम

अप्रमत्तदोऊजांन॥ अरउपशामस्यास्योंगुनथांन॥ अंतरमहूरतउत्तमकाल॥ जघनिसमैलौंअंतरकाल॥१७
यकजीवफुनिनानाजांन॥ जघनोत्तमदोऊविधिआंनि॥ खायकश्रेनीचारयोथांन॥ अंतरमहूरतकालप्रमां
न॥१७॥ नानाजीवसंजोगीथांन सवेकालवंद्धधरिध्यांन॥ अंतरमहूरतमेंभीकोय॥ त्यागसंजोगअजो
गीहोय॥२५॥ पंचमुष्टिरयिरलोचेकेस॥ तत्थिनउपज्योकेवलवेस॥ भरथभयेसवकेपरधांन॥ असेभो
यमहांपुरांन॥२६॥ सोरठा॥ कोडिपूरवगरहिजाय॥ आठवरषकोतपगहे॥ तवहीकेवलपाय॥ यताका
लवरत्तेरमें॥२०॥ दोहा॥ नानाजियअरयेककाजिघनोत्तमपरकार॥ कालअजोगीथांनकापंचवरनउचा
र॥२१॥ इतिकालप्ररूपणा॥५॥ अथअंतरकथन॥ जोयकथांनकत्यागकेफिरआवैवाथांन॥ वीतैवरिया
यपुद्गलसोअंतरपहचांन॥२२॥ नाहीकाखेनकहेंगातिगुनथांनप्रकार॥ प्रथमग्राहिवरनोंगानविशेसलास
आंनप्रकार॥२३॥ चौपई॥ नर्कमाहिकोनारकमरे॥ व्याच्यथांन[illegible]कलंमरे॥ ताकावरननरू
विचार॥ नानाजीवनिकेअनुसार॥२४॥ प्रथमनर्कमहूरतचौवीस॥ सातदोसहूजेमेंदीस॥ तीजेमाहीपखप
रमांन॥ अतिदुगनदुगनपहचांन॥२५॥ हातियोसमाधरमीयांन॥ तीजेंबेथायेपाथिपरमांन॥ अष्ठमलौं
अंतरयकमास॥ द्वादशतवंद्धमासरहिजास॥२६॥ जानअनुतलोंमहनांथ्यार॥ कल्पातीतायकमासवि
चार॥ कहुयकमहूरतकापरमांन॥ भवनत्रिकमेंअंतरजांन॥२७॥ देवचवेतवब्याकेथांन॥ अंतरयेता

होतसुजांन ॥ तापीछै निजपुंन्यप्रमांन ॥ औरजीवउपजतहै आंन ॥ २८ ॥ नांनाजीवचतुरगतिथांन ॥ अंतररहितमिथ्या
तीजांन ॥ एकजीवप्रतिअंतरमांनत ॥ कालअभेकरूंवयांन ॥ २९ ॥ एकेंद्रीवेयंद्रीथांन ॥ तिर्यग्निक्षुद्रभवअंतरजांन ॥ उ
तमअंतरबहूपरमांन ॥ वरनोताकाऔवेनिदांन ॥ ३० ॥ भअपतजवपपरमफार ॥ अंतरअनंतानंतविचार ॥ लोकअसं
ख्यातासामांन ॥ वनसपतीकाअंतरजांन ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ पुरवकोडिनबेकोडि गुतसागरदोयहजार ॥ उतमथावरके
यमेअंतरआताविचार ॥ ३२ ॥ चौपई ॥ नंतानंतवनस्पतिकाल ॥ असमेअंतरजांनविसाल ॥ अंतरसैतेतरसजर
रहितभया ॥ अंतरमहूरतअंतरगया ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ च्यारूंजियगतिपायकेहहलेअनंतसंसार ॥ योअंतरगति
च्यारिमेंअंतरकालप्रकार ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ अववरनोगुनथांनविचार ॥ अंतरकालविसेषप्रकार ॥ च्यारोंगो
गतिप्रथमगुनथांन ॥ अंतरमहूरतअंतरमांन ॥ ३५ ॥ उत्तमजोमिथ्यातीथांन ॥ अंतरमहूरतअंतरमांन ॥ ३५ ॥ उत
मजोमिथ्यातीथांन ॥ हैअंतरसोसुनोवयांन ॥ वेदककाकुटिसागरभोगि ॥ फेरमिश्रमेंभावजोगि ॥ ३६ ॥ फु
निउपशममेंरहैसभागि ॥ असंख्यातवांपालीविभाग ॥ बहुरिभागवेदककेगहै ॥ कालकुटिसागरद्वैजेरहै
३७ ॥ वेदकसताउत्तमरहै ॥ फुनिमिथ्यातकेथ्यायका ॥ स्थियोसागरयकसोवत्तीस ॥ मिथ्यागुनमेंअंतरदी
स ॥ ३८ ॥ अथनर्कगति ॥ एकतीनसातदससतरा ॥ दोयवीसतेतीसयोंअवरा ॥ सागरअंतरवरमिथ्यात ॥ सातुनर्के
मेअंतरपात ॥ ३९ ॥ उपजेअंतरमहूरतहोय ॥ नवचतुर्थगुनधारेकोय ॥ अंतसमेफुनिगहैमिथ्यात ॥ नर्केसुगेया

अंतरजात ॥४०॥ अथमानुष्यगतितिरजंचगतिदोहा ॥ द्वादिनऊनत्रयसकाभोगभूमिवरथांन ॥ अशुभमिथ्यात्त
निवारितवरसेचतुर्थथांन ॥४१॥ कुमरिअशुभमयायकेअंतधरेमिथ्यात ॥ नरतिरजगगतिदोविषैपैतासअंतरपा
त ॥४२॥ अथदेवगतिविषैअंतरक ॥ दोहा ॥ देवनवमग्रीवकलोभविमिथ्यातमिहाय ॥ तहसागरइकतीसति
थितितोअंतरजाय ॥४३॥ अथदूजेगुनथानअंतर ॥ चोपही ॥ नानाजियसासादनथांन ॥ अंतरसमयाजि
घनप्रमांन ॥ पल्यकेअसंख्यातवांभाग ॥ उत्कृष्टअंतरकीजाग ॥४४॥ एकजीवसासादनेजाग ॥ पल्यैं
केअसंख्यातवभाग ॥ जांनिजिघनिअवरकहूविसाल ॥ पुद्गलअर्द्धपरावृतकाल ॥४४॥ दोहा ॥ मिश्रयं
नतीजाविषैनानाजीसापेषि ॥ जिघनोतमअंतरदुहूसासादनवतदेषि ॥४५॥ नानाजियउपसमवि
नाजोकदाविरहजायतोकोविधिकभाषियएकतकाललोंताय ॥४६॥ चोपही ॥ सात्तवातिदिनअवि
रतथांन ॥ चोदेअहिनिसिअरासुप्रमांन ॥ प्रमत्तअप्रमतपषिलोंनाहि ॥ वरअंतरउपशमकेमांहि ॥४७
उपशमकेसवहीगुनथांनी ॥ नांनाजीवअपेक्षालानी ॥ वरनजिघनतेनांपरमांन ॥ एकसमैकाअंतर
जांन ॥४८॥ दोहा ॥ उपशमेमेकतेमाजिघनयेकजीवसापेषि ॥ अंतरसवगुनथानकाअंतसमहूरतदेषि ॥४
९॥ तीनऊपरलवतेरेषयप्रथतविधांन ॥ अंतरउपशमश्रेनिकानानाजियमेंआंन ॥५०॥ मिश्ररुअवि
रतदेसव्रतप्रमतअप्रमत्तथानअरउपशमश्रेनीविषैएकजीयप्रतिजांन ॥५१॥ परावृतपुद्गलअरधअ

रकालविसाल ॥ वरतेंअंतरजिघनतेंअंतरमहूरतकाल ॥५२॥ चौपई ॥ छ्यायकवेदकसमकितमांहि ॥ नानाजीवप्र
तिअंतरनांहि ॥ एकजीवप्रतिअंतरहोय ॥ गुनथांनांप्रावरतनैजोय ॥५३॥ दोकुसमकितभेंगुनथांन ॥ अंतरमहूरत
अंतरजांन ॥ उत्तमअंतरदोउमांहि ॥ अवभाषतहूंजाविधिपांहि ॥५४॥ अविरतसुरवयअनुव्रतहीन ॥ अंतर
कोडिपरबककहीन ॥ वेदकधारककहैपतो ॥ अबमुनिवेदकछ्यायकजितो ॥५५॥ देवूअवतीसागरवाईस ॥ सुर
हूजायसारवेसरीस ॥ म्हाव्रतप्रमतअप्रमतभिंतर ॥ तीनतीससागरकाअंतर ॥५६॥ देवअव्रतीएतारहे ॥ चेमा
नुषहूतवव्रतगहे ॥ अबछ्यायकश्रेनीकीवात ॥ भाषतहूंआनरअवदात ॥५७॥ दोहा ॥ छ्यायकश्रेनीआ
रगुनअरअजोगगुनजास ॥ अंतरनानाजीवप्रतिउत्कृष्टछमास ॥५८॥ अथमोक्षहोवाभेअंतर ॥ जाय
हीनहूंऊंठेसेचौबीसीकाकाल ॥ ताकोंअप्रमभैंकथ्यादुंदकनामाकाल ॥५९॥ तेताहीकुंडकगयेजचवठम
हूंनेंमांहि ॥ अनीक्षियकअजोगजेनपावेकोईनांहि ॥६०॥ ताहीनिकटवसुसमयमेंजीवाघटसेआठ ॥ मो
क्षमांहिपहूचेसहीयोअगममेंपाठ ॥६१॥ चौपई ॥ निकसेनित्यनिगोदमझार ॥ आठसमेंषटमासलगार ॥ छै
हसेआठजीवपरमांन ॥ तेताहीपावेनिरवांन ॥६२॥ अथप्रश्न ॥ सोरठा ॥ कोंमंदहीजिहजोगकसाय ॥ बहुतकाल
लोंसहजसुभाय ॥ सोउपजेभ्यासरीरास ॥ नितिनिगोदतेथिकरेविलास ॥६३॥ सोरठा ॥ ज्योंसरितामांधिढो
ल ॥ सुनेगासेआकृतधरे ॥ कवहूजलकोजोर ॥ उछालिआयतीरायेर ॥६४॥ चनेमंदनेंभार ॥ विनाजतनउछल

पैरे ॥ त्यों निगोद मझार ॥ निकस आतमो हारसें ॥ ६५ ॥ अथ आठ समै में कोन विधि निसरे ॥ सोरठा ॥ प्रथम समै
वतीस ॥ अठचालीस दूजे समै ॥ साठि तीसरे लीस ॥ बहुतर चौथे समय में ॥ ६६ ॥ पंचम चतुरासीत ॥ छठे समै छि
नवे गये ॥ सप्तम अरु परीत ॥ अष्ठोतर अष्टोत्तरा ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ चिरकाल षट मास लौं ॥ मोषि न जावे काय
तेहि अरसे जात है आठ समै सिव लोय ॥ ६८ ॥ चौपई ॥ ष्यायक श्रेनी आरोहो थांन ॥ सुनि संजोग अजोग विधा
न ॥ तद्भव गांमी धारे सोय ॥ ताके अंतर के सहाय ॥ ६७ ॥ इति अंतर परूपना ॥ ६ ॥ अथ भाव परूपना ॥ उपशा
म षें उपशम क्षयदाय ॥ परिनांम अरु उदयक सुभाय ॥ दर्शन मोह कर्म सापेषि ॥ वरनन आदि गुन अप्रति दे
षि ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ पराकृत मिथ्यात जुत कर्म उदै अनुसार ॥ निज श्रुभाव भल्यो फिरे भाव उदयक धार ॥ ६९ ॥ नां
हि विवध्या ति भाग विगति सासादन के मांहि ॥ पारिनांम हि जांनि जिहि और भाव कों नांहि ॥ ७० ॥ कछु वेद
क कछु उपशम मिश्र षयोपसम भाव ॥ तीन जात के भाव कां विरत मैं दरसाव ॥ ७१ ॥ चौपई ॥ दरसन मोह
उदै समुदाय ॥ जिह उपसम तस उपशम गाय ॥ वेदक षें उपसम विधि जोय ॥ ज्ञात्वा नां षयोपसम कहाय ॥ ७२ ॥ च्या
रित मोह अपेष्या ज्ञांन भाव कथन आगले गुनथांन पंचम षष्ठम सप्तम ताय ॥ येक षयोपसम भाव बताय ॥ ७३ ॥
उपशम श्रेनी आरोहो थांन ॥ उपशम भाव अरु तरगुनवांन ॥ ष्यायक श्रेनी जोग अजोग ॥ ष्यायक भाव शुद्ध उप
योग ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ उपशम षें उपशम षायक और उदयक परिनांम ॥ संसारि जीवांन के पंच भाव शुद्ध उपयोग

निजधांमधांम ॥ ७५ ॥ उपशमतैंउपशमवंनेख्यायतेख्यायकहोय ॥ क्षैपोपशमतैंवेदकीकहैंओदायिकजोय ॥ ७६ ॥ पारिना
मसुभावहैरहितकर्मसोंपोषि ॥ भावंदसकेभेदकुंग्रंथसनातनदेषि ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ दोनोंअष्टादशइकवीस ॥ ती
नइक्यासिअरुत्रपनदीस ॥ समकितचारितउपशमहोय ॥ ख्यायककेनवभावहोय ॥ ७८ ॥ केवलदरसनकेवलग्यांन
दांनलाभवलभोगवषांनि ॥ उपभोगख्यायकसंपन्न ॥ चारितख्यायकनोविधिजन्न ॥ ७९ ॥ अथक्षयोपशम
भेदअठारा ॥ बिनकेवलच्यारुकुग्यांन ॥ मतिश्रुतअवधितीनकुग्यांन ॥ दरसनतीनभेदपहचांन ॥ चषिअच
ख्यिअरुअवधिविधांन ॥ ८० ॥ दांनलाभभोगउपभोग ॥ वीरजलब्धिजुपंचमनोग ॥ अणुव्रतमहाव्रतचारितहोय
फुनिसंयमासंयमसमकितजोय ॥ ८१ ॥ ओदयककेभेदइकईस ॥ च्यारगतिअरच्यारकषाय ॥ वेदतीनमिथ्यातगि
नाय ॥ असिधअसंयमअग्यांनभावषटलेश्याओदयककहाय ॥ ८२ ॥ पारिणामकेतीनहिनांम ॥ भविअभव्यजी
वपरिनांम ॥ तीनोंतोसंसारीमांपविअभविसिधनिमैंनांहि ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ उपशमख्यायकभावदोसम्यकदि
वानहोय ॥ पारिनांमजियजातिकेख्यायकासिवलोजाय ॥ ८४ ॥ क्षयोपसमीपुनिउदयकोपारिनामजुततीन
समकितअरमिथ्यातमेंजियपाजोगिहकलीन ॥ ८५ ॥ संसारीसमकितसहितपांचभावगहिलीन ॥ पारनामअ
रख्यायकीसिद्धहैंदोयसमेत ॥ ८६ ॥ मिथ्यातेसप्तमतलककविधपर्वकेदरसाव ॥ अनुधपर्वअगिअरलपनांति
ओदयकभाव ॥ ८७ ॥ मोहकर्मकेउपशमयाथिरआतमउपयोग ॥ कर्मउदैसबविनसैयेउरेअलाधजोग ॥ ८८ ॥ ख

नांपांचूभावकीलिखीअलपसिदिखि॥ आगेबरननकरतहूंथोराबहुरिविसेख॥ ८८॥ अथभावप्ररूपना॥ १॥ अथअ
लपबहुत्वप्ररूपन॥ अधिकअधिकअनुक्रमलयेअसंख्यातगुनमांन॥ मानुष्यतेंसबन्यारकीनारकतेंसुर
थांन॥ ६०॥ सुरतेंपशुपचेंद्रियातातेंचेंद्रीहोयच्यंद्रीतेंतेंद्रीअधिकत्योंचोयंद्रीजीय॥ ६१॥ बेइंद्रीतेंतेजके
तजपकीभूकाय॥ भूतेंअधिकेजीवअपअपतेंअधिकेवाय॥ ६२॥ अनंतगुनहेसबनितेसिवंभोसिद्धसद
व॥ सिद्धरासितेंअनंतगुनवनसपतीमेजीव॥ ६३॥ अलपबहुतक्रमवरनियगजियकेतेंहथांय॥ अवधिदुबि
विधिजांनियावरनंतहगुनथांय॥ ६४॥ अलपसबनितेंकोनहेलउपशमश्रेनीमांहि॥ जियदसासोनिन्यानवेंच्या
रिगुननिप्रतिपांहि॥ ६५॥ जीवपांचसोउठानवेंख्यायकश्रेनीथांन॥ पेतेहीकेवलसहितजोगरहितभावून
६६॥ जांनोअधिकअजोगतेंजोगसहितजिनहोय॥ बसुलखसहसअठांनबेबहुरिपाचसेदोय
६७॥ वोपटू॥ दोयकोगिकिनेवलखिलीनि॥ सहसाभिरपारावेयुकसोतीन॥ अतेंअपरमतगुनकेधार
यातेंदुगनेंप्रमतंमकार॥ ७०॥ अधिकप्रमत्तसेंदेचमथान॥ तेरकोटिमनुजमेंगमां॥ च्यारिगुनेंपंचमगु
नथांन॥ बांमनकोटिहुतियगुनथांन॥ ७१॥ सासादनतेंदुगनप्रमांन॥ कोटिएकसोच्यारिगुजांन॥ ये
ततीत्रिथांनकजोडि॥ अवरतमांहिसतसेकोडि॥ १००॥ अनंतगुनअविरततेंजीव॥ गुनमिथ्यातमेरहत
सदीव॥ ग्रंथविरातमकेअनुसार॥ बरनयसुअनुरोगजोगविचार॥ १॥ इतिवसुअनुजोग॥ ८॥ दोहा॥ अर

ववरन्पाकथनजोपादिकरनकाकाज॥सबनिकायकोंनिषेधकहूंभविजननोधरहेलाज॥३॥चौपई॥जोनतत्वारथ
कासरधांन॥सोसमकितकालक्षनजांन॥वहुरिनिसरगजअधिगमदोय॥येउपजावनकारनजोय॥४॥केहून
त्वजीवादिकसात॥च्यारिनयपेलययविख्यात॥नेप्रमांनतेनिश्चैहोय॥निर्देसादिकविधिअवलोय॥५॥पुनि
निविशेषजाननेकाज॥सतसंख्यादिकआठसमाज॥समकितरतनधारिजेया॥याहिनपाविधिवरनेनकीया
६॥इतिसम्यग्दर्सनस्वरूपकथन॥अथसम्यग्ज्ञानकथनदोहा॥सैनीपंचेंद्रीनिकेंहोतक्षयोपसमज्ञां
न॥फुनिधारेसम्यक्तकूंतवहैसम्यग्ज्ञांन॥७॥ज्ञानेरहेंससेभरमअनिध्यवसाईज्ञांनतिनकावरननक
रतहूंकरिदृष्टांतविधान॥८॥केरूपाकेसीपहेयसंसैकवेन॥भरमभांनिलाखिसीपकूंरूपाजानेंलेन॥९॥की
ज्ञांनयकोंनहैसंशयवरिकुछिनांहि॥अनिध्यवसाईयमकहेचषय[illegible]रामनमांहि॥१०॥सत्यारथस्यां
वकहेजियसम्यक्तीवेंन॥अरभांतिकुछिनाकहेकेंहसीपहेअेन॥११॥पहलैभाषेसुलपसपांचउपा
नपरमांन॥भेदतिनके तिनकाअवजोभाषेभगवांन॥१२॥उपानावरनीपांचमेंच्यारिसपापसमहोय
प्पपरहीकेवलप्रगटनिरधेलोकअलोय॥१३॥मतिश्रुतिउपांनावरनेंकासदाक्षयोपशमजांन॥घाति
वातिरहेवोकरमतिश्रुतिदोयेंउज्ञांन॥१३॥घटतघटतपकवर्नकेरहेअनंतवेभाग॥वढतहोतहोतश्रु
तकेवलीमतिकेसर्वावभाग॥१४॥कोरनपंद्रीमनथकीउपज्यातेहेमतिउपांन॥मतिपर्वकश्रुतज्ञानमें

अर्थअर्थांतरजांनं ॥ १५ ॥ मतिस्मृतिसंग्यावहुरिचिंताअभिनबोध ॥ येप्रजायमतिग्यांनकीइंद्रीमनकासोध ॥ १६ ॥
छप्पय ॥ मतिवुधितेहेमननअवग्रहादिकद्रविनका ॥ स्मृतिमेधायादिलयपहलीवसतनिका ॥ संग्यापर
ग्याउपांनपूर्वव तैमांनमिलावे ॥ चिंताप्रतिभातकेव्यापव्यापतिउपजावे ॥ अभिनवोधअरथापतीस्वार्थानमां
नप्रमांनहे ॥ ग्यांनभेदहैन्यांहियेपंचनांममतिग्यांनहे ॥ १७ ॥ चोपई ॥ मतिवुधिसंस्मृतमेधाजांन ॥ संग्यापरग्यां
प्रतिभिग्यांन ॥ चिंताप्रतिभातकेपिछांन ॥ अभिनवोधसभवअनुमांन ॥ १८ ॥ अडिल्ल ॥ संस्मृतिप्रतिभिग्यांन
तर्कअनुमांनहुआगाम ॥ परपरोषपरमांनकेहजिनकुंसवमाल्लम ॥ अवग्रहादिकभेदप्रगटहेंद्रनिमति
होहे ॥ सांविवहारप्रतक्षकेहेजिनआगमजोहे ॥ १९ ॥ दोहा ॥ इंद्रपुरिंदसक्रज्योनांमसुरपतीजांन ॥ संस्मृत
दिकपांचत्योंनांमजांनिमतिग्यांन ॥ २० ॥ जेममेदव्याष्याप्रथमसोअवलियापिछांन ॥ अथवासादृसिअ
रहेमांनप्रतिभिग्यांन ॥ २१ ॥ व्यापतिसाधिसाधनेविषेअविनाभावपिछांनि ॥ धूमजहांतहांअग्निहेंअ
नेतकेप्रमांन ॥ २२ ॥ कारिजलषिनजांनकेजांनसोअनुमांन ॥ काजजांनिलषिलषिनेसोहेआतमग्य
ग्यांन ॥ २३ ॥ जांनपरतपनहीलषेंभीतरिदीपरधांन ॥ केअव्यक्तसुनिजांनियांकेसुवासअनुमांन ॥ २४ ॥ सोर
ठा ॥ अवग्रहादिहेंतासु ॥ फुनिअवायअरधारणा ॥ मतिभेदपेच्यार ॥ होतकतीसरतीनंसे ॥ २५ ॥ अवलोकनमा
मांन ॥ निराकारदर्सनप्रथम ॥ वहुरिसंतदेमांन ॥ सोअवग्रहतेंहोतहे ॥ २६ ॥ कुणलाकिधोनहोय ॥ इका

निश्चयाकरनकीजैसीईहाजोय ॥ संसाईभेदुविधाप्रवल ॥ २७ ॥ हांलैवाजपांय ॥ अवयचदेकुगलातेने
जायऔरनअभिलाष ॥ मतिअवायनिश्चैस्लहे ॥ २८ ॥ सोधुगलाकाज्ञान ॥ कालांतरविसरैनहीं ॥ सोधा
रनमातिपांन ॥ ज्यौंदृष्टांतेयोसवनितै ॥ २९ ॥ ज्ञानअवग्रहदोय ॥ अर्थादूजौव्यंजना ॥ अर्थाअक्तकहिजोय ॥ व्यं
जनहोतअव्यक्तहे ॥ ३० ॥ अतिपरचैतेहोय ॥ अर्थअवग्रहव्यक्तता ॥ व्यंजनअव्यक्तनकोय ॥ कोउघटपरवंद
जस ॥ ३१ ॥ दृष्टांदिकनहिहोय ॥ होतअवग्रहव्यंजनं ॥ सोदृगमनविनजोय ॥ श्रोत्रपरसरसघ्रानके ॥ ३२
भंयेभेदपच्यार ॥ बहुव्यादिकबारगुंने ॥ अठतालीसप्रकार ॥ भेदअवग्रहव्यंजनं ॥ ३३ ॥ अवग्रहादिकच्यार
इंद्रीमनतेजोरियेहू ॥ चोईसप्रकार ॥ फुनिगुनियबहुादिते ॥ ३४ ॥ कोईयकेचवस्वाय ॥ अठतासीअरदोयसे ॥ अ
रच्यालीसभिलाय ॥ तवहुतीसहुतीनसे ॥ ३५ ॥ अथबहादशभेदनाम ॥ दोहा ॥ बहुबहुविधिक्षनाक्षिप्रता
निश्रतधवअनुक्त ॥ अबहुअबहुविधिचपलगापितअधुवउक्त ॥ ३६ ॥ उदाहरन ॥ छप्पय ॥ अवहमांनुष
यकबहुतयानीसंख्याता ॥ अबहुविधिदुजबहुनवहुताविधिदुजबहुभांत ॥ क्षिप्रदामतापुरसआक्षिपरमंद
चारेमे ॥ निश्रतजलकेवाकिअनिश्रतमगनवारिमे ॥ अधुवदामनिचमकहेधुवतलगिरवरनिश्चला ॥ विनां
कहीअनुक्तमोउक्तकहीजांनूमस्ता ॥ ३७ ॥ इतिमतिज्ञांनभेदनिरूपन ॥ अथश्रुतज्ञांनकथन ॥ दोहा ॥ जब
जीवज्ञांवतकेमतिपरवकश्रुतज्ञांन ॥ सदाअर्थअर्थातरसुतामेसुनौनिनान ॥ ३८ ॥ वरनातमअक्षरतणा

नेंहुसेंनीजीवनिमांहि॥ मोखिमारगउपदेसविधियाविनदोनानांहि॥३९॥ नाखुतकादोभेदहैंयाफिप्राविष्टसुअंग
वाफिअनेकप्रकारकादूजाद्वादसांग॥४०॥ अंगबाह्यिकेचौदप्रकीरन॥सोरठा॥ सामायकहेआदिचतुरवी
सस्तवनबहुरि॥ त्रतियबंदनायादि॥ प्रतिकरमनवचथामनो॥४१॥ फुनिवैनयकापिकां॥ निकृतपाकपंच
मसमछह॥ दसवेंकालिकजांनि॥ उतराधेनसुआठमा॥४२॥ बहुरिकल्पविवहार॥ दसमांकल्पाकल्पहै
महाकल्पउदार॥ पुंडरीकहैवारमा॥४३॥ महापुंडरीकासु॥ चतुरदसमनिषेधका॥ येपरकीरनकासु॥ अं
गबाह्यिकेभेदहे॥४४॥ अथअंगप्रविष्टदूजाभेदताभेदद्वादसांगतदहैतिनकेनाम॥दोहा॥ प्रथमसुद्धिमोंआ
चारांगफिदुतियसूत्रकतांग॥ स्थानांगतीजाचतुर्थाचौथासमवायांग॥४५॥ व्याख्याप्रग्यप्तीपंचमांग्यातृकथा
षटअंग॥ फुनिउपासकाध्ययनहेसतमअंतकृतदसांग॥४६॥ अनुतरनउत्पाददसांसत्रविपाकापिकांन॥ ब
हुरिप्रस्नव्याकरनदसमग्यारमवादफुनिजांन॥४७॥ चौपही॥ दृष्टवादविधिपंचसुजांन॥ परिकर्मसूत्रसुन
पहचांन॥ तीजाहेप्रथमांनाहिजोग॥ पूरवगतचूलकायोग॥४८॥ चंद्रसूरजजंबूपरग्याप्ति॥ उदधीदी
पव्यास्यापरग्याप्ति॥ पिपावपरकर्मविधांन॥ पंचचूलकाकहसुजांन॥४९॥ जलगतथलगतमायागत
रूपगताअकासगता॥ असपंचचूलकाकही॥ परवचौदाभाषुसही॥५०॥ अथचौदापूरव॥ दो
हा॥ उतपादपूरवअग्रायनीतीजोवीरजवाद॥ आस्तिनास्तिपरवादफुनिपंचमग्यांनपरवांद॥५१॥ षष्ठ

मकर्मप्रवाद है सत्तप्रवाद पद्मचांन ॥ वसु आतमपरवाद फुनि नोमां परतपाख्यांन ॥ ५१ ॥ विद्यानवाद परख दशम पूर्व
कल्यांनमहंत ॥ प्रांनवाद कुंपा चवुदरिलोकाविंद है अंत ॥ ५३ ॥ ऐसे वारै अंग ये बीस अंक परमांन ॥ अपुने
रुता तिनके वरन तिनका सुन्यो वखांन ॥ ५४ ॥ इकसौ द्वादस कोडि फुनि लाख तियासी मांन ठावन सहस्र यह प
चैहे पदसैत परमांन ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ येकहि पदका अक्षर जोर सोलासे चोंतीस करोर लाख तियासी सात
हजार ॥ आठसतक अठयासी धार ॥ ५६ ॥ अथ प्रकीरनक अक्षर ॥ आठ कोरि एक लाख सुजांन ॥ आठ सह
सयक सो अठ्यासी मांन ॥ वहुरि पंचेंद्री वरन विधान ॥ चौदह प्रकीरनका परमांन ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ पांचघाट क्रोरदाय
से सब पूरब में वस्त ॥ बीस बीस प्राभृत्त वनें येक येक कहि वस्त ॥ ५९ ॥ प्राभृत गुन तालीस मो सब येक त्ताकिव
र ॥ जो विसयक विचाहित तागोमटसारविहार ॥ ६० ॥ याश्रुतकी परमांन ताकें ऐके करौ वयांन ॥ वीतराग सरव
ग्य धुनि निरदूषन परमांन ॥ ६० ॥ चौपई ॥ रिधिधर रिमनपरज्ञै थांन ॥ गनधर गूथे अंग विधांन ॥ तीर्थंकर कै इह हज्ञ
र ॥ यो परमांन भद्र भरपर ॥ ६१ ॥ ताकी परंपरा जतिकही ॥ अल्पमती सिषि छिद्रि कै सही ॥ उदधि बुंद तें लच्या येकाय
उदधि सबार जांनि लि सोय ॥ ६२ ॥ प्रश्न ॥ सोरठा ॥ जो चेतन के भाव ॥ ताकैं ज्ञांन वखांनियै ॥ पुस्तक जड परभाव सो
द्रवि श्रुत है पांन क्यों ॥ ६३ ॥ उत्तर ॥ दोहा ॥ भावश्रुत के ह्वांन को द्रव्यश्रुत निमत प्रधांन ॥ तातें पुस्तक वरन द्रवि
रुति कहश्रुत वांन ॥ ६४ ॥ द्रविश्रुत जांनैं दोय विधि द्रव्य वहुरि परजाय ॥ द्रवि ते भाषा कपना ॥ श्रोत्र सुनै परजाय

६५ ॥ भावश्रुत ह्वै दोय ॥ विधि द्रवि पर्जै समुदाय ॥ कर्मक्षयोपशम लब्धि द्रवि उपयोग भाव जाय ॥ ६६ ॥ ज्ञेपाख्या
ख्या वीरजिन सौ वरन्या श्रुत भेद ॥ सो कहुं सौ निरखें जीयो अनादि उपदेश ॥ ६७ ॥ वीचि वीचि विमें ठगि गाये
ल्या अनंत मिथ्यात ॥ फुनि जिनवर बैंहीक छ्योम्यो रहु जीवात ॥ ६८ ॥ सिवमारग कथनी सुनो जि प्रतीति प्रें श्रुत-
ज्ञान ॥ भवि जन प्रीक्षा करि गहै तप्राग कुश्रुत ज्ञान ॥ ६९ ॥ कहुं बाधै साधक कहुं पोषै हिंसा भोग ॥ सो कुश्रुत
मिथ्यात है भाखें भासैं जोग ॥ ७० ॥ हुंसरत तहं कोय गजन मापरन हरि सिद्ध ॥ तिसु लंक श्रुत ज्ञान लेत ज्ञिवै
बुद्धि निषिद्ध ॥ ७१ ॥ नाकरनी करनी सु कहै हित अनहित पहचांन ॥ जिन भाषित श्रुत ज्ञान विन कहु न होत
सुज्ञांन ॥ ७२ ॥ चौपई ॥ संख्य सत संकल्प आतल ॥ अंबा सिम्रहीनी चामल ॥ पतला पांनी मिष्ठा लाठ ॥ ह्वाव
नस्पति सकाकाठ ॥ ७३ ॥ रवि सासि दूरि निकट आवास ॥ जाति गाति कुल स्वामी दास ॥ पाप करम सुख पुन्य-
को बंद दल फल अनुसम फारकी कहा ॥ ७४ ॥ सिद्ध संसारी दोय अनादि ॥ कर्म बंध जीसा अनादि ॥ काति
श्रगति जोकि उपांन अनादि कहुं द्रवि गुन परजै अनादि ॥ ७५ ॥ सादि मिथ्याती में है सब जीव ॥ अनादि मिथ्या
ती अभव्य सदीव ॥ श्रुत बिन असी कथनी नांहि ॥ आप न बिन श्रुत प्राट नांहि ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ अनंत जनम
बीते सुनत षोटे श्रुत उपदेश ॥ येक वपर श्रुत के सुने मैं अखिल कलेश ॥ ७७ ॥ कौ लौं बुधि जनवर निदै ॥ मह
माया मिभात ॥ केवल मनपरजै अवधि सुश्रुत पठ न होत ॥ ७८ ॥ इति श्रुतज्ञान निरूपन ॥ अथ अवधिज्ञान ॥

चोपही ॥ भवपरतेय अरु गुनपरतेय ॥ दोहै अवधिज्ञांनके भेय ॥ भवपरतै है नरक निसुरा ॥ कर्मक्षयोपशम गुनप्रतिजुनरा ८
३ ॥ अडिल्ल ॥ भवप्रत्ययतहै जो जाय क्षयोपशम तै कलु नाही ॥ सुरनारक भव निमित क्षयोपशम सहज जाहांदी जे
से नभ जल चर उडे जल बुडै नांही ॥ तैसे भवके निमित क्षयोपशम अवधि तहांही ॥ ८४ ॥ चोपई ॥ हीन अधिक क्ष
योपशम जैसा ॥ धारे धनी अवधि है तैसा ॥ सम्यक्ती के सम्यक ज्ञांन ॥ कुअवधि मिथ्याती के पहचांन ॥ ८५ ॥ नर
पशु व्रत तप साधन करै ॥ तातें क्षयोपशम धरै ॥ गुनपरत्यात अवधि लखाय ताके भेद छह है समुदाय
८६ ॥ अनुगांमी परभो संगि जाय ॥ अनुनगामी ना पाय सजाय ॥ अनवस्थिति ते नाथिर ना रहै ॥ अवस्थिति
ही थिरता गहै ॥ ८७ ॥ हीयमांन जो घटती जाय ॥ असंख्यात अंगुल भाग्याय ॥ वर्द्धमांन सो बढती पाय अ
संख्य जगलोका लो थाप ॥ ८८ ॥ गुनपरतै के भेद वषांन ॥ देशपरमा सर्वा जांन ॥ सर्वापरमा बढती जाय घटै व
है नां परमोपाय ॥ ८९ ॥ अडिल्ल ॥ रूपी की पहचांन अरूपीकूं नां जानें ॥ काल क्षेत्र भव भावली ये मरज्या
दा जानें ॥ भाव वरतय तु आदि आत्मपरदेशन में है ॥ चितवन कीयें न बीना चितवन नांही है ॥ ९० ॥ द्रु
ति अवधिज्ञांन ॥ अथ मनपर्जैग्यांन ॥ चोपई ॥ अंतराय मनपरजावरन ॥ दोऊ के क्षयोपशम करनै ॥ उदै नांम क
अंगुउपंगा ॥ मनपर्ज्जै उपजे तब संगा ॥ ९० ॥ सरल वचन मन काया थाती ॥ परमन की जानें रजुमती ॥ वक्र वचन
मन काया वांनि ॥ विपुलमती परमन का जांनि ॥ ९१ ॥ दोहा ॥ परमांन अनिभाग कूं परमावधि लै जांन ॥ ताको

भागअनंतवाररजुमतीपरवांन ॥ ९२ ॥ रजुमतीकीजेफलघुजाकेभागअनंत ॥ विपुलमतीकोजांनवोतदुवागामी
संत ॥ ९३ ॥ चोपही ॥ अविभागीमेंभागअनंत ॥ केसेवनेसुकहोमहंत ॥ परमांवेरसकोभेद ॥ होतअनंतप्रमा
प्रतछेद ॥ ९४ ॥ अनंतभागमाछेदुकवर ॥ इजेवहुरीवेनवजोफेर ॥ भागभागकेभागअनंत ॥ जिनआगमभाखंत
वहुभंत ॥ ९५ ॥ अडिल्ल ॥ दोयतीनभवजेघनसातवसुउत्कृष्टनिजपर ॥ आगलेपिछलेलषतरजुमतिर्पा-
नीतत्परख्यातिकोउतेलेयजिनंघनवसुहेज्ञांन ॥ उत्कटजोजनव्यारिआठलोरजुमतिजांनें ॥ ९६ ॥ अ
गलापिछलाकालविपुलमतिनिजपरजानें ॥ असुंख्यातउत्कृष्टजिघनवसुभवपरमांनें ॥ जिघनआरि
तेलेयकआटजोजनलोदेष ॥ मांनुषोत्तगिरिपरेविपुलमतिनांहीपेषे ॥ ९७ ॥ रजुमतिव्यारितत्तजेविपुल
मतिनाहीयांवे ॥ द्रविषेअरकालविपुलमतिअधिकाजांवें ॥ मनपरजेअरअवधिदोयमेंजोअधि
काई ॥ ताकावरननकरूंसमंत्रभजेसगाई ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ अधिकसुद्धताअवधितेंमनपर्जेमेंजांन ॥ मनपरजे
सेंअल्पअवधिलेंषकोटानि ॥ ९९ ॥ मनपर्जेपरमनथकोसिनिकषाईताप ॥ रिद्धिकालितवारितव
तकोईसाधुनिपाय ॥ १०० ॥ अवधिउपांनवहुगतिमेंधेसम्यकरिकेहोय ॥ मतिश्रुतषटद्रव्यनिविंधाकि
तेकपर्जेजोय ॥ २ ॥ अर्द्ध ॥ रूपरहितधर्मादिसोद्रव्यगोचरनाहीतिनकाविषेनसंभवमतिज्ञांनीकेमाहि
॥ ३ ॥ अरु ॥ अंनिद्रव्यमानानिमततेजानेहेमतिप्रांन ॥ सबजोतिकपर्जेगहेनासवपरजेजांन ॥ ४ ॥ मतिज्ञां

नीकागेयसोजोहीश्रुतकाग्यांन॥ प्रतिपरवश्रुतग्यांनदोकितेकपर्जेजांन॥४॥ इतिमनपर्जेग्यांन॥ अथके
वलग्यांननिरूपन॥ दोहा॥ कर्मघातियाक्षयकीयाश्रुक्लध्यांनबलमांन॥ अनंतअर्द्धतवसक्तिनिजप्रगटभयोके
वलग्यांन॥५॥ सर्वद्रव्यपरजायसवसर्वकालकेमांहि॥ यककालकेवलविषेझलकेसंसानांहि॥६॥ ही
नअधिकअवरेदेखियेजाजीवनकेग्यांन॥ तातेनिश्चेहातहैकेवलकासरधांन॥७॥ ग्यांनमईइनुपजुपजी
वानंतानंत॥ तातैनंतगुनपुद्गलअनवसंत॥८॥ धर्मअधर्मअकासजुततीनिद्रव्यहैयक॥ असंख्यातकाल
नुहैभिंनभिंनपरतेक॥९॥ पनकीगुनपरजैअनंतभूतभविष्यतिहाल॥ रागरहितजिनकेवलीजांनतसबकें
काल॥१०॥ केवलमहिमाहैअनंतबुधजनभाषेकाहि॥ सुयवलदरसनजांनवालसैअनंतजांमांहि॥११॥
इतिपंचसमाकग्यांननिरूपन॥ अथध्यानस्वरूपनिरूपनं॥ चितयकाग्ररोकनाविकल्पआंनिनिवा
र॥ ध्यानकहतहैतासकाभेदच्यारिपरकार॥१२॥ आरतिरुद्रनुध्यांनदोअसुभकुगातिदातार॥ धर्मसु
क्लसुभध्यांनजेसुरसिवसुखविसातार॥१३॥ अथआरतिध्यांनभेद॥ चोपई॥ इष्टवियोगअनिष्टस
जोग॥ पीडाचितवनतीजाथोग॥ चहुरिनिदांनबाधिवाजोय॥ आरतिध्यांनच्यारिविधिहोय॥१४॥ अ
थइष्टवियोगकथिन॥ रहोथिरद्रव्यवलपरदेसावसप्रभोनयाकोनसोवकहवो॥ लघुसुतभ्रातवंदपितमातस
सुंदरिसाथिमेंरागनिकारहवो॥ मिलनेवेसाथकहाकिनहांथवनेवहवातसुष्पारनिवहवो॥ सावतजागतपी

बतपांभनराततिदिनांजकयाष्टिकोगाहबो॥ २५॥ अथअनिष्टसंजोग॥ सवैया॥ देषतचेतनबोसतचेननबेठत
चेनुनसोवतचेन॥ अरहीकूरदस्ऋकालानिरंतरयकहीलाष्यकोदेन॥ चहमजारजिसायहबानकथं
नकयकमैंलाभतारेन॥ कोंनप्रकारतजेयहसाथबितवरघानजुदेयनअबेन॥ २६॥ अथपीडाचिंतवन
पीरांभीराहूंकेमधीरनहीकोबीरजोदेरमिठावे॥ भद्रदेरानथक्यापुकरानसुनेकोवातमोआनाधिना
व॥ लोषअनीतनहीकोमीतजोप्रीतसमोतिततंदायमिटावे॥ कोंनपराधकीयाजोअगाधताहितेवाधयागात
जरावे॥ २७॥ अथनिदानबंधः॥ नहीपुरगांमनदीनहबांमसुधांसमंकामकेआनदलीजे॥ दूरैसुकुलजन
मनहीधनधर्मसुकर्मकोठांनिकैंसर्मगहीजे॥ सीतनजातनभ्रषामिठात्ननतोसवराजांममग्रामकोलीजे॥ अ
होकताभलोभरतारमलोचरवारमेंजन्मकोदीजे॥ २८॥ अथमलअरातिध्यांन॥ अततिध्यांनसदासु
षदानदुष्यसरूपदेव्यारप्रकार॥ इष्टवियोगबनअपसादअनिष्टसुंजोगमिलेदुषभार॥ पीरअनंतकेन
किमअंतकेरयमचिंतसुनिन्पअपार॥ आवतसालमिलेषरबालतबेवरूभालनलक्षसुषभार॥ २९॥ दू
तिआरति॥ ए॥ अथरुद्रध्यांन॥ रुद्रकरूरकुध्यांनअपांनपेष्यारहीनरककेदायकभार॥ प्रांनकोभांनि
हसेरविबांनमषादुषदांनिसुहोतहत्पार॥ हेरेधनधांनसुषीमृतिमंदसुअंधबेठांनताचिंनअपार॥ पिंअ
वधातनस्पातनकेदरषतहेदेषिकधावअंधार॥ ३०॥ अथहिंसानंद॥ भषगाहेतानमीतसंहेवनमांहि

रहैवध्यातविचारै ॥ बालकबालदयानहीहालनिहालनहूं आनकेअंगविदारै ॥ मांसअभोरकोठकिनओरंधो
रपराक्रमआमधोरै ॥ नारकदेहकिधोरसहैनरहूपधरैजगजंतविदारै ॥ २१ ॥ अथम्रषानंद ॥ देवबडहैदामेर
जदरवारमैंसरखाजारमैंहराषिजाउ ॥ बुद्धसभानिमेंतुरतमुषठानिमैसरवविस्वासकीकेसुनाउ ॥ संमैप
हचानिकेदडाकंजानिकेचितमेंआनिकेवानिगाउ ॥ ऐसेपदपायहूंलोकरिझायहूंदीनतालायहूनंद
राउ ॥ २२ ॥ अथस्तेयानंद ॥ हमकोनकरजारहमकोनकापनिहारसर्वधामठारपराद्रव्यसाद्रमागहै ॥ सव
विधाजेककरइयाआयतीकोकरइपायहैसिलकभरइपापैपजनिकेंचेवाहै ॥ हमकाइकेनदासदरि
ठलबासविनाविस्वासभोगभोगभोगतराहै ॥ नितमनितनठानेयकघोमपताकोनवरसभपषभानको
साक्षतदारहै ॥ २३ ॥ अथपरिग्रहानंद ॥ भसिग्रायकेसहस्रकलीमपककेसनहेतलवसदाउलको
तिलोकनिकाधारहै ॥ सतासुतपातीमातगातकेरनातीक्षितभर्तिकसंपातीमगभोजराहै ॥ नाडिहंद
लाऊपडपोनकूधिलाऊपोतीतिपासिनाऊधूपधाऊंदसंचराहै ॥ यनेदायदायदाषिफूलयकपलकनं
हिभूलोंओरदमेंकलोंबडाभागआजमेराहै ॥ २४ ॥ इतिरुद्रध्यांन ॥ दोहा ॥ मिथ्यामासादनमिसरअवि
रतअनुव्रतथानयवआरतिअप्रमतमेंतीनहिरहितनिदान ॥ २५ ॥ अविरतचोथेगुनलअनुव्रतपंच
मथानहोतरुद्रकेभदसवनहीओरगुनथांन ॥ २६ ॥ अथधर्मध्यांन ॥ सवैया ॥ इकतीसा ॥ भेदचपांनधारद १

तधर्मध्यांनधाराबहेसर्वपापटारातहैसुर्गसुखभाराहै॥जिनराजजोवयांनीसोहियेमांऊआंनीठीकदुखक
महरिवेकीमतिकाबिचाराहै॥अधोमध्यउरधलोकस्वनंकासर्वथाकहीयेमांऊजानेनांहिहोतहाराधा
राहै॥कर्मकेविपाकसेतीसुखदुखअचिंतहोतमांनतअनित्यताहिजानतविकाराहै॥२७॥अथआग्या
विचय॥द्रव्यअनित्यहीसरुपमहैकुरमस्तकेगपांनमेंआकतनांही॥भयेअरिहंतहुहेअवहोहिंगेयाज्ञ
गठईदीपकमांही॥पुंन्यपापकेअश्रवबंधसंवरमाक्षकीरीतिलखांही॥जोजिनदेवकहेजंत
भंनतरावरभवंतगहगहांही॥२८॥अथअपायविचय॥जीवअनंतबसेजगमेतिनिकेमनचावतनांचिरहै
है॥सघुदोरघेदस्तअकदंधनरनारकतिरजगदेवदूपदेहै॥परलहातअनांचवकदयसमतविनसांचतजांनि
दियहै॥सिद्धमयअकहातज्ञतातितसमतांचितमांहिगहरु॥२९॥अथविपाकविचय॥अरसववतवथाक
र्मविपाकजिथारागदाखसोगजागमिलजातहै॥इंद्रअनरिदपनमतिमिलिपेरफदताहूनमिटतबधभावनां
स्हातेहै॥विकलपनकीजपसतचित्यमांनिल्लीजहारिहथितहैजीजेकाऊथिरलारहोतहै॥आसत्यागकीज
अपराधनांहिहिदजपसंतापभारिलीजपतअनिंदउमगतहै॥३०॥अथसंस्थानविचय॥धर्मअअध
मकालपुद्गलअकासजेंअलोकमेसदीवरहेवाहरिअलोककेदधनांकारतीनमेंतियालीलोकतांमेज
सनादीजहांतरसहीकाथोकहै॥तेरतरनरकसातनहांमहांउतपातरोगदायकासधातहातसदासोकहै॥म

द्धिमैतिस्त्रंचनरकूपरहैस्वभरताकेपरोसिद्धिलोकातिनकेपगथोकहै ॥३१॥ कोऊमिथ्यातमैलेसमतासोसुखलोपि
रिन्हिदुखभारा ॥ योनसुध्यांनीगिन्यामतमाहिध्यांनीगिन्याहैसमप्रकृतकाधारा ॥ आपायअपायविपाकविचे
संस्थांनविचैयच्यारप्रकारा ॥ चोथेंवेपांचवेंहोतहैसुलपसायसटमेंस्यातमेंथांनसारा ॥३२॥ रोगसोगभोग
संजोगवियोगसाभालक्ष्मीभामनीमिछयापारा ॥ यांबमसाधांमसुनामहैनागसाकालसकामसंसारसार
कोनिकेगपांनकेमोहकभांनिकैदूरिभलवैठकेगाढधारा ॥ तीनसुहुतताधरमकाध्यातमपक्कपरमातमाहा
त्तसारा ॥३३॥ दोहा ॥ नादिविषमनाभीरजअनुदीगरमनहीसीत ॥ उदासीनथलधीरचितध्यांनधरतपारीत
३४ ॥ इतिधर्मध्यांन ॥ अथशुक्लध्यांन ॥ कवित्त ॥ अनंतानबंधीअप्रात्याख्यांनप्रत्याख्यानभांनिकेंआनिकें
अतपांनलोयारहांसंज्वलांनुनांदिबुद्धिमेप्रकासमांनतहांशुकलांनध्यांनआदिपापा ॥ अथोअप्र
रवकोनिवृत्तकनेसूक्ष्मसांपरायलोवेदगायांमेठिकेमलकसापभयाभावस्वकृतापभेटिकेविशुद्धतापशुद्धपा
रा ॥३५॥ अथप्रथमेंयेकत्वाविचार ॥ सवैया ॥ रहांसंज्वलांननांदिबुद्धिमेप्रकासमांनतहांशुतरपांनउदेपूर्वको
रकहैं ॥ आरंथुमलटहोतवचनकीपलटहोतजोगाकीपलटनिप्रथकावितर्कहैं ॥ आरंपूरवअनिवृतिकनेसूक्ष
मकषायतांलोंआयुकोविशुद्धपारमोहमफकहै ॥ उपसंमश्रेनीमैउपशमहोकर्मेहोतक्षायकश्रेणीवोविक्षा
पककरवकहैं ॥३६॥ अथयेकत्वावितर्कअविचार ॥ येकत्वावितर्कमेद्रूमरजोगाआवेनाफिरेनहिलातज्योनिश्च

लब्लोमांहिपांनी॥आगमउपयोगाद्रव्यासकेहेरध्यांनगपानावर्नदर्सनावर्नमोहअंतरायभांनी॥कोईयेकजोगध
रेहोतकेवलप्रगटजोतद्रव्यपरजायतिहुंकालपांनी॥अंतरमहूरतमैसरहैजोलोआपतोलोध्यांनजांनउ
फचारहै॥नामादिकआयुतअधिकतिथिजाकेहोतसोतोकेसमुदघातअपाकाधारहै॥नात्रिपादोतनांहिके
यजोगथ्यकमांहिस्यास्यासासस्मस्मअपाकाअधारहै॥अंतरमहूरतमांनयतोहैउनसांनआगेतेअधा
तीकर्मन्यासकौतयारहै॥३८॥अथसूपरमतांक्रियानिवृति॥कायमनबचनजोगरहतेचलाय्यमांनआतमप्र
देसगतिनरोकीथिरकीनोहैहरीकरीहैतदांसासोसासअपासकसमुछिनक्रियानिवृतपतेंसनांमभीना
है॥आश्रवबंधमरिकेअघातीच्यारिऊरिकेउतरगुनपरकानिमैलमिटदीनोहै॥जेसेतपेआगिनिकारसव
कीटपरजारउजलकनकहोतसुकलत्यानबीनोहै॥३९॥दोहा॥द्रव्यतथापरजायकेअर्थकहतानिहुंनकवन
शब्दजिनश्रुतकोविजनसोपहचांन॥४०॥कायवचनमनजोगहैपृथमातिभिंनपलटांन॥अर्थजोगविजनतन
मांसोविचारतजांन॥४१॥सवैया॥मोक्षकोभिलायीजिनमतश्रुतभायीतिनआतमरसचायीभोगांनदहो
सवनायीहै॥मनांधरकोरवनिरंजनमसांनवननरहिनपुलनमपिअमृतरूपभायीहै॥सुधासनपालि
कामनअनाभिपथ्यायीनलधीरमंदमंदसासगयजातमरपुचायीहै॥उदेमोहजोरदुखदायचेतनकोहोतताहि
मारिमोरिमुनिधर्मदुरहायीहै॥४२॥जोलोमकंकेवागतोलोधर्मध्यांनमांहीकारिकारिविशुद्धभावमोहके

रवावैहै॥ अपूर्वकर्न होतनवहोतहै अप्रमत्तरागताके अर्थ जोग अजवचन पटावैहै॥ वचनजोगअर्थाकरिहैगोयष
ह्लनांहिहैरेताके जोरआनके अप्रमत्तरागजावैहै॥ नाहिहैं अप्रमत्तरागभासेउपांनसर्वजोगसहजकर्मनासि-
सिवमंदिरमुनिजावैहै॥४३॥ इतिशुक्लध्यांन॥ अथानिरजरा अनुक्रमभेदापार॥ प्रथममिथ्याती अल्पवहुत
कारनकरतायातेअधिकउपडामवहरसीकरनेहै असंअआगेआगेसंख्यातसंख्यातगुनीकहै असेसजेयेनिरज
रावनकहै॥ श्रावकविरतमांनविजोजकअनंतमनध्यायकदरसअनतिपदमभरवतहै॥ उपशामककषायक्षप
कअनीलीनखीनमोहकेवलीजिनसयोगकरमनिहरहैं॥४४॥ असंजितसम्यकश्रावकदेसविरतीप
रमतअपरमतमहाव्रतध्यानमेकोनहैध्यानपनदरसमोहसोतभां तितीनिधुनिहांनखेदअनीपेविधानमेना
मकृतीसहरदसमेंकारिलोभचर॥ द्वादशमेसारलरहजोअकलांनमें॥ तेरगुनतेरजोरिवहानिअजोगहारिसु
द्धसिद्धहोयजायराजेसिवथांनमें॥४५॥ इति अष्टकर्मकेगयेसिद्धनके आठगुनप्रगटताकाकथन॥ मोहके
गयेतेहोतप्रगटअनंतसुखज्ञानावरनगयेतेअव्याबाधहोतगुनआयुकगयेअवगाहनविकासहै
गोत्रकेगयेतेहोतअगुरुलघुत्वगुननामकर्मगयेसूक्ष्मगुनजासहै॥४६॥ अथसिद्धनिविषेक्षेत्रका-
लगतिलिंगतीर्थचारित्रप्रत्येकबुद्धिवोधितज्ञानअवगाहनांअंतरसंख्याअल्पबहुत्वसाधनके॥स
वैया॥ आपरैपदेशमेंअकासकप्रदेशमेतथाजन्मकर्मभूमियंदेधरतहै॥ ऊर्ध्वउपरागरकरेदहहदीपसर

वापिरियताहिक्षेत्रजासिद्धालेभरतहै भरतअईरावतउपजेचतुर्थकालजाततथापंचमकालद्दूतिरतहै औरसे
त्रमासिमांहिहोतसमुद्रवत्तीवाविदेहहोतसदीवहायदेवैहकूंल्लतहै ४७ औरलीनग्यातितैंनासिद्धहोतासिद्धगति
होतहैमनुष्यगतिपायके द्रव्यतेपुरषलिंगहोतासिद्धिसिद्धहोतभावतेंतिनमेंकरकोप्सिपायके अंतरकाछिनिर
ग्रंथहोयासिद्धहोताजिथाज्ञातदिक्ष्याजिनलायके तीर्थंकरकेवलतेंहोतसिद्धहोतत्मानमुनिकेवलउप॰
जापके ४८ पांचहिच्यारितत्तहोतासिद्धासिद्धगतिभयपुनिच्यारितत्रभावहै सुयंसिद्धबोधपायहोतासि
द्धासिद्धहोतकेतेठपदेशकेउपायहै पांचच्यारितीनपांनप्रायकरिहोतसिद्धसिद्धभयतेयकेवलसुपा
वहै पांचसेपचीसचायजघन्यसाठेतीनहाथनुंनअवगाहनाफलावैहै ४९ आठांतरसेयकस
मउत्कृष्टजिघन्ययकसमेयकमुनिसिद्धगतिपातहै अंतराछठमांससमयकाजिघनासिद्धगतित्रा
नमांझअंतरलहोतहै सब्बहीतेअल्पसमुद्रनितेंसिद्धभयेतातेंसंख्यातगुनदीपातिनेंजातहै पञ्चुग
तिआपस्ताकतातेंजघनमनुष्यथोकतातेघन्पनकेसुर्गआतहै ५० ॥प्रश्न॥ ॥सोरठा॥ जिनकोआदिन
काय तिनकाअंतनचाहिये मुक्तिगयेसिद्धहोय कर्मनाशतिनकिम्कीया ५१ ॥उत्तर॥ ॥सोरठा॥ ये
येकांतनकाय आदिअंतहितिसकअंतनहि जरेअंकुरनहोय संतातिमिटजपावीजवी ५२ ध्यांनअगनि
कीझार कर्मबीजजिनकाजरे तवसंततिसंसार मिटैवहुरिजन्मनधरे ५२ द्रव्यकरमपरजाय होवेपु

द्रव्यकर्मकी ॥ सोहीतो मिटिजाय ज्योंकात्योंपुद्गलरहै ॥ ५४ ॥ प्रश्न ॥ द्रव्यकर्मोमिटिजाय ॥ होहैचेतनमोक्षतब ॥ भावकर्म
उदिजायअबकज्योंकात्योंहीरहै ॥ ५५ ॥ उत्तर ॥ दोहा ॥ येउपशमअरुक्षैउदयकफुनिउपशमपरभाव ॥ भाविपरनामी
जुमिटै ॥ होतमोक्षसुरसाध ॥ ५६ ॥ प्रश्न ॥ सिधमेसिद्धअमूरतीनिराकारहैसार ॥ विनाकारअभाधसताकोकौन
प्रकार ॥ ५७ ॥ उत्तर ॥ जोसरीरकीरीसिधभयेतासरीरआकार ॥ अमूरतिकप्रदेशहोनित्यनिरंजनसार ॥ ५८ ॥ प्रश्न
॥ देहप्रमाणव्यासिकर्मयजीवलोकआकार ॥ कर्मगयेक्योंनाभयेलोकमांभविस्तार ॥ ५९ ॥ उत्तर ॥ नाम
कर्मसंजोगतेथोसकोचविस्तार ॥ ताकेछूटतरहगयजाहीपरकेकार ॥ ६० ॥ प्रश्न ॥ ज्योंकात्योंआकार थि
रविनानिमतरहजाय ॥ उरधगमनकेसेभया अोरदिसानांजाय ॥ ६१ ॥ उत्तर ॥ उर्द्धगमनसुभावनिज ॥ कर्म
बंधदबिजाय ॥ छुटेबंधकरिउर्द्धगति लोकअंतलोजाय ॥ ६२ ॥ सोरठा ॥ प्रथमपूर्वउपयोग ॥ दूजेहोतअसंग
है ॥ तीजेबंधवियोग ॥ चोथेगतिपरनांमते ॥ ६३ ॥ च्यारिहीतनपर्याय ॥ उर्द्धगमननिश्चैकरे ॥ सोद्रष्टांतबताय भा
षतहैजिनसर्वज्ञ ॥ ६४ ॥ चेष्टातजेकुमार ॥ तऊचाकफिरतहै ॥ त्यापरवसंसकार ॥ उर्द्धगमनचेतनकरै
॥ ६५ ॥ फलैलागेचय ॥ छुटिबेयतूंबीतिरै ॥ रहितकर्मकेलेय ॥ तैसेसाधभवजलधितै ॥ ६६ ॥ ज्योंम्यानडके बी
जऊंचावटतहेरंडको ॥ कारमांनतननबीज ॥ चेतनऊंचकूंचटै ॥ ६७ ॥ रुकैपोनसंचार ॥ अगनिसिखाऊंचीच
टै ॥ ऊंचाज्योंनिरधार ॥ मिटिआयुगतिकर्मके ॥ ६८ ॥ प्रश्नोत्तर ॥ लोकअंतमैक्योंथमेउत्तरथोसमझाय

धर्मद्रव्यकेनिमतविनआगैनोंहीजाय ॥ ६९ ॥ अथध्यानविशेषवरनाके ॥ दोहा ॥ येकाग्रचित्तकेसैवनेबोध
मतिकिध्यांन ॥ औरऔराढिनद्रंकिआंनआंनसरधांन ॥ ७० ॥ चौपई ॥ भूजलतेजपवनआकास ॥ पं
चमतामिलिध्यानप्रकास ॥ व्याख्याकमांनैजद्रध्यांनताकेउपजेकैसेध्यांन ॥ ७१ ॥ वेदांतीकेद्वैतरन
कोय ॥ येकब्रह्मसबमांनेसोय ॥ सिवसंसारीयेकहीगिनै ॥ ताकेध्यांनकाहिकावनै ॥ ७२ ॥ आपापुर
षध्यानीपरधांन ॥ ताहूकूंजडकहैअज्ञानध्यानजिडजडचेतनवकहै ॥ ऐसेसांषिध्यानकिमगहै ॥ ७३ ॥ मीमां
सकवेक तोकर्म ॥ वाकिक्रियामेमानेधर्म ॥ शुद्धअभेदवनेनाहिजियंदा ॥ ताकेध्यानहोयनाहिकदा ॥ ७४ ॥ है
तकरैसदै ईश्वरकरतार ॥ भक्तकरैभवपार ॥ आकुलचितभक्तमेघना ॥ ध्यानकोनाविधिआनेमाना ॥ ७५ ॥ चित
येकाग्रकरोकिमवनै ॥ औरऔरषिनाषिनमोगिनै ॥ अल्पमतीकाबोधअजांन ॥ ताकेउपजेकैसेध्यांन
७६ ॥ चौपई ॥ कितनेभेदगुनागुनठाने ॥ देहआतमांकितनेमाने ॥ मुसलमांनविपर्जेकर्म ॥ कितनेमानेहिं
साधर्म ॥ ७७ ॥ यनमेंआरतिरुद्रहै ॥ धर्मध्यांनकैसेनिरदुंदहै ॥ ज्ञानमुख्यजेतीसवगहै धर्मशुक्लकोध्यान
सिवलहै ॥ ७८ ॥ संसारीविनतनहिकोय ॥ जडपुद्गलविनतननाहिहोय ॥ तननोकर्मआयुसंमंधनिजआध्यांन
जियअलगऊंवंध ॥ ७९ ॥ द्रव्यनित्यषिनाषिनपरजाय ॥ सुसंवेदनप्रतेबिसलयाय ॥ वाधर्मकोषिनकाध्यांन
नित्यअनितिजिनमतमेंजांन ॥ ८० ॥ जुदाजुदासबकेसुषज्ञांनजुदाजुदाजीवनिआरिहांन ॥ दोजेपज्जुदेमहास

त्रयेक ॥ जैनमतीपमकारतविवेक ॥ ८१ ॥ कर्मअनादिविपाकअभाव ॥ त्रियपराज्ञापीशुद्धभाव ॥ जगजनसदि
तसुभावविभाव ॥ पुरषप्रधांनकैसुरचाव ॥ ८२ ॥ कर्मनिमतजियउपजैभर्म ॥ जीवनिमतदुपुद्गलकर्म ॥ कर्त्ताक
र्मअशुद्धउपचार ॥ मीमांसककमानैंनिरधार ॥ ८३ ॥ ईश्वरभक्तभोगसुषकरै ॥ निजअनुभोसवकर्मनहरै ॥ जैन
गहैनिश्चैव्योहार ॥ येकहिमानैद्वैतगवार ॥ ८४ ॥ नामपेराजनसज्ञामई ॥ भेदगुनीभाव्योसई ॥ परदेशांमेंभ
दनवनैं ॥ स्यादवादमतजैसैंभनैं ॥ ८५ ॥ देहआतमांकसज्ञाविचार ॥ असद्भूतमुषिकरिविवहार ॥ निश्चैआत
मांहैसुद्धगपांन ॥ दोऊंनैरायैपरमांन ॥ ८६ ॥ इतिप्रश्नोत्तर ॥ अथध्यांनकै ॥ दोहा ॥ ध्याताध्यानरुध्येयफलवरनूंआ
रिप्रकार ॥ ध्यातामुनिश्रावकव्रतीविषैभोगपरिहार ॥ ८७ ॥ धेपरमेष्ठीआतमांनिजतत्वार्थभाव ॥ ध्यांनचित्त
कारोकनांतजियैअरउपाव ॥ ८८ ॥ फलकर्मानिकीनिर्जराधर्मध्यांनसुरहोय ॥ शुक्लफ ध्यांनसंकर्महरि
हुचितायसिवलोय ॥ ८९ ॥ जोजिनआगमानितसुनैवकुश्रुतसंगतिलीन ॥ सोहितअनहितज्ञांनिवैलेसम
कितपरवीन ॥ ९० ॥ भरतषेत्रकालिकालमेंशुक्लध्यांनदैनांहि ॥ मुनिश्रावकधर्मेंहियैहेफुनिभववधरिसिव
जांहि ॥ ९१ ॥ अपनीमातैसमायिकाद्रिज्योपिवरतरूपाधारि ॥ करोध्यांनदृढंतहैलोकमेंमंगलकारि ॥ ९२
प्रश्न ॥ चौपही ॥ बिनआरंभपुन्यनहिहोय ॥ हिंसाविनआरंभनकोय ॥ श्रावकविनआरंभनहोय ॥ तातेध
र्मकौनविधिसोय ॥ ९३ ॥ उत्तर ॥ हिंसाअलपपुन्यआतिमहा ॥ श्रावकधर्ममांहिजिनकहा ॥ देशव्रतअव्रत

महांन ॥ अनादिकालकेधर्मविधांन ॥ ९४ ॥ अथनिरनैं ॥ दोहा ॥ लिखनपटनपठांनकासवग्रंथनकासार ॥ कु
क्रियोरासालिखतदंभविजनकाहितसार ॥ ९५ ॥ जन्ममनुंदुखधांनजपांजेलाखिभयेउदास ॥ तेपलैंउदि
मसुखदधारनासिवपुरवास ॥ ९६ ॥ दुखितनिराधिकेगुरकहेतनधनतिफलगामल ॥ प्रथमसमतजेनेतजो
रहोविखेप्रतिकूल ॥ ९७ ॥ भवव्यासमसीधांमकीजेनेतेवाधाहोय ॥ तनतेन्पारानिजलयैचिदांनंदउद्योत ॥ ९
८ ॥ तेनजडहैपुद्गलमईरूपांनमईमंरांम ॥ नांमजातगुनभिंनसर्वयेकक्षेत्रविसरांम ॥ ९९ ॥ चिदांनंदसुरधांन
चिनतनधनमभसरधांन ॥ मुरनापिंडनाजीवनोरहतचतुरगतिथांन ॥ २००० ॥ तनपोखैभरसतरहैंवहुरिपर
रतकांम ॥ ताहिनिवारनकारनैराचतहोतुमवांम ॥ १ ॥ वांमधांममलमूतकोसेवतनासनकांम ॥ सोवधेअधि
कावैदेघटैपुन्यवलदांम ॥ २ ॥ धांमवांमकेजनतनमैंसउंधमनलेसकुलबलानितिकरतरहोभवभवबटतकले
स ॥ ३ ॥ तनरक्षितातियधनरखतरहोतियतेंपायकिसेस ॥ भिरतनागहिपुरमासिनितियरखकरवटेंअसेस ॥ ४ ॥ पर
करकेउपचारमेंभालिजातनवाध ॥ भवव्यासमसीनांगिनोंसाधोकाजअसाध ॥ ५ ॥ खायपीयन्यारेरहोकुटंव
अवअरपरभोमांहि ॥ आधितेंव्याधितुमदुखसरूपकोउसाथीनांहि ॥ ६ ॥ तियव्यायेंचितावटेधनलायव
लथाय ॥ वलुपायेअकातिवटेतवदुरगतिमेंजाय ॥ ७ ॥ सर्वतपागवेसुवदेध्यांनात्मआतमरांम ॥ योतैंसववाध
हेरैबसैसिवालेधांम ॥ ८ ॥ सवतजिवोनावनातत्तात्पागिअन्यायजहर ॥ हिंसाअंनततसकरीपरतियपर

गह्मर ॥ १९ ॥ जिसीसक्तिनौसाकेरापांचपायकात्पार ॥ फुनिपरतीतसरधायैंधरेयआतमदेह्रविपाग ॥ २० ॥ अनन
कालभवभ्रमणाफिरतपाईनरगतिसार ॥ तातेगाफिलमतिरहोकरल्योहितनिरधार ॥ २१ ॥ अल्पआधिकमेमेद
मतिलखौसुलीज्योसोध ॥ लिख्योपढोअनुरागधरिद्रहोअसुभ्रमअवरोध ॥ २२ ॥ सुवसंवसैजयपुरतहां
न्यपजेसिंहमहाराज ॥ बुधजनकीनोग्रंथतहनिजपरहितकेकाज ॥ २३ ॥ संवतठारासैविसैअधिकगुराणपासीवि
स ॥ कातिकसुदिससिपंचमीपूरनग्रंथअसेस ॥ २४ ॥ सोरठा ॥ संमंगलश्रीअरहंतसिधमंगलदायकसदा ॥ मंग
लसाधमहंत ॥ मंगलजिनवरधर्मवर ॥ २५ ॥ इतिश्रीतत्वार्थबोधसंपूर्णं ॥ छ ॥ सुभमस्तु ॥ मंगलंदध्यात ॥ मिती
चैत्रवदी ॥ ८ ॥ संवत ॥ १९४५ ॥ साके ॥ १८१० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ० ॥ ०

अोपुस्तकपन्चउआओश्रीजुनामंदरजीअेमेतां·नयचलन्चंदजीदोआनचेदजीमीवलालजमकलाल
सं१९४९ भादवावुजसुदी ६